कोलफील्ड मिरर

Website : coalfieldmirror.com

हर पल आपके साथ

भाजपा ने बंगाल में भी वही खेल शुरू किया है, लेकिन तृणमूल उसे मुंहतोड़ जवाब देगी

कोलफील्ड मिरर 27 फरवरी (कोलकाता): मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने भाजपा पर मतदाता सूची में धांधली कर महाराष्ट्र और दिल्ली विधानसभा चुनाव जीतने का आरोप लगाया है।

उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र में महाविकास अघाड़ी व दिल्ली में आम आदमी पार्टी भाजपा की चाल समझ नहीं पाए। भाजपा ने बंगाल में भी वही खेल शुरू किया है लेकिन तृणमूल उसे मुंहतोड़ जवाब देगी।

ममता ने 2026 के बंगाल चुनाव में 215 से अधिक सीटें जीतने का लक्ष्य तय किया। गुरुवार को कोलकाता के नेताजी इंडोर स्टेडियम में पार्टी की सांगठनिक बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि बंगाल की मतदाता सूची में गुजरात, पंजाब, हरियाणा व बिहार के लोगों के नाम शामिल कराए गए हैं। भाजपा दो एजेंसियों को बंगाल लाकर ऑनलाइन यह धांधली कर रही है। इसमें कुछ इलेक्टोरल रजिस्ट्रेशन ऑफिसर (ईआरओ) की भी मिलीभगत है। सारा कुछ चुनाव आयोग की शह पर हो रहा है। धांधली नहीं रोके जाने पर वह चुनाव आयोग के कार्यालय के बाहर धरना देंगी।

ममता ने फिर 'खेला होबे' का नारा देते हुए पार्टी नेताओं व कार्यकर्ताओं से कहा कि मतदाता सूची पर नजर रखनी होगी। ममता ने पार्टी नेताओं व कार्यकर्ताओं को आइपैक के साथ सहयोग करने का निर्देश दिया। कहा कि यह पीके (प्रशांत किशोर) का आइपैक नहीं है। एक नई टीम है। दावा किया कि भाजपा 2027 से 2029 के बीच केंद्र की सत्ता से बाहर हो जाएगी।

तृणमूल कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव अभिषेक बनर्जी ने पार्टी सुप्रीमो ममता बनर्जी के साथ मतभेद व भाजपा में शामिल होने की अटकलों को सिरे से खारिज कर दिया। पार्टी की सांगठनिक बैठक में कहा कि मैं तृणमूल का एक निष्ठावान सिपाही हूं और ममता मेरी नेता हैं। मेरा सिर कलम करने पर भी मैं 'ममता बनर्जी जिंदाबाद' ही कहूंगा।

शिक्षक भर्ती घोटाले में सीबीआइ की ओर से दाखिल की गई चार्जशीट पर अभिषेक बनर्जी ने कहा, "मैंने खबरों में देखा है कि चार्जशीट में मेरे नाम का दो बार जिक्र किया गया है लेकिन पूरा विवरण नहीं दिया गया है। मैंने पहले भी कहा है कि अगर कोई भ्रष्टाचार साबित कर दे तो मैं फांसी पर चढ़ जाऊंगा।"

पंचेत बांध पर चल रही फ्लोटिंग सौर ऊर्जा परियोजना को रद्द हो- राजेन टुडू

कोलफील्ड मिरर 27 फरवरी (पुरुलिया): पंचेत बांध पर चल रही फ्लोटिंग सौर ऊर्जा परियोजना को जल्द से जल्द रद्द करने की मांग पर मत्स्य जीवियों की जीविका की रक्षा के लिए पुल निर्माण एवं मछुआरा आजीविका संरक्षण समिति, भूमि संरक्षण समिति, मछुआरा संघर्ष समिति एवं वास्तुहारा संघर्ष समिति के नेतृत्व में 11 मार्च को पंचेत डैम के डीवीसी कार्यालय को घेरने के लिए 3,000 लोगों का अभियान शुरू किया जाएगा।

संगठन के अध्यक्ष राजेन टुडू ने कहा कि हमारी मुख्य मांग है कि पंचेत बांध पर चल रही फ्लोटिंग सौर ऊर्जा परियोजना को जल्द से जल्द रद्द घोषित किया जाए। हम किसी भी हालत में फ्लोटिंग सोलर प्रोजेक्ट की अनुमति नहीं देंगे। क्योंकि इस परियोजना से उस क्षेत्र के कई लोगों की गतिविधियां बाधित होंगी जो मछली पकड़ने से अपनी आजीविका चलाते हैं। और हमें लगता है कि इस क्षेत्र में जल, जंगल और जमीन सभी क्षेत्रों में समस्याएं होंगी। इसलिए हम सबकी एक ही मांग है कि हम इस परियोजना को किसी भी हालत में पूरा नहीं होने देंगे। न केवल हम, बल्कि चार-पांच अन्य संगठन भी विरोध जारी रखेंगे और किसी भी तरह से इस परियोजना को हमारे क्षेत्र में नहीं चलने देंगे। हमने फैक्ट्री अधिकारियों को बार-बार चेतावनी दी है कि हम उन्हें किसी भी तरह से हमारे पर्यावरण को नष्ट नहीं करने देंगे।

बाराभूम स्टेशन के समीप अंडरपास का काम जल्द शुरू होगा- डीआरएम

कोलफील्ड मिरर 27 फरवरी (पुरुलिया): बाराभूम स्टेशन के पास अंडरपास का काम जुलाई-अगस्त से शुरू हो जाएगा। इसके अलावा, बाराभूम स्टेशन पर आगे के सुधार कार्य इस साल पूरे हो जाएंगे, ऐसा दक्षिण पूर्व रेलवे के आद्रा डिवीजन के डीआरएम सुमित कुमार नरूला ने बाराभूम स्टेशन का दौरा करने के बाद मीडिया को बताया।

स्थानीय लोगों द्वारा पूछे जाने पर कि अंडरपास का काम कब शुरू होगा, स्टेशन पर रेलवे पूछताछ काउंटर क्यों नहीं है और ट्रेनें समय पर क्यों नहीं चलती हैं। इन सभी सवालों के जवाब में डीआरएम सुमित कुमार नरूला ने कहा, "अंडरपास का काम जल्द ही शुरू हो जाएगा। योजना को अंतिम रूप दे दिया गया है। स्टेशन पर पूछताछ प्रणाली शुरू करने के मुद्दे पर विचार किया जा रहा है और ट्रेनों की समयबद्धता सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं।" उन्होंने यह भी कहा कि यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए रेलवे के बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए काम चल रहा है। इस दिन उन्होंने आद्रा से चांडिल तक का निरीक्षण किया। उन्होंने उन सभी स्टेशनों का निरीक्षण किया जहां अमृत भारत स्टेशन का काम चल रहा है।

शिक्षको ने 12 मांगों को लेकर जिला मजिस्ट्रेट और सर्व शिक्षा मिशन को ज्ञापन सौंपा

कोलफील्ड मिरर 27 फरवरी (पुरुलिया): दीदी, हम जीना चाहते हैं! हम अपने बेटे -बेटियों को भी अच्छी शिक्षा देना चाहते हैं! हम भी अपने माता-पिता के मुंह में भोजन देना चाहते हैं! अगर वे बीमार हैं, तो उनका इलाज कराना चाहता हैं और हम स्कूल में अच्छी तरह शिक्षा दान करना चाहते हैं।

गुरुवार को पश्चिम बंगाल अखिल बंगाल शिक्षक संघ ने मुख्यमंत्री ममता बनर्जी से अनुरोध करते हुए प्रदर्शन किया। इस दिन पुरुलिया नगरपालिका के जुबली मैदान में विरोध प्रदर्शन करते हुए कुल 12 मांगों को लेकर पुरुलिया जिला मजिस्ट्रेट और सर्व शिक्षा मिशन को एक ज्ञापन सौंपा गया।

प्रदर्शनकारी अंशकालिक शिक्षकों का दावा है कि वे पुरुलिया जिले में शिक्षा प्रणाली की नींव में से एक हैं। यद्यपि वे सामान्य शिक्षकों की तरह ही पढ़ाते हैं, फिर भी उन्हें समान दर्जा प्राप्त नहीं है। वस्तुओं की बढ़ती कीमतों के कारण, अल्प वेतन पर अपने परिवार का भरण-पोषण करना उनके लिए बोझ बन गया है। परिवार के बच्चों की शिक्षा से लेकर चिकित्सा देखभाल तक सब कुछ उनके कंधों पर है और इस स्थिति में, वे वंचित रह गए हैं।

आज के प्रतिनिधिमंडल का उद्देश्य आगामी दिनों में वेतन वृद्धि की मांग करना है। वहीं, उनका प्रतिनिधिमंडल भविष्य निधि और समान काम के लिए समान वेतन समेत कुल 12 मांगों को लेकर है।

सुतंद्रा चटर्जी की मौत मामले का मुख्य आरोपी बबलू यादव गिरफ्तार

डीसीपी ईस्ट अभिषेक गुप्ता

कोलफील्ड मिरर 27 फरवरी (दुर्गापुर): हुगली जिला के चंदन नगर की युवती सुतंद्रा चटर्जी की रविवार रात दो कारों की टक्कर में मौत हो गई थी। रविवार आधी रात को हुई घटना के बाद मृतक युवती के परिजनों और कार में सवार उसके साथियों ने शिकायत की कि पानागढ़ के पांच युवक कार में सवार होकर आए और उनके साथ दुर्व्यवहार करने लगे। दुर्व्यवहार से बचने के लिए वे गलत रास्ते पर चले गए और दुर्घटना का शिकार हो गए। जिसमे सुतंद्रा की पानागढ़ बाजार के राइस मिल रोड पर दुर्घटना में मौत हो गई।

घटना को लेकर सोमवार शाम को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में आसनसोल दुर्गापुर पुलिस कमिश्नरेट के सीपी सुनील कुमार चौधरी ने सीसीटीवी फुटेज जारी की और दावा किया कि छेड़छाड़ की कोई घटना नहीं हुई थी। पुलिस का दावा है कि सड़क पर दो कारों की टक्कर के बाद झगड़ा शुरू हुआ। इसके कुछ समय बाद ही चंदननगर की युवती की दुर्घटना में मौत हो गई।

सुतन्द्रा की मृत्यु के बाद राजनीतिक उथल-पुथल शुरू हो गई। स्थानीय निवासियों से लेकर राज्य के विपक्षी दलों तक। उन्होंने दुर्घटना में शामिल वाहन के मालिक पानागढ़ निवासी बबलू यादव की गिरफ्तारी की मांग की। घटना के 72 घंटे बाद आखिरकार बबलू यादव को कांकसा पुलिस स्टेशन और आसनसोल दुर्गापुर पुलिस कमिश्नरेट की विशेष टीम ने गिरफ्तार कर लिया। उन्हें गुरुवार दोपहर अंडाल से गिरफ्तार किया गया।

गुरूवार की शाम आसनसोल दुर्गापुर पुलिस कमिश्नरेट के डीसीपी ईस्ट अभिषेक गुप्ता ने मीडिया को बताया कि उन्होंने विभिन्न स्रोतों के आधार पर अंडाल से बबलू यादव को गिरफ्तार किया है। इसके अलावा उसे शुक्रवार को मजिस्ट्रेट कोर्ट में पेश किया जाएगा। उन्होंने कहा कि यदि आवश्यक हुआ तो बबलू यादव को पुलिस हिरासत में लेकर घटना का पुनर्निर्माण कराया जा सकता है।

दूसरी ओर, चंदननगर की युवती की मौत की उच्चस्तरीय जांच शुरू कर दी गई है। गुरुवार को कांकसा थाने में फोरेंसिक टीम पहुंची। छह सदस्यीय टीम ने कांकसा थाने में सड़क दुर्घटना में मृत युवती की कार और बबलू यादव की सफेद कार की तस्वीरें लीं और नमूने एकत्र किए। उन्होंने दुर्घटनास्थल का भी दौरा किया और वहां से कई नमूने एकत्र किए।

चक्रधरपुर मंडलीय रेलवे अस्पताल में अविलंब ब्लड बैंक शुरू करने की मांग

कोलफील्ड मिरर 27 फरवरी (खड़गपुर): चक्रधरपुर मंडलीय रेलवे अस्पताल में अविलंब ब्लड बैंक प्रारंभ करने के लिए बुनियादी सुविधा उपलब्ध करवाई जाए। उक्त आशय की मांग ओबीसी रेलवे कर्मचारी संघ दक्षिण पूर्व रेलवे चक्रधरपुर मंडल हॉस्पिटल विजिटिंग कमेटी के सदस्य कृष्ण मोहन प्रसाद ने आज कमेटी की बैठक के दौरान की।

श्री प्रसाद ने बताया कि ओबीसी संगठन की ओर से मांग किए जाने पर एक लंबे अरसे से बंद हॉस्पिटल विजिटिंग कमेटी की बैठक पुनः प्रारंभ की गई है। आज संध्या सहायक मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉक्टर जी सोरेन की अध्यक्षता में हॉस्पिटल विजिटिंग कमेटी की बैठक आयोजित की गई।

श्री प्रसाद ने बताया कि ब्लड स्टोरेज सेंटर बनने के पश्चात इस अस्पताल में इलाज करवाने वाले रोगियों को बहुत राहत मिली है। अब डायलिसिस के लिए रोगियों को टाटा और कोलकाता जाना नहीं पड़ता है। सुदूर सारंडा वन क्षेत्र के समीप स्थित चक्रधरपुर मंडलीय अस्पताल न केवल रेल कर्मचारियों के लिए बल्कि आम कोल्हान वासियों के लिए भी एक आशा का केंद्र है। जहां ब्लड स्टोरेज सेंटर को ब्लड बैंक में परिणत करने की आवश्यकता है। परंतु वर्तमान समय में इस अस्पताल में ब्लड बैंक के लिए आवश्यक पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध नहीं है।

श्री प्रसाद ने मंडल रेलवे प्रशासन से ब्लड बैंक के लिए वर्तमान अस्पताल परिसर के ऊपर ही एक और फ्लोर का निर्माण कर आधुनिक ब्लड बैंक का निर्माण करने की मांग की है।

ओबीसी संगठन के प्रतिनिधि कृष्ण मोहन प्रसाद ने बताया कि आज के आधुनिक समय में भी इस अस्पताल में अल्मुनियम के बर्तन में भोजन बनाकर रोगियों को खिलाया जा रहा है, जो स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से काफी हानिकारक है।

श्री प्रसाद ने अस्पताल प्रशासन से अविलंब एक चिमनी युक्त आधुनिक रसोई घर का निर्माण करने की मांग की। उन्होंने बताया कि सुरक्षा गार्ड के अभाव में अस्पताल में रोगियों एवं डॉक्टरों की सुरक्षा प्रभावित हो रही है। इसलिए अविलंब सुरक्षा गार्ड की व्यवस्था सुनिश्चित की जानी चाहिए। रेलवे अस्पताल के मेल वार्ड, फीमेल वर्ड एंड सर्जिकल वार्ड में गर्मी से राहत के लिए पर्याप्त एयर कंडीशन की व्यवस्था नहीं होने के कारण रोगियों को गर्मी के दिनों में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। अतः गर्मी के आगमन के पूर्व ही सेंट्रलाइज्ड एसी लगवाने अथवा इसके लिए अन्य कोई वैकल्पिक व्यवस्था सुनिश्चित की जानी चाहिए। बाहर से आने वाले विजीटर्स एवं पेशेंट के अटेंडेंट के लिए भी एक सुविधायुक्त कैंटीन का निर्माण किया जाना चाहिए।

चक्रधरपुर रेलवे मंडलीय अस्पताल में आज हॉस्पिटल विजिटिंग कमेटी की बैठक संपन्न हुई। उक्त बैठक में शामिल हॉस्पिटल विजिटिंग कमेटी के प्रतिनिधियों ने अस्पताल के महिला वार्ड, पुरुष वार्ड, सर्जिकल वार्ड एवं हॉस्पिटल के ब्लड स्टोरेज सेंटर का भी निरीक्षण किया। श्री प्रसाद ने मंडल रेलवे प्रशासन से इस मंडलीय अस्पताल में सिटी स्कैन एवं एमआरआई की सुविधा उपलब्ध कराने की व्यवस्था को अविलंब पूर्ण करने एवं बंद पड़े फिजियोथैरिपी सेंटर को पुनः प्रारंभ करने तथा अस्पताल में एक योगा सेंटर बनाने की मांग की।

श्री प्रसाद ने उक्त हॉस्पिटल विजिटिंग कमेटी की बैठक में इंजीनियरिंग विभाग, विद्युत विभाग के प्रतिनिधियों के शामिल नहीं होने पर आपत्ति दर्ज की। साथ इस बैठक को दुबारा सभी प्रतिनिधियों की उपस्थिति में आयोजित करने की मांग की।

आईआईटी टाटा स्टील ग्राउंड में महिला क्रिकेट प्रतियोगिता

अमितेश कुमार ओझा

कोलफील्ड मिरर 27 फरवरी (खड़गपुर): भोलानाथ कुंडू और सुशील चंद्र पाल स्मृति प्रथम वर्ष महिला ड्यूस क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन पश्चिम मेदिनीपुर जिला अंतर्गत खड़गपुर की खेल संस्था स्वामी विवेकानंद क्रिकेट कोचिंग अकादमी और आईआईटी- खड़गपुर, निलोय बेरा, स्वपन पाल, रतन पाल और अमितेश कुंडू के संयुक्त प्रयास से आईआईटी टाटा स्टील ग्राउंड में आयोजित किया गया।

मेदिनीपुर डीएसए ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 91 रन बनाये। एमएसबीटीवी निर्धारित 15 ओवर में 76 रन पर ऑल आउट हो गई।

परिणामस्वरूप मेदिनीपुर डी एसए की टीम 15 रन से मैच जीत गई। स्वामी विवेकानन्द क्रिकेट कोचिंग कैम्प तीसरे स्थान पर रहा।

बेस्ट बैटसमैन- अनुप्रिया वर्मा, बेस्ट फील्डर -मोनामी दास रही। निपबीथी मित्रा को बेस्ट बॉलर और टूर्नामेंट की बेस्ट प्लेयर का खिताब मिला। अपने संबोधन में वक्ताओं ने आयोजकों की सराहना करते हुए कहा कि स्वस्थ समाज और स्वस्थ परिवेश के लिए ऐसे आयोजन अत्यंत आवश्यक है। भविष्य में भी ऐसी प्रतियोगिताएं अनवरत होती रहनी चाहिए।

फ्रांसीसी फिल्म फेस्टिवल में बॉलीवुड फिल्म "राहगीर" की मची धूम

कोलफील्ड मिरर 27 फरवरी (कोलकाता): फिल्म निर्देशक और अभिनेता गौतम घोष द्वारा प्रशंसित हिंदी फिल्म "राहगीर" को कोलकाता के नंदन थिएटर में आयोजित फ्रेंच फिल्म फेस्टिवल में गर्मजोशी और उत्साहपूर्ण प्रशंसा मिली। जिसमें बॉलीवुड अभिनेता नसीरुद्दीन शाह, निर्देशक और अभिनेता गौतम घोष, निर्माता अमित अग्रवाल, एलायंस फ्रांसेइस डू बंगाले के निदेशक निकोलस फैसिनो, कोलकाता में फ्रांस के महावाणिज्यदूत डिडिएर तलपैन और कई अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति शामिल हुए।

राहगीर का निर्माण अमित अग्रवाल द्वारा अपने प्रोडक्शन हाउस आदर्श टेलीमीडिया के तहत किया गया है, जिसकी सफल यात्रा अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में लगातार जारी है। अपनी आकर्षक कहानी और आदिल हुसैन, तिलोत्तमा शोम और नीरज काबी द्वारा उल्लेखनीय अभिनय के लिए विश्व स्तर पर इस फिल्म ने प्रशंसा अर्जित की है।

इस फेस्टिवल में राहगीर ने एक ऐसी दुनिया में मानवता और करुणा के अपने मार्मिक चित्रण के लिए अपनी अलग पहचान बनाई, जो लगातार अमानवीय और असहिष्णु होती जा रही है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध फिल्म निर्माता गौतम घोष ने अपने भावपूर्ण संबोधन में बताया, जब भी मैं कुछ बनाता हूं, तो यह एक मजबूत इच्छा और एक स्पष्ट उद्देश्य से आता है।

राहगीर फिल्म मानवता और करुणा के बारे में है, मैं आपको समय और स्थान में इस सिनेमाई यात्रा में हमारे साथ शामिल होने के लिए आमंत्रित करता हूं। इसकी स्क्रीनिंग में दिग्गज अभिनेता नसीरुद्दीन शाह की उपस्थिति ने इसे और भी खास बना दिया, जिन्होंने फिल्म के बारे में अपने विचार साझा किए। उन्होंने राहगीर फिल्म की भावनात्मक गहराई और प्रासंगिकता पर भी प्रकाश डाला।

फिल्म के निर्माता अमित अग्रवाल ने राहगीर को मिल रही अंतरराष्ट्रीय पहचान के बारे में अपनी खुशी व्यक्त की। यह देखना अविश्वसनीय रूप से उत्साहजनक है कि फिल्म दुनिया भर के दर्शकों को पसंद आ रही है। गौतम घोष सिनेमा के सच्चे उस्ताद हैं और इस प्रोजेक्ट पर उनके साथ काम करना सम्मान की बात है। हालांकि फिल्म अभी तक व्यावसायिक रूप से रिलीज़ नहीं हुई है, लेकिन हमें विश्वास है कि यह जल्द ही और भी अधिक दर्शकों तक पहुँचेगी और अपनी रचनात्मक यात्रा जारी रखेगी। फिल्म के निर्माण की यात्रा पर प्रकाश डालते हुए श्री घोष ने झारखंड के ग्रामीण इलाकों में शूटिंग के अपने अनुभवों को साझा किया।

एम.एस. धोनी - द अनटोल्ड स्टोरी और सिमरन में अपने काम के लिए मशहूर अमित अग्रवाल ने कहा, राहगीर की शेल्फ लाइफ लंबी है और इसे मिल रहा प्यार यह साबित करता है कि अच्छे सिनेमा को हमेशा दर्शकों का प्यार मिलता हैं। मैं आभारी हूं कि नसीरुद्दीन शाह द्वारा फिल्म का समर्थन करने से मुझे भविष्य में इस तरह की और सार्थक परियोजनाओं को आगे बढ़ाने की प्रेरणा मिली है।

फ्रांस के महावाणिज्य दूतावास, एलायंस फ्रांसेइस डु बंगाले और नंदन द्वारा आयोजित फ्रेंच फिल्म फेस्टिवल कोलकाता में फिल्मों की एक समृद्ध सूची प्रदर्शित की गई, जिसमें घरे बाइरे, खारिज, मंथन, शेमलेस, हज़ारों ख्वाहिशें ऐसी और मंटो जैसी प्रसिद्ध भारतीय कृतियाँ शामिल थीं।

एलायंस फ्रांसेइस डु बंगाले के निदेशक निकोलस फैसिनो ने गौतम घोष के काम की प्रशंसा करते हुए कहा, गौतम घोष की फिल्मों में भारतीय कहानी की सच्ची झलक मिलती है, राहगीर उनमें से एक रत्न है। हमें इस साल के महोत्सव में इसे मनाने पर गर्व है।

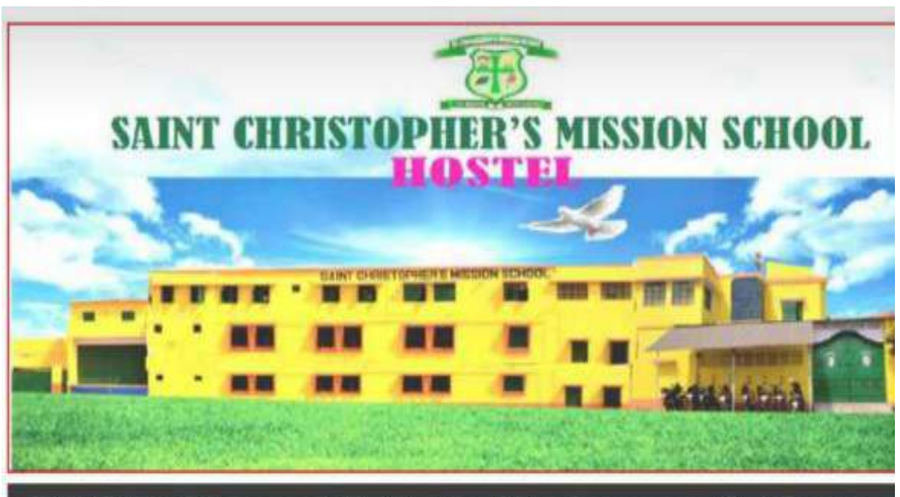

राहगीर ने पहले ही अंतर्राष्ट्रीय फिल्म सर्किट पर अपनी अमिट छाप छोड़ दी है, जिसे बुसान इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल, मुंबई फिल्म फेस्टिवल, सिनेमाएशिया फिल्म फेस्टिवल एम्स्टर्डम, कोलकाता इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल, इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल ऑफ केरल और पुणे इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल जैसे प्रतिष्ठित समारोहों में प्रदर्शित किया जा चुका है।

फ्रेंच फिल्म फेस्टिवल कोलकाता में अपनी स्क्रीनिंग के साथ राहगीर ने अपनी शानदार उपलब्धियों में एक और उपलब्धि जोड़ ली है, जो दुनिया भर के फिल्म प्रेमियों से जुड़ने की अपनी यात्रा को जारी रखे हुए है।

82वां नियामतपूर शिवरात्रि मेला का उद्घाटन

कोलफील्ड मिरर 27 फरवरी (नियामतपुर): 82वां नियामतपूर शिवरात्रि मेला का उद्घाटन गुरुवार की संध्या भव्य तरीके से हुई. मेला का उद्घाटन मुख्य अतिथि ग्रीन पॉइंट स्कुल की शिक्षिका देवयानी चटर्जी ने फीता काटकर किया. मौके पर अतिथि स्वरुप तारा प्रसन्न घाटी, बीपीन चटराज, गुरविंदर सिंह, सचिन बालोंदिया, निरापद रॉय, मनोज रॉय, संदीप गोयनका, उमाशंकर गोयनका, अरुण चक्रवर्ती, जयदीप मुखर्जी शामिल थे. मेला का आयोजन श्री श्री हरिहर शिवमंदिर मेला समिति द्वारा आयोजित किया गया है.

शिवरात्रि मेला उद्घाटन समारोह के दौरान विभिन्न तरह के सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए. इसके अलावा शानदार अंकों से उत्तरीण छात्रों को पुरस्कृत एवं अनुदान राशि का चेक प्रदान किया गया. साथ ही पत्रकारों को सम्मानित किया गया.

इस बाबत मेला कमिटी के सचिव उत्तम चौधरी ने बताया कि इस मेले की शुरुआत सन 1944 में हुई थी, तभी से यह मेला निरन्तर जारी है.

इसबार 82वां शिवरात्रि मेला का उद्घाटन किया गया है. उन्होंने कहा कि यह मेला दस दिनों तक चलेगा. इसके साथ ही विभिन्न तरह के सांस्कृतिक और सामाजिक कार्यक्रम भी आयोजित होते रहेगे.

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि देवयानी चटर्जी ने कहा कि इस मेले मे मैं बचपन से आ रही हूँ और आज इसी मेले का उद्घाटन करने का सौभाग्य मुझे मिला, इससे मैं खुद को गर्वित महसूस कर रही हूं.

आपको बता दे कि नियामतपूर का यह शिवरात्रि मेला महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य मे आयोजित होता है. यह मेला क्षेत्र में काफी प्रसिद्ध है. जिसे देखने दूर दराज के लोग आते है और मेले का आनंद उठाते है. इस मेले की ख्याति ऐसी है कि स्थानीय युवतियां जिनका विवाह अन्यत्र हुआ है, वे खासकर मेला घूमने नियामतपूर अपने मायके आ जाती है. इसके अलावा जो लोग दूसरे राज्यों में काम करते है वे भी शिवरात्रि मेला देखने के लिए नियामतपूर आ जाते है.

मेला में सुरक्षा व्यवस्था को लेकर मेला कमिटी और पुलिस प्रशासन काफी सक्रिय रहता है. कुल्टी थाना की ओर से मेला की समाप्ति तक विशेष रूप कैम्प लगाई जाती है. इसके अलावा सीसीटीवी और ड्रोन कैमरो से भी मेला की निगरानी की जाती है.

मेला का सफल आयोजन में श्री श्री हरिहर शिवमंदिर मेला समिति के सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों का अहम योगदान रहता है.

शिवरात्रि के उपलक्ष्य में नियामतपुर फाड़ी परिसर में नर-नारायण सेवा का आयोजन

कोलफील्ड मिरर 27 फरवरी (नियामतपुर): कुल्टी थाना के नियामतपुर फाड़ी परिसर में शिवरात्रि महोत्सव पर हर वर्ष की भाँती इस वर्ष भी दो दिवसीय पूजा का भव्य आयोजन किया गया. गुरुवार को नियामतपुर फाड़ी परिसर में नर नारायण सेवा का विराट आयोजन फाड़ी प्रभारी अखिल मुखर्जी के नेतृत्व में किया गया.

पूजा कमिटी के सदस्य समाजसेवी तारु घाटी ने बताया कि हर वर्ष फाड़ी परिसर में पूजा के बाद आरजी पार्टी द्वारा फाड़ी के सहयोग से नर नारायण सेवा का आयोजन किया जाता है, जहाँ दस हजार के आसपास लोग प्रसाद ग्रहण करते है.

इस कार्यक्रम में कुल्टी थाना अंतर्गत सभी फाड़ी व ट्रेफिक प्रभारी एवं अधिकारी मुख्य रूप से पूरे परिवार के साथ शामिल हुए.

ईसीएल मुख्यालय में रेल-ईसीएल समन्वय बैठक का आयोजन

कोलफील्ड मिरर 27 फरवरी (आसनसोल): सांकतोड़ीया स्थित ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (ईसीएल) मुख्यालय में मंडल रेल प्रबंधक (आसनसोल) चेतना नंद सिंह और ईसीएल के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक (सीएमडी) सतीश झा तथा दोनों संगठनों के वरिष्ठ अधिकारियों के बीच समन्वय बैठक आयोजित की गई। चर्चा में रेलवे लॉजिस्टिक्स और कोयला परिवहन के प्रमुख परिचालन पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया गया, जिसका उद्देश्य भारतीय रेलवे और ईसीएल के बीच तालमेल बढ़ाना था।

एजेंडा में साइडिंग समझौते तथा सुचारू और निर्बाध कोयला परिवहन सुनिश्चित करने के लिए रेलवे के बुनियादी ढांचे का इष्टतम उपयोग शामिल था। दोनों पक्षों ने लॉजिस्टिक्स चुनौतियों को रोकने और समग्र दक्षता में सुधार करने के लिए समय पर निपटान और समझौतों का पालन करने के महत्व पर जोर दिया।

बैठक में कोयला प्रेषण और रेलवे परिचालन को अनुकूलित करने के लिए दोनों संगठनों के बीच बेहतर समन्वय की आवश्यकता पर भी जोर दिया गया। चर्चा में बेहतर परिचालन समन्वय के लिए रसद प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने और संचार चैनलों को मजबूत करने के उपायों पर चर्चा की गई।

दोनों पक्षों ने परिचालन संबंधी चिंताओं को हल करने में सहयोगात्मक प्रयासों के लिए अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की। बैठक रेलवे-कोयला क्षेत्र के परिचालन में बेहतर दक्षता और निर्बाध समन्वय के लिए आवश्यक उपायों को लागू करने के लिए आपसी समझ के साथ संपन्न हुई।

धर्म सभा का आयोजन एवं पुलव्यू बैंक्विट का उद्घाटन

कोलफील्ड मिरर 27 फरवरी (रानीगंज): स्पोर्ट्स असेंबली में स्विमिंग पूलव्यू बैंक्विट के उद्घाटन समारोह एवं महाशिवरात्रि के अवसर पर एक भव्य धर्मसभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्वामी मधुसूदना आचार्य जी महाराज (प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश) और दक्षिण भारत के तिरुपति बालाजी मंदिर के पंडितों ने वेद पाठ किया तथा सनातन धर्म के महत्व पर प्रकाश डाला।

अपने संबोधन में आचार्य मधुसूदना आचार्य जी ने कहा कि जीवन में बड़ों का सम्मान और उनकी आज्ञा का पालन करना अत्यंत आवश्यक है।

उन्होंने कहा कि जब गुरु की कृपा दिल से स्वीकार होने लगे, तो समझना चाहिए कि ईश्वर के प्रति हमारा ध्यान जागृत हो चुका है। भक्ति को जीवन की प्रगति का मार्ग बताते हुए उन्होंने कहा कि नकारात्मकता को जीवन से दूर रखना चाहिए और इसके लिए गुरु की कृपा आवश्यक होती है।

इस कार्यक्रम में संस्था के अध्यक्ष कमलनयन झुनझुनवाला ने गुरु जी का स्वागत किया, जबकि वरिष्ठ सदस्य सुशील गनेड़ीवाला ने उन्हें माल्यार्पण किया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से मनोज शर्मा, पवन बाजोरिया, सुनील गनेड़ीवाला, अनीश पोद्दार राजा गोयनका, सौरव खेतान आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

पूर्व अध्यक्ष सतीश खेमका ने अपने धन्यवाद ज्ञापन में कहा कि किसी भी बड़े कार्य को सफलतापूर्वक संपन्न करने के लिए गुरु का मार्गदर्शन अत्यंत आवश्यक होता है। उन्होंने कहा कि आमोद-प्रमोद और खेलकूद के साथ-साथ धर्म का भी विशेष महत्व है, जो जीवन को सार्थक बनाता है।

सेफ ड्राइव, सेव लाइफ पर सर्वश्रेष्ठ बढ़ावा देने को लेकर दुर्गापूजा समितियां हुई सम्मानित

अमन राय

कोलफील्ड मिरर 27 फरवरी (बांकुड़ा): जिला पुलिस की ओर से एक कार्यक्रम के तहत तीन दुर्गा पूजा समितियों को दुर्गापूजा के दौरान क्षेत्र में "सेफ ड्राइव, सेव लाइफ" योजना को बढ़ावा देने में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए सम्मानित किया गया। जिनमे एसडीएसएल कार्यक्रम सर्वश्रेष्ठ थीम: बाराजोड़ा से बगराई हिंदूडांगा राहरवानी मालबोना दुर्गा पूजा समिति उनके रचनात्मक विषयों के लिए पुरस्कृत किया गया।

वही दूसरे स्थान पे एसडीएसएल कार्यक्रम में सर्वश्रेष्ठ जागरूकता प्रदर्शन: बिष्णुपुर की दलमदल सार्वजनिन दुर्गापूजा समिति को उनके प्रभावशाली प्रदर्शन के लिए मान्यता दी गई, जिसने प्रभावी ढंग से सड़क सुरक्षा पर प्रकाश डाला।

वही तीसरे स्थान पे एसडीएसएल कार्यक्रम पर इष्टतम जागरूकता अभियान: टुमोंरो डे क्लब ऑफ इंडोपुर को सुरक्षित ड्राइविंग के बारे में जागरूकता फैलाने वाले उनके आकर्षक अभियान के लिए सम्मानित किया गया।

पुलिस ने पूजा समितियों को हार्दिक बधाई देते हैं और सभी को सड़क सुरक्षा के प्रति विशेष रूप से जागरूक और दूसरों को भी सचेत रहने के लिए कहा गया हैं। कार्यक्रम में एसपी वैभव तिवारी, आईपीएस के अलावा अन्य अधिकारीगण उपस्थित है|

ईसीएल सीएमडी ने पांडवेश्वर क्षेत्र दो मशीन देने के साथ खदानों का किया निरीक्षण

कोलफील्ड मिरर 27 फरवरी (पांडवेश्वर): ईसीएल के सीएमडी सतीश झा ने गुरुवार को पांडवेश्वर क्षेत्र की तीन खुली कोयला खदान और एक भूमिगत खदान का निरीक्षण किया, इससे पहले पांडवेश्वर क्षेत्र पहुंचने पर सीएमडी को सीआईएसएफ कैंप परिसर में स्तिथ अतिथि गृह में क्षेत्र के महाप्रबंधक अमिताभ भट्टाचार्य समेत सभी अधिकारियों ने आत्मीय स्वागत किया,

क्षेत्रीय कार्मिक प्रबंधक फनीद्र सिंह ने सीएमडी को सभी अधिकारियों का परिचय प्राप्त कराने के बाद सीएमडी ने क्षेत्रीय कार्यालय परिसर में स्तिथ हनुमान मंदिर में जाकर पूजा अर्चना किया और हनुमान जी का दर्शन किया, सीएमडी ने पांडवेश्वर क्षेत्र को दो क्रेन मशीन का सौगात भी दिया, इसके बाद सीएमडी ने खुटाडीह ओसीपी का निरीक्षण करने के दौरान कई जगहों पर सही प्लानिंग नहीं करने और सुरक्षा की अनदेखी करने पर अधिकारियों को फटकार भी लगाया, खुटाडीह भूमिगत खदान के सीएचपी का जायजा लेते वक्त सीएमडी को कई अनियमितता दिखाई देने पर वहां के अधिकारी को भी फटकार लगाया, माधाईपुर ओसीपी का सीएमडी ने दौरा किया और कोयला उत्पादन को ले आवश्यक दिशा निर्देश भी दिया,

अंत में क्षेत्रीय सभागार में सीएमडी ने क्षेत्र के सभी कोलियरियों के साथ पांडवेश्वर क्षेत्र की कोयला उत्पादन की स्थिति को लेकर बैठक किया और सभी अधिकारियों को अपनी कार्य संस्कृति में सुधार के साथ सुरक्षा को लेकर कोयला उत्पादन बढ़ाने की दिशा में कार्य करने की बात कही.

फिरे पावा कार्यक्रम के तहत मोबाइल और साइबर ठगी मे गवाएं पैसे वापस

अमन राय

कोलफील्ड मिरर 27 फरवरी (पाण्डेश्वर): आसनसोल दुर्गापुर पुलिस कमिश्नरेट के पांडेश्वर थाना पुलिस की ओर से फिरे पावा कार्यक्रम का आयोजन किया गया था| जहां थाने में दर्जनों खोए हुए मोबाइल फोन के मामले दर्ज थे, जिनका निपटारा करते हुए पुलिस ने 56 मोबाइल फोन बरामद कर उन्हें उनके असली मालिकों को कागजात देखने के उपरांत सौपा गया। इसके अलावा साइबर ठगी के शिकार 16 लोगों को पुलिस ने उनके पैसे बरामद कर लौटए| लगभग 3 लाख 21 हजार 438 रुपये नकद बरामद करने में पुलिस सफल रही. पुलिस के इस सहयोग से उपस्थित लोगों ने पुलिस का धन्यवाद दिया|

ज्ञात हो कि पाण्डेश्वर थाना प्रभारी मानव घोष के पदभार ग्रहण करते ही थाना क्षेत्र में चाक चौबंद पुलिसिया व्यवस्था रखी गई है| इसके साथ ही समय -समय पर कम्युनिटी पुलिसिंग के तहत कई कार्यक्रम भी आयोजित हो रहे हैं| आज के इस कार्यक्रम में थाना प्रभारी मानव घोष के अलावा, एसआई संजय घोष, पांडेश्वर ट्रैफिक अधिकारी विश्वजीत कुंडू के अलावा अन्य अधिकारी गण उपस्थित थे|

चार्टर्ड अकाउंटेंट्स के नए मैनेजिंग कमेटी में महिलाओं को दायित्व सौंपा गया

कोलफील्ड मिरर 27 फरवरी (रानीगंज): इंस्टिट्यूट ऑफ़ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ऑफ़ इंडिया रानीगंज शाखा का इंस्टॉलेशन समारोह संस्था परिसर पर आयोजित हुआ। वर्ष 2025 -26 की नई मैनेजिंग कमेटी के सदस्यों ने शपथ ग्रहण किया। रानीगंज शाखा के 2024- 25 के चैयरमेन अजय बगड़िया ने पूरे वर्ष की गतिविधियों की जानकारी दी.

अजय बागड़िया के कार्यकाल में चार्टर्ड अकाउंटेंट रानीगंज शाखा का काफी विकास का काम हुआ है। शाखा का नई बिल्डिंग मे शाखा का कार्यालय खोला गया है. चार्टर्ड अकाउंटेंट पढ़ने वाले बच्चों के लिए पुस्तकालय का निर्माण किया गया है। इस मौके पर महिला सशक्तिकरण को मजबूत बनाने के लिए नई टीम में ज्यादातर महिलाओं को दायित्व सोपा गया है.

नवनियुक्त चेयरपर्सन महिला जिगना विनय मेहता, महासचिव के पद पर हर्षिता खेतान, वाइस चेयरपर्सन रश्मि टोड़नी, मुस्कान कालोटिया, स्वीटी केड़िया एवं ऋषिका जैन माहेश्वरी को मैनेजिंग कमेटी का दायित्व सौपा गया है. सभी को शपथ ग्रहण करवाया गया।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित सेंट्रल काउंसिल सदस्य विष्णु कुमार तुलसियान, संजीव संगीही एवं रवि कुमार पटवा ने चार्टर्ड अकाउंटेंट के नए कानून की जानकारी विस्तृत रूप से दी एवं कहां की रानीगंज शहर में चार्टर्ड अकाउंटेंट में भारी मात्रा में विद्यार्थी सफल हुए हैं. रानीगंज को मिनी चार्टर्ड अकाउंटेंट भी घोषित किया जा सकता है। रानीगंज के कई चार्टर्ड अकाउंटेंट आज देश के विभिन्न राज्यों में बड़े-बड़े प्रतिष्ठान पर ऊंचे पद पर कार्य कर रहे हैं।

अजय कुमार बगड़िया को विशेष रूप से सम्मानित किया गया. उनके कार्यकाल में चार्टर्ड अकाउंटेंट रानीगंज शाखा के द्वारा कई सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया एवं विद्यार्थियों को चार्टर्ड अकाउंटेंट की परीक्षा की तैयारी करने के लिए हर तरह की मदद की गई।

अभिनेत्री सायनी सरकार ने किया वीवो- वी50 मोबाइल लॉन्च

कोलफील्ड मिरर 27 फरवरी (नियामतपुर): क्षेत्र की सुप्रसिद्ध मोबाइल शॉप बालाजी मोबाइल में आयोजित लॉन्चिंग समारोह में बांग्ला फिल्म अभिनेत्री सायनी सरकार ने शिरकत की. इस दौरान अभिनेत्री ने अपने हाथो से वीवो- वी50 मोबाइल को लॉन्च किया. सायनी ने कहा कि यह मोबाइल नयी फीचर के साथ आई है, जिससे आपको अच्छा अनुभव हासिल होगा. इसके आलावा इसका कैमरा काफी शानदार है, जो आपकी फोटोग्राफी को और भी आकर्षक बनाएगा.

इस दौरान बड़ी संख्या में सायनी के प्रशंसक और उनके चाहने वाले एक झलक पाने के लिए उत्सुक नजर आए. सायनी सरकार बंगला टेलीविज़न धारावाहिक एवं चलचित्र में अभिनय किया है, जिनमे धारावाहिक ओ गो बौद्ध सुंदरी वही प्रथम चलचित्र रूप कथा, में अभिनय किया है. इसके अलावा कई चल चित्र ,धारावाहिक में अपनी अमिट छाप छोड़ी है, जिससे उन्हें काफी प्रसिद्धि मिली, जिनके नियामतपुर पहुंचने पर बालाजी मोबाइल दुकान के मालिक मनीष घेड़िया एवं उनकी धर्म पत्नी ने पुष्प गुच्छ देकर स्वागत किया,

इस दौरान बड़ी संख्या में नियामतपुर के लोग उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाया, कई ग्राहकों ने मोबाइल फोन के लॉन्चिंग पर फोन भी ख़रीदा. खरीदारों के साथ सायनी ने फोटो भी खिचवाई.

बाबा चूहारमल मंदिर प्रांगण से शिवजी की बारात निकली गई

कोलफील्ड मिरर 27 फरवरी (जामुड़िया): बोरो एक अंतर्गत श्रीपुर तीन पटिया बाबा चूहारमल मंदिर प्रांगण से महा शिवरात्रि के अवसर पर बुधवार रात को शिवजी की बारात निकली गई। इस दौरान हजारों की संख्या में महिला,पुरुष नाचते झूमते बारात में शामिल हुए। वही बारात श्रीपुर तीनपटिया बाबा मंदिर से प्रारंभ हुआ जो श्रीपुर न्यू सेंटर, दो नंबर काली मंदिर, गुरुद्वारा, श्रीपुर बाजार, महावीर मंदिर होते हुए पुनः श्रीपुर शिव मंदिर के पास पहुंच सम्पन्न हुआ। इस दौरान श्रीपुर निवासी सिंघम मोहन हरिजन, देवानंद पासवान, सुधीर महतो, संदीप पासवान, कवि शंकर पासवान, अजीत पासवान, विजय रवानी, रवींद्र दूसाद, सनी पासवान, एमडी अरमान, सोनू, कारण, राज, प्रेम आदि सहित भारी संख्या में लोग शिव पार्वती के बारात में शामिल हुए। स्थानीय मोहन हरिजन ने बताया कि प्रत्येक वर्ष महा शिवरात्रि के सुअवसर पर भगवान भोलेनाथ तथा माता पार्वती की भव्य बारात निकली जाती है जो पूरे श्रीपुर क्षेत्र का परिभ्रमण करती है।उन्होंने कहा कि पूरे साज बाज के साथ शिवजी की बारात निकली गई जिसमें सभी श्रद्धालु झूमते नाचते बारात में शामिल हुए।

आज का राशिफल

28 फ़रवरी 2025
शुक्रवार

मेष

दिन उत्तम रहेगा। परिस्थितियों में अनुकूल बदलाव होंगे। अपने काम पर ध्यान दें। भाग्य की प्रबलता रहेगी। काम में सफलता और लाभ मिलेगा। व्यापार में लाभदायक परिणाम हासिल करेंगे। दाम्पत्य जीवन में खुशहाली रहेगी।

वृषभ

दिन बढ़िया रहेगा। मानसिक चिंताये समाप्त होगी। आर्थिक लाभ मिल सकता है। यात्रा का योग है। पारिवारिक विवाद उत्पन्न हो सकते है। जीवनसाथी के साथ मनमुटाव हो सकता है। नौकरी क्षेत्र में प्रोत्साहन मिल सकता है।

मिथुन

दिन मिलाजुला रहेगा। व्यापार में लाभ कमायेगे। नौकरी में व्यस्तता रहेगी। बिजनस में पैसा न लगाएं अन्यथा नुकसान उठाना पड़ सकता है। स्वास्थ्य कमजोर रहेगा। कार्य में बाधाएं आ सकती है। घरेलू जीवन में तनाव रहेगा।

कर्क

दिन बढ़िया रहेगा। मानसिक चिंताएं रहेंगी। कारोबार व्यापार में मुनाफ़ा होगा। जीवनसाथी के साथ संबंध सुधरेंगे। कार्यक्षेत्र में आपके प्रयास रंग लाएंगे। पारिवारिक माहौल अच्छा रहेगा। लव लाइफ में तनावपूर्ण स्थिति रहेंगी।

सिंह

दिन उत्तम रहेगा। दाम्पत्य जीवन में सुख आनंद बढ़ेगा। पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाने की कोशिश करेंगे। कारोबार में अच्छा मुनाफा हो सकता है। खर्च की अधिकता रहेगी। सेहत की अनदेखी से बचें। आय में वृद्धि हो सकती है।

कन्या

दिन अनुकूल नहीं रहेगा। किसी बात से परिवार में कुछ तनाव हो सकता है। स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। दांपत्य जीवन में कहासुनी की आशंका है। कारोबार अच्छा अचेगा। कार्यक्षेत्र पर मेहनत सफल होगी। आर्थिक पक्ष अच्छी रहेगी।

तुला

दिन अच्छा रहेगा। जीवनसाथी के साथ सम्बन्ध मजबूत बनेगे। पारिवारिक जिम्मेदारियों पर ध्यान देंगे। घर परिवार सहयोग मिलेगा। धन खर्च में वृद्धि हो सकता है। कामकाज से जुड़े मामलों में आपको अच्छे नतीजे मिल सकते है।

वृश्चिक

दिन कमजोर रहेगा। खर्च की अधिकता रहेगी। वैवाहिक जीवन में तनाव उत्पन्न हो है। सेहत पर ध्यान देना होगा। पारिवारिक माहौल अच्छा रहेगा। कामकाज में अच्छे नतीजे मिलेंगे। नौकरी बदलने का विचार आ सकता है।

धनु

दिन ठीक ठाक रहेगा। पारिवारिक माहौल सामान्य रहेगा। कार्यक्षेत्र में प्रयास रंग लाएंगे। मेहनत का अच्छा फल मिलेगा। पारिवारिक सदस्यों का भरपूर सहयोग मिलेगा। कारोबारिक क्षेत्र में मेहनत के अनुरूप परिणाम नहीं मिलेगे।

मकर

दिन अच्छा रहेगा। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा। कामकाज में सुखद परिणाम मिलेंगे। परिवार में बहुत अच्छा समय बीतेगा। किसी की सहायता कर सकते हैं। दांपत्य जीवन में आपसी तालमेल बना रहेगा।

कुंभ

दिन प्रसन्नता दायक रहेगा। काम में तेजी बढेगी। आमदनी में कमी आएगी, खर्चे बढ़ेंगे। यात्रा के दौरान आपकी मुलाकात किसी अच्छे इंसान से हो सकती है। दांपत्य जीवन में प्रेम बढ़ेगा। कामकाज में मेहनत के अच्छे नतीजे मिलेंगे।

मीन

दिन लाभप्रद रहेगा। आय में वृद्धि होगी, आपको प्रसन्नता मिलेगी। दांपत्य जीवन में सबकुछ अनुकूल हो जाएगा। लव लाइफ कमजोर रहेगा। कार्यक्षेत्र में अच्छे नतीजे मिलेंगे। पारिवारिक माहौल परेशानी का कारण बन सकता है।

मंत्री चमरा लिंडा ने मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना को लेकर बड़ा अपडेट दिया

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी (धनबाद/रांची): झारखंड विधानसभा बजट सत्र के तीसरे दिन सदन में प्रश्नकाल चल रहा है. इस दौरान मंत्री चमरा लिंडा ने मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना को लेकर बड़ा अपडेट दिया है. चमरा लिंडा ने सीपी सिंह के सवाल के जवाब में कहा कि मंईयां योजना की राशि 15 मार्च यानि होली से पहले महिलाओं के खाते में भेज दी जायेगी,

झारखंड में कब हुई थी मंईयां सम्मान योजना की शुरुआत? झारखंड की हेमंत सोरेन सरकार ने अगस्त 2024 में झारखंड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना की शुरुआत की थी. महिलाओं को सशक्त करने के उद्देश्य से इस योजना की शुरुआत की गई थी,

मंईयां सम्मान योजना में कितने रुपए मिलते थे? मंईयां सम्मान योजना के तहत झारखंड की हेमंत सोरेन सरकार हर लाभुक के खाते में पहले 1000 रुपए भेजती रही है. चुनाव से पहले इस राशि को बढ़ाकर 2500 रुपए करने का ऐलान किया गया. जिसके बाद जनवरी 2025 से हर लाभुक के खाते में 2500 रुपए भेजने का ऐलान किया गया था.

मंईयां सम्मान योजना में लाभ ले रही महिलाओं को फिलहाल दिसंबर 2024 तक की आर्थिक मदद मिली है. मार्च में इस योजना में लाभ ले रही महिलाओं का राज्य सरकार पर तीन महीनों का बकाया हो जाएगा. यानी जनवरी के 2500 रुपये, फरवरी के 2500 रुपये और मार्च 2500 रुपये कुल मिलाकर देखें तो अगर मार्च में किस्त जारी होती है तो महिलाओं को 7500 रुपये दिए जाने का अनुमान है।

अनोखी शादी हुई अस्पताल में, सलाइन लगाकर प्रेमी ने प्रेमिका की मांग में भरा सिंदूर

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी (धनबाद): धनबाद के एसएनएमएमसीएच में भर्ती एक प्रेमी ने अस्पताल में ही अपनी प्रेमिका से शादी रचा ली. वहां मौजूद अन्य परिजन भी इसके गवाह बने,

धनबाद: मंदिर हो या कोर्ट या फिर थाना, अक्सर प्रेमी युगलों की शादी की खबरें सुनने को मिलती रहती हैं. लेकिन आपने शायद ही कभी सुना होगा कि किसी प्रेमी युगल ने अस्पताल में शादी की हो. लेकिन ऐसा हुआ है. धनबाद की यह कहानी फिल्मी जरूर है लेकिन यह रील लाइफ की नहीं बल्कि रियल लाइफ की कहानी है,

प्रेमिका ने अस्पताल में इलाज करा रहे प्रेमी से शादी कर ली. प्रेमी के हाथ में सलाइन लगी थी. प्रेमी ने सलाइन लगे हाथ से प्रेमिका की मांग में सिंदूर भरा और उसे मंगलसूत्र भी पहनाया. अस्पताल के मरीज इस शादी के गवाह बने और बिस्तर ही शादी का मंडप बन गया. यह अनोखी शादी एसएनएमएमसीएच अस्पताल में देखने को मिली. जिसमें बिस्तर पर पड़े प्रेमी आलोक वर्मा ने अपनी

प्रेमिका रीना से शादी कर ली. उसने सलाइन लगे हाथ से प्रेमिका की मांग में सिंदूर भरा और उसे मंगलसूत्र भी पहनाया,

अस्पताल में हुई अनोखी शादी

दरअसल, निरसा के कुमारडूबी निवासी आलोक वर्मा और वहीं की रहने वाली रीना पिछले दो साल से प्रेम संबंध में थे. दोनों एक दूसरे से शादी करना चाहते थे. लेकिन रीना के परिजनों को यह रिश्ता पसंद नहीं था. जिसके कारण रीना शादी से इंकार कर रही थी. आलोक ने रीना को समझाने की काफी कोशिश की, लेकिन वह नहीं मानी,

इसके बाद आलोक ने अपनी जान देने का फैसला कर लिया. जिसके बाद उसने आत्महत्या करने की कोशिश की. आलोक के आत्महत्या की कोशिश के बाद उसके परिजनों ने उसे एसएनएमएमसीएच अस्पताल में भर्ती कराया. उधर रीना को इस घटना की जानकारी आलोक के दोस्तों से मिली. वह काफी परेशान हो गई. साथ जीने मरने की कसमें जो दोनों ने खाई थी, वह उसके दिमाग में घूमने लगी. जिसके बाद रीना सारे रिश्ते तोड़कर अस्पताल भागी. रीना के परिजनों ने उसे रोकने की काफी कोशिश की. फिर क्या था दोस्तों ने प्रेमिका के लिए शादी का जोड़ा, मंगलसूत्र और सिंदूर लाकर रख दिया और फिर अस्पताल के बिस्तर पर ही दोनों एक दूसरे के साथ शादी के बंधन में बंध गए।

राज्य में बालू की जबरदस्त किल्लत, मनमानी कीमत पर बालू खरीदने को विवश

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी (धनबाद): रांची सहित पूरे राज्य में बालू की जबरदस्त किल्लत है। बालू की कमी के कारण कई प्रोजेक्ट्स रुक गए हैं। लोग मनमानी कीमत पर बालू खरीदने को विवश हैं। राज्य के 444 बालू घाटों में से करीब 150 घाटों के लिए एग्रीमेंट हो गया है। लेकिन 30 घाट ही चालू हैं। 28 घाटों को शुरू करने की प्रक्रिया चल रही है। इसके बावजूद लोगों को बालू नहीं मिल रहा है।

उधर, झारखंड विधानसभा के बजट सत्र में भी इस पर बवाल मच रहा है। विपक्ष सरकार को घेर रहा है। इसी बीच भास्कर ने बालू के हालात पर पड़ताल की तो चौंकाने वाले खुलासे हुए। पता चला कि बिहार का बालू सस्ता और सुलभ है। रांची में रोजाना बिहार से करीब 300 हाइवा बालू आ रहा है। एक हाइवा में 550 सीएफटी बालू होता है, जो 30 हजार रुपए में मिल रहा है। जबकि झारखंड के बालू के लिए प्रति हाइवा 40 हजार रुपए देने पड़ रहे हैं। यही नहीं, सिर्फ एक फोन कॉल पर बिहार का बालू घर तक पहुंच रहा है। वहीं झारखंड के बालू के लिए लोगों को माथापच्ची करनी पड़ रही है। ब्रोकरों का कहना है कि झारखंड में ऊपर से नीचे तक पूरे सिस्टम को मैनेज करना पड़ रहा है। इस कारण वे ज्यादा पैसे ले रहे। जबकि बिहार से बिना परेशानी के बालू आ रहा है। 30 हजार रुपए में बेचने पर भी उन्हें मुनाफा हो रहा है। यही कारण है कि यहां के ब्रोकरों ने झारखंड का बालू बेचना बंद कर दिया है।

शॉर्ट सर्किट से कतरास बाजार के कपड़ा दुकानों में लगी आग

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी (धनबाद): कतरास बाजार में शॉर्ट सर्किट से भीषण आग, लाखों रुपये के कपड़े जलकर राख। कतरास थाना क्षेत्र के कतरास बाजार स्थित श्रीलाल पोखरमल एंड सन्स और आनंद ड्रेसस में आज तड़के करीब 3 बजे शॉर्ट सर्किट के कारण भीषण आग लग गई। आग की लपटें इतनी तेज थीं कि लाखों रुपये मूल्य के कपड़े जलकर राख

हो गए। स्थानीय लोगों की तत्परता और प्रयासों से आग पर काबू पाया गया, जिससे किसी बड़े हादसे से बचा जा सका। दुकानदार गौरव कुमार खंडेलवाला ने नुकसान का आंकड़ा 7 से 8 लाख रुपये बताया। स्थानीय प्रशासन और फायर ब्रिगेड की टीम को घटना की सूचना मिलते ही मौके पर पहुंचने का प्रयास किया, लेकिन आग पर नियंत्रण पहले ही पाया जा चुका था। इस हादसे के बाद स्थानीय व्यापारियों में चिंता का माहौल है, और शॉर्ट सर्किट के कारण हुई इस घटना ने आगजनी के खतरों को फिर से उजागर किया है।

धनबाद में गणतंत्र समूह ने छात्रा स्नेहा की हत्या के खिलाप यूपी के सीएम योगी का पुतला फूंका

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी (धनबाद): धनबाद के रणधीर वर्मा चौक पर 27 फरवरी को, गणतंत्र समूह, गत दिन उतर प्रदेश बनारस के वेलूपुर में विहार सासाराम की रहने वाली स्नेहा कुशवाह जो नीट के तैयारी हेतु हॉस्टल में रह रही थी। रामेश्वर पाण्डे के छात्रावास में रह कर अध्यन करती थी, कि हत्या 1 फरवरी को कर दिया गया जिसे पुलिस प्रशासन आत्महत्या बताने का प्रयास के खिलाफ परिजन के ब्यान जिसमे हत्या का आरोप लगाकर जाँच कि माँग पर बनारस पुलिस ने बगैर परिजन के पोस्टमार्टम करा कर शव तक को देखने से रोकने, शव को खिड़की के सहारे गर्दन में रस्सी लगा कर के दिखाया गया जबकि हॉस्टल के सी सी टीवी पुरे घटना के कलई खोल दी तब भी कोई कार्यवाही नहीं होने के खिलाफ रणधीर वर्मा चौक पर विरोध मार्च कर यु पी में महिला सुरक्षा में फेल हुकूमत को दोषी मानते हुए सीएम योगी आदित्यनाथ का पुतला फूँक कर धनबाद उपायुक्त के माध्यम से राष्ट्रपति से तत्काल राष्ट्रपति शाषण लागु कर स्नेहा कुशवाहा को न्याय देते हुए सम्मिलित अपराधियों को कड़ी सजा देने का माँग किया गया।

धरना का नेतृत्व गणतंत्र समूह के प्रेम बच्चन, गुलाब सिंह, योगेश यादव, कैलाश रजक, सुरेंद्र वर्मा, बंशराज सिंह, लालबाबू सिंह ने की। बीरेंद्र,बाबूराम मांझी, रजक, शिव बालक पासवान, मौके पर कैशर शहाब, संतोष कुमार, हरिनारायण सिंह, ब्रजकिशोर सिंह, सत्येंद्र मंडल, शशिधर सिंह, प्रेमचंद, अरुण सिन्हा, रामप्रीत प्रसाद, अजय वर्मा, विजय सिंह कुशवाहा, रामाशीष चौहान, अजय वर्मा, लक्ष्मी कारवाँ, निर्मला कुमारी, सितबिया देवी, कपिल भुईँया, सहित अनेको लोग शामील हुए।

जनता की सेवा में समर्पित हूं, जनमुद्दों को उठाता रहूंगा- शत्रुघ्न महतो

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी (धनबाद/रांची): झारखंड विधानसभा के बजट सत्र के दौरान बाघमारा विधायक शत्रुघ्न महतो ने अपने क्षेत्र के किसानों और आंगनबाड़ी कर्मियों की समस्याओं को मजबूती से उठाया। उन्होंने सरकार से जवाब मांगा कि बाघमारा में कृषि योग्य भूमि और सिंचाई सुविधाओं की कमी के कारण किसानों को दिक्कतें हो रही हैं। साथ ही, उन्होंने सवाल किया कि क्या सरकार क्षेत्र में कृषि विज्ञान केंद्र खोलने का विचार कर रही है, ताकि किसानों को आधुनिक तकनीक और प्रशिक्षण का लाभ मिल सके। सरकार की ओर से आंशिक स्वीकार्यता जताई गई, लेकिन यह स्पष्ट किया गया कि बाघमारा में कृषि विज्ञान केंद्र खोलने की कोई योजना फिलहाल नहीं है। विधायक महतो ने इस पर नाराजगी जताते हुए कहा कि बाघमारा के किसानों को उनकी जरूरत के अनुसार संसाधन नहीं मिल रहे, जिससे कृषि उत्पादन प्रभावित हो रहा है। उन्होंने सरकार से स्थानीय किसानों को समुचित प्रशिक्षण और आधुनिक उपकरण उपलब्ध कराने की मांग की। इसके अलावा, विधायक महतो ने महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा संचालित आंगनबाड़ी सेविकाओं और सहायिकाओं के नियमितीकरण के मुद्दे को भी जोरशोर से उठाया। उन्होंने सरकार से पूछा कि 2004 से कार्यरत ये कर्मी लगातार नियमित करने की मांग कर रहे हैं, लेकिन अब तक इस पर ठोस कदम क्यों नहीं उठाया गया? सरकार की ओर से जवाब में कहा गया कि महिला पर्यवेक्षिकाओं के नियमितीकरण पर नीतिगत निर्णय विचाराधीन है, लेकिन आंगनबाड़ी सेविकाओं और सहायिकाओं के नियमितीकरण का कोई प्रस्ताव नहीं है। विधायक महतो ने इसे आंगनबाड़ी कर्मियों के साथ अन्याय करार देते हुए कहा कि सरकार को जल्द से जल्द इस पर ठोस निर्णय लेना चाहिए, ताकि इन कर्मियों को उनका हक मिल सके। उन्होंने यह भी कहा कि वे अपने क्षेत्र के किसानों और महिलाओं के हितों की लड़ाई आगे भी जारी रखेंगे और सरकार से जवाबदेही की मांग करते रहेंगे। बाघमारा की जनता के मुद्दों को प्रभावी तरीके से उठाने के लिए विधायक शत्रुघ्न महतो की इस पहल की सराहना की जा रही है। उनके प्रयासों से किसानों और आंगनबाड़ी कर्मियों को उम्मीद जगी है कि उनकी समस्याओं का जल्द समाधान निकलेगा।

महाकुम्भ में भगदड़ के मृतकों को आप ने दी श्रध्दांजलि

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी (धनबाद): आम आदमी पार्टी के बैनर तले झरिया विधानसभा अंतर्गत फुस बंगला दुर्गा मंडप में कुंभ में गए वैसे श्रद्धालु जिनकी आकस्मिक मृत्यु हो गई है उन श्रद्धालुओं के आत्मा की शांति के लिए एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया कार्यक्रम में उन आत्माओं की शांति के लिए पुष्प अर्पित किया गया तथा दीप जलाया गया और 1 मिनट का मौन रखा गया एवं दुख प्रकट किया एवं वैसे लोग जिन्होंने धर्म से ऊपर उठकर अन्य धर्म के लोगों को मदद किया उन सभी को धन्यवाद दिया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से उपस्थित रहे महेंद्र सिंह मदन राम समरेंद्र पासवान राजेश कुमार संजय सिंनहा नीतीश कुमार गुप्ता कुणाल चंद्रवंशी नंदलाल तांती सदरे आलम जावेद खान मोहम्मद सरफराज डब्लू अंसारी मोहम्मद फिरोज जसीम अंसारी मुन्ना खान हफीजुल व्यापारी देखिए सनातन भगवान कृष्ण गीता राजेंद्र चौधरी रामकृष्ण प्रसाद महेंद्र कुमार हरिप्रसाद बादशाह खान अनवर अंसारी शकीला बानो के अलावा अन्य सेकुलर लोग उपस्थित थे।

BHOLA ELECTRICAL
G.T.ROAD NEAMATPUR, AASANSOL WEST BENGAL—713359
ALL KIND OF ELECTRICAL JOB : CONTACT : 9064588166
SALES, SERVICE & CCTV CAMRA INSTALLATION,
HOUSE WIRING, MOTER & FAN WINDING

कर्मी को कार्मिक प्रबंधक ने मैडल पहना कर किया सम्मानित

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी (धनबाद): तिसरा, बृहस्पतिवार को, वगत दिनों 22 एवं 23 फरवरी को प्रकाशम स्टेडियम कोठा गोदाम, सिंगरेली कोलियरी कंपनी लिमिटेड में आयोजित कोल इंडिया लिमिटेड इंटर कंपनी एथेलेटिक्स मीट 2024-25 में बीसीसीएल के लोदना क्षेत्र-10 के नंदू हाड़ी ने 10000 मीटर दस हजार मीटर दौड़ में ब्रॉन्ज मेडल प्राप्त किया। नंदू हाड़ी ने बीसीसीएल के लोदना क्षेत्र का नाम रौशन किया हैं यह काबिले तारीफ हैं। लोदना क्षेत्र के प्रसनल कार्मिक प्रबंधक के कार्यालय में ब्रॉन्ज मेडल पहनाते हुए क्षेत्रीय प्रबंधक कार्मिक डी. के. सिंह ने हौसलाअफजाई की। इस अवसर पर राकेश कुमार, लिपिक अन्य कर्मी उपस्थित थें।

मैथन में चौबीस कुण्डीय गायत्री महायज्ञ तृतीय दिन हवन व विभिन्न संस्कारों का आयोजन

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी (धनबाद): चिरकुंडा, मैथन स्थित रांची कॉलोनी में चौबीस कुण्डीय गायत्री महायज्ञ की तृतीय दिन गुरुवार को चौबीस कुण्डीय गायत्री महायज्ञ की गई वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ विधिवत पूजा पाठ कराई गई। गायत्री प्रज्ञा मंडल गुरुवार को चौबीस कुंडो पर हवन किया गया शांतिकुंज हरिद्वार से आए टोलियों ने वेद मंच से मंत्रोच्चारण कर पूजा करवाए और आज सैन्य काल में कथा के साथ भव्य दीप यज्ञ का आयोजन किया जिसमें परिवार निर्माण के सूत्र दिए गये एव प्रत्येक दिन अलग अलग कार्यक्रम की जा रही है, प्रात:हवन और संध्या प्रवचन एव मधुर संगीत भजन का आयोजन कि जा रही है इस दौरान में आज हवन, दीक्षा, जन्मदिवस संस्कार, विवाह संस्कार, मुंडन, अन्य प्रशन आदि विविध संस्कार कराई गई। मौके पर मुख्य रूप से शांतिकुंज हरिद्वार से आए टोली गायक श्रीदेवी सिंह, वादक अभिशेष बैरागी, कोर्राम सहयोगी धनश्याम गायत्री परिवार के पुरूषोतम पाण्डे, अशोक कुमार पाठक, पिंटू साव, रामअवतार शास्त्री, आयुष्मान सिंह, शालिनी सिंह, कंचन सिंह, सहित सैकड़ो की संख्या में गायत्री परिवार के सदस्य एव श्रद्धालु उपस्थित थे।

जयंती पर याद किये गये स्वर्गीय एस के बक्सी

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी (धनबाद): तिसरा, बृहस्पतिवार को गोलकडीह स्थित बीसीकेयू शाखा कार्यालय में स्वर्गीय एस के बक्शी का जयंती गुरुवार को मनाया गया। इस अवसर पर बीसीकेयू के दर्जनों समर्थक मौजूद थें। उनके तस्वीर पर माल्यार्पण किया गया इसके बाद केक काटा गया। उपस्थित लोगों ने एक दूसरे को केक खिला कर खुशियां मनाई। इस दौरान केंद्रीय सचिव तुलसी रवानी ने कहा कि स्वर्गीय बक्शी दा मजदूरों के मसीहा थें। जब तक जीवित रहे तब तक मजदूरों की लड़ाई लड़ते रहे और उनका हक और अधिकार दिलाने का काम किया। आज उनकी कमी खल रही है। उनकी याद को ताजा रखने के लिए जयंती मनाया जा रहा है। मौके पर बिंदा पासवान, तुलसी रवानी, राजेंद्र पासवान, देवरंजन दास, सुभाष महतो, तेजेंद्र वर्मा, अलाउद्दीन अंसारी, गोपाल लाल, निताई माजी, परमेश्वर मरांडी, सपन महथा, रोहन भुइयां, शिव बालक पासवान, आशीत चटर्जी, शंकर शाह, प्रदीप रवानी, इम्तियाज मियां, हरीश कुमार, बनवारी शर्मा आदि शामिल थें।

जी-100 ग्लोबल विमेन लीडर्स लंच कार्यक्रम

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी (धनबाद/रांची): जी-100 ग्लोबल विमेन लीडर्स लंच कार्यक्रम में बतौर विशिष्ट अतिथि झरिया विधायक रागिनी सिंह रांची स्थित रेडिशन ब्लू पहुंची जहां झारखंड राय यूनिवर्सिटी की वाइस चांसलर डॉक्टर सविता सेंगर जी-100 की फाउंडर डॉक्टर हरबिन राय अरोरा फॉर्मर मिनिस्टर यूनेस्को चेयर होल्डर एच ई उपहेरासी कौआसी याओ फॉर्मर वाइस प्रेसिडेंट कोस्टा रिसा एच ई डॉक्टर एप्सी कैंपबेल बार डेटिन हरतिनी बिनती ओसमान काइनेटिक्स इंडिया ग्रीन की फाउंडर एंड सीईओ सुलज्जा फिरोदिया मोटवानी समेत अन्य जी 100 विमेन लीडर्स की सदस्यों ने विधायक श्रीमती रागिनी सिंह का स्वागत अभिनंदन किया वही इस दौरान संस्था द्वारा किए जाने वाले विषयों पर चर्चा हुई।

सीएफएम संक्षिप्त

आज राज्य स्वास्थ्य बीमा योजना का मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन करेंगे शुभारंभ

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी (धनबाद/रांची): झारखंड मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन शुक्रवार को राज्यकर्मियों और पेंशनरों के लिए राज्य स्वास्थ्य बीमा योजना का शुभारंभ विधानसभा के कांफ्रेंस हॉल में करेंगे। इस योजना के लाभुकों और उनके आश्रितों को प्रतिवर्ष 5 लाख रुपए का स्वास्थ्य बीमा मुहैया कराया जाएगा। दिव्यांग आश्रितों को आजीवन इस योजना का लाभ मिलेगा। लाभुकों को गंभीर बीमारियों के इलाज के लिए पांच लाख रुपए तक की अतिरिक्त सीमा अर्थात कुल 10 लाख रुपए तक चिकित्सा व्यय का वहन किया जाएगा। इसके अतिरिक्त बीमा राशि से अधिक खर्च होने पर कॉरपस फंड द्वारा भुगतान किया जाएगा। विशेष परिस्थिति में राज्यकर्मी और सेवानिवृत्त कर्मियों का दुर्घटनाग्रस्त अथवा मरणासन्न स्थिति में तत्काल उच्चतर संस्थान में उपचार के लिए रेफर किए जाने की स्थिति में एयर एम्बुलेंस एवं वायुयान यात्रा की सहायता दी जाएगी।

टीएसपीसी के खिलाफ पलामू पुलिस को बड़ी सफलता

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी (धनबाद/पलामू): प्रतिबंधित नक्सली संगठन टीएसपीसी के खिलाफ पलामू पुलिस को बड़ी सफलता मिली है। पलामू पुलिस ने टीएसपीसी के एक कमांडर को गिरफ्तार किया है जिसकी निशानदेही पर पुलिस ने 652 गोलियां बरामद की हैं। गिरफ्तार नक्सली ने पलामू पुलिस के सामने कई बड़े खुलासे किए हैं। बरामद गोली थ्री नॉट थ्री की है। टीएसपीसी के नक्सलियों ने इसे जंगल में छिपा रखा था।

झारखंड लोक सेवा आयोग को आखिरकार मिला नया अध्यक्ष

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी (धनबाद/रांची): झारखंड लोक सेवा आयोग को आखिरकार नया अध्यक्ष मिल गया है। राज्य के पूर्व मुख्य सचिव एल खियांगते जेपीएससी के नये अध्यक्ष होंगे। राज्य सरकार के प्रस्ताव पर राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने नियुक्ति पर मुहर लगा दी है। पिछले साल ही एल. खियांगते मुख्य सचिव के पद से रिटायर हुए थे।

अफीम की खेती पर सैटेलाइट निगरानी

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी (धनबाद/रांची): झारखंड पुलिस अब तक सैटेलाइट इमेज के जरिए अफीम की फसल का पता लगाकर उसे नष्ट करने में लगी हुई थी, लेकिन अब झारखंड पुलिस उन खेतों की भी निगरानी करेगी, जहां पहले से अफीम की खेती होती रही है। इसके लिए उन खेतों की सैटेलाइट निगरानी के साथ-साथ मैप ड्रग ऐप का सहारा लिया जा रहा है।

09 एकड़ जमीन पर लगी अफीम को विनिष्ट किया गया

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी (धनबाद/चाईबासा): अफीम की खेती के खिलाफ अभियान में बंदगाव थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम केराबासा एवं कोमन सागा टोली में करीब 09 एकड़ जमीन पर लगी अफीम को विनिष्ट किया गया।

छत से गिरकर तोपचांची में मजदूर की मौत

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी (धनबाद): तोपचांची प्रखंड के कबीरडीह स्थित बेलाटांड़ उर्दू प्राथमिक विद्यालय परिसर में गुरुवार को पुराने सरकारी जर्जर भवन को तोड़ने के दौरान मंगल दास नामक मजदूर की छत से गिरने की वजह से दर्दनाक मौत हो गई, बताया जाता है कि स्कूल परिसर में पुराने जर्जर सरकारी भवन को बिना अनुमति तोड़ने का कार्य किसी शम्भू रवानी नामक व्यक्ति द्वारा कराया जा रहा था. पुराना जर्जर भवन को तोड़ने के क्रम में छत ऊपर से ढह गया और मजदूर भी नीचे गिर गया जिससे उसकी दर्दनाक मौत हो गई, तोपचांची पुलिस मौके पर पहुचकर मामले की जांच कर रही है, ग्रामीणों की मांग है कि गरीब मजदूर को उचित मुवावजा दिया जाए, फिलहाल आक्रोशित ग्रामीण शव को उठाने नही दे रहे है, ग्रामीणों की मांग है कि दोषी व्यक्ति को पहले गिरफ्तार किया जाए और मृतक के परिजन को उचित मुवावजा दिया जाए।

झरिया में महा शिवरात्रि पर रुद्राभिषेक

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी (धनबाद): झरिया, प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में सामूहिक रुद्राभिषेक का आयोजन धूमधाम से किया गया। इस अवसर पर 108 यजमान प्रत्यक्ष रुद्राभिषेक करने बैठे और 551 यजमानों के नाम से रुद्राभिषेक का संकल्प किया गया। मुख्य यजमान के रूप में राजन गोयल ने गर्भगृह में सपरिवार बैठ कर पूजा की।

रुद्राभिषेक एवं पूजन वैदिक मंत्रोच्चार के साथ श्री योगेश महाराज मोहित पाण्डेय रवि भूषण पांडे जगदीश भट्ट श्रवण पांडे कृष्णा पांडे छोटन पाण्डेय सीताराम पांडे संजय पांडे विकाश कुमार राकेश पांडे मोहन पांडे सुबोध पांडे ने संपन्न कराया।

पूजा में मुख्य यजमान के अलावा बलदेव पांडे जिज्ञासा भट्ट कुसुम पांडे बेबी पांडे चेतन मपारा नरेश भट्ट जिग्नेश दवे शीतल ठक्कर विभा त्रिवेदी करिश्मा जानी इत्यादि बैठे थे। कार्यक्रम के अंत में दीपमाला प्रगट कर दीपावली जैसा वातावरण सृजित किया गया। अंत में आरती कर प्रसाद वितरण किया गया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में होमेश जोशी ललित सोलंकी राजेश ठक्कर नरेश भट्ट डॉक्टर उपेंद्र दवे विपेंद्र ठक्कर प्रियंक भट्ट रोहित सिंहा यश दवे शिप्रा ठक्कर वर्षा पटेल मधुसूदन शाह आदि का विशेष योगदान रहा।

बाघामुड़ी में महाशिवरात्री को लेकर महाभंडारे का आयोजन

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी (धनबाद): चिरकुंडा, महाशिवरात्रि को लेकर बाघाकुड़ी हरिजन टोला में महाभंडारे का आयोजन किया गया। इस दौरान सैकड़ो की संख्या में भक्तो ने प्रसाद ग्रहण की। कार्यक्रम में मुख्य रूप से पहुंचे शिवलीबाड़ी दक्षिण पंचायत के पंचायत समिति सदस्य सह समाजसेवी मधु सिंह, पूर्व पार्षद इरफ़ान अहमद खान, एवं अंजलि देवी ने कहा की हार साल की भांति इस साल भी शिवरात्री के उपलक्ष्य में महाभंडारे का आयोजन किया गया है। इस शुभ मौके पर हमलोग भगवान शिव से प्रार्थना करते है की निरसा सहित झारखंड वासियों को सुख समृद्धि प्रदान हो। भंडारे को सफल बनाने में बाघाकुड़ी के निवासियों का सराहनीय योगदान रहा।

दिवंगत कॉमरेड मनोज साव को भाकपा माले ने दी श्रद्धांजलि

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी (धनबाद): गुरुवार को भाकपा माले कार्यालय पुराना बाजार टेंपल रोड में जिला सचिव कामरेड बिंदा पासवान की अध्यक्षता में बैठक हुई। बैठक में सर्वप्रथम भाकपा-माले के वरिष्ठ नेता दिवंगत कामरेड मनोज साव के आकस्मिक निधन पर 2 मिनट का मौन धारण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित किया गया। बैठक में मुख्य अतिथि पलीट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड हलधर महतो उपस्थित थे। अपने वक्तव्य में हलधर महतो ने कहा कि कामरेड मनोज साव लाल झंडा के सच्चे सिपाही तथा सिद्धांत एवं संघर्ष में हमेशा साथ रहे और एक समर्पित कार्यकर्ता के रूप में उनके अंतिम दम तक लाल झंडा के प्रति समर्पित की भावना देखी गई। आज कॉमरेड मनोज साव जैसे एक सच्चे क्रांतिकारी कम्युनिस्ट के निधन पर संगठन को अपूर्णीय क्षति हुई है जिसकी भरपाई करना मुश्किल है, आने वाला युवा पीढ़ी को इससे प्रेरणा लेने की जरूरत है,

उन्होंने अंत में चंद्रशेखर आजाद के शहादत दिवस पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे भारत को हर प्रकार शोषण से मुक्ति के लिए लोगों को प्रेरित करते रहे।

बैठक में राज्य सदस्य एम पाल, जिला सचिव बिंदा पासवान, सुभाष प्रसाद सिंह, सुभाष चटर्जी, राणा चट्टराज, रामलाल दा, विश्वजीत राय, नरेश पासवान, धर्म बाउड़ी, सुरेश पासवान, शिवालक पासवान आदि लोग शामिल थे।

रवींद्र वर्मा ने जगदेव जागरण रथ को हर्ष और उल्लास के साथ की विदाई

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी (धनबाद): अमर शहीद जगदेव प्रसाद जागरण अभियान के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉक्टर संत कुमार सिंह जो पटना से चलकर पूरे झारखंड के जिलों का भ्रमण करने के बाद बुधवार को धनबाद पहुंचे। जिन्हें रवींद्र वर्मा के आवास पर ठहराने की व्यवस्था की गई। और गुरुवार को पूरे हर्ष और उल्लास के साथ जगदेव जागरण रथ की विदाई की गई। जिसका संचालन झारखंड कुशवाहा महासभा के जिला अध्यक्ष लाल बाबू सिंह ने किया और कांग्रेस कांग्रेस पार्टी के प्रदेश महासचिव रविंद्र कुमार वर्मा ने पूरा हौसला अफजाई की और क्रांतिकारी अभिनंदन के साथ बिहार लेनिन अमर शहीद जगदेव प्रसाद के विचारों को घर-घर तक पहुंचाने और दलित पिछड़ा अल्पसंख्यक को और गरीबों के हित के लिए सभी समाज के लोगों को आगे आने का अह्वान किया और अपने संबोधन में जगदेव बाबू के त्याग तपस्या वीरता बलिदान के लिए उनको शत -शत नमन किया। और कहा की इस तरह के महापुरुषों को जन्म लेने से समाज का ही नहीं बल्कि पूरे देश का हित संभव है। और झारखंड कुशवाहा महासभा के जिला अध्यक्ष ने कहा की 100 में 90 शोषित है शोषितो ने ललकार है, धन धरती और राज पाठ में 90 भाग हमारा है 10 का शासन 90 पर नहीं चलेगा नहीं चलेगा। और झारखंड कुशवाहा महासभा के कोषाध्यक्ष इंद्रभूषण कुशवाहा ने कहा जगदेव प्रसाद क्रांति के अग्रदूत थे, समाज में बदलाव लाने के लिए उन्होंने जो क्रांति किया और क्रांति के दौरान ही उन्हें अत्याचारियों के द्वारा उनकी हत्या कर दी गई और हत्या के विरोध में पूरे देश के दलित शोषित पिछड़ा वर्ग के लोग क्रांति का बिगुल बजाकर आज तक क्रांति करते रहे जिसका परिणाम हर राज्य में पिछड़ा दलित समाज के लोगो को कही मुख्यमंत्री या मंत्री बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। और इस आयोजन में मुख्य रूप से जितेंद्र प्रसाद, अनिल कुमार प्रसाद, इंद्रजीत प्रसाद, राम जी कुशवाहा, अरुण कुशवाहा, रमेश कुशवाहा, राजकुमार कुशवाहा, उमेश कुशवाहा, यशपाल सिंह, कुशवाहा तथा अन्य लोग उपस्थित थे।

अकर्मण्यता जीवन की उन्नती का बड़ा अवरोध

कर्मठता के साथ बड़ी सफलता प्राप्त कीजिये

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी 2025: यह बात चाहे मनुष्य के जीवन की हो यह राष्ट्र के उत्थान से संदर्भित हो, जीवन में मनुष्य के संदर्भ में अकर्मण्यता एक बड़ी शारीरिक, मानसिक व्याधि और दशा है, यह जीवन को निरर्थक बनाती है। इसी तरह देश का शासन तंत्र यदि आक्रमण्य और निराशावादी हो तो देश की उन्नति में अवरोध और बढ़ाएं सदैव उत्पन्न होती रहती हैं। इस अवस्था को तत्काल त्यागना चाहिए, और अपने जीवन के संघर्ष के लिए तैयार रखना चाहिए। मन ही मन यदि आपने किसी कठिन कार्य को करने का संकल्प ले लिया तो निरंतर जिजीविषा और संयम के साथ संघर्ष हर बड़ी जीत और सफलता के उत्तम मार्ग हैं। वैसे जीवन में दुष्कर, कठिन कार्य को पहले चुनना चाहिए जिससे पूरी शक्ति एवं उर्जा लगाकर हम उसे प्राप्त कर सकें। कठिन कार्य से घबराकर उससे पलायन करना निराशा को जन्म देता है। निराशा से बढ़कर कोई अवरोध नहीं अतः निराशा, हताशा को त्यागें और ऊर्जा उत्साह के साथ आगे बढ़ें, सफलता आपके कदमों पर होगी। हर बड़ा व्यक्ति जो हमें समाज से अलग हटकर खड़ा दिखाई देता है। जिसे हम विलक्षण मानते और प्रतिभा संपन्न मानते हैं और आज के संदर्भ में हम उसे सेलिब्रिटी कहते हैं तो निसंदेह उसकी इस सफलता के पीछे अनवरत श्रम, अदम्य मानसिक शक्ति और संयम छुपा होता है। बड़ी सफलता प्राप्त करने का कोई सरल उपाय या शॉर्टकट नहीं होता है। विपरीत परिस्थितियों में मनुष्य की मानसिक दृढ़ता एवं संकल्पित कठिन श्रम ही सफलता के रास्ते खोलते हैं। यूं तो हर इंसान के जीवन में विशेषताएं, मान्यताएं, प्रतिबद्धताएं और आकांक्षाएं होती हैं सभी लोग मूलभूत आवश्यकताओं के साथ साथ सामाजिकता, प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा जैसी उच्च स्तरीय आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहते हैं। मानव की स्वाभाविक और अदम्य इच्छा की पूर्ति के संपूर्ण जीवन और उसके अस्तित्व के लिए अत्यंत आवश्यक है किंतु व्यक्ति की इच्छा, आकांक्षा सफलता उस उसके मूल्यों, सिद्धांतों और आदर्शों की कीमत पर कतई नहीं होनी चाहिए। यदि व्यक्ति की आकांक्षा, सफलता और इच्छा उसकी अदम्य इच्छा, भूख और मूल्यों को समाविष्ट ना करते हुए दूसरी दिशा में जाती हो तो ऐसे में उसकी सफलता पूरे मानव समाज और मानवता के लिए संकट का कारण भी बन सकती है। जिस तरह एक वैज्ञानिक मेहनत, लगन, प्रयोगशाला में मानवी संविधान मूल्यों से ओतप्रोत मानव कल्याण के उपकरण न बनाकर जैविक व रासायनिक हथियार बनाकर व्यापक नरसंहार जैसे अमानवीय अविष्कार को मूर्त रूप दे, तो यह समाज के लिए खतरनाक हो सकता है। यही वजह है की सफलता का नक्शा और इच्छा के पीछे मानवीय मूल्यों का होना अत्यंत आवश्यक भी है। मूल्य, सिद्धांत और नैतिकता जीवन के लक्ष्य और उसके क्रियान्वयन में सर्वाधिक संवेदनशील एवं महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सफलता की धारणा केवल स्थापित मापदंड न होकर मानवीय मूल्यों से जुड़ा होकर मानव कल्याण के लिए भी होना चाहिए। इसमें कोई संदेह नहीं की विश्व भर की सभी सभ्यताओं, संस्कृतियों और धर्मों में अहिंसा, सत्य, करुणा, सेवा, दया और विश्व बंधुत्व की भावना की निर्विवाद उपस्थिति दिखाई देती है। और वैश्विक विकास की अवधारणा भी इन्हीं बिंदुओं पर रखकर तय की जाती है। भारत में प्राचीन काल से ही मूल्यों की प्रतिबद्धता की परंपरा चली आ रही है। ऋषि-मुनियों ने तो यहां तक कहा है कि जिसका चरित्र तथा मानवीय आदर्श चला गया वह व्यक्ति, मृतक लाश की तरह हो जाता है। भारतीय संस्कृति में आदर्शों तथा मूल्य के पोषक उदाहरणों की अंतहीन सूची है जिनमें कबीर, रैदास, संत, ज्ञानेश्वर तुकाराम, मोइनुद्दीन चिश्ती, निजामुद्दीन औलिया, रहीम,खुसरो, गांधी, नेहरू, टैगोर, सुभाष, विवेकानंद जैसे महान लोग सिद्धांतों की प्रतिबद्धता को अपने जीवन की सफलता मानकर अपने जीवन को समाज को सौंप दिया था। परिणाम स्वरूप व्यक्ति को महज सफलता का पुजारी ना बन कर मूल्यों के प्रति प्रतिबंध होने का प्रयास करना चाहिए। ताकि तनिक सफलता के स्थान पर चिरस्थाई एवं समाज उपयोगी सफलता प्राप्त हो सके। वर्तमान में यह स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है कि व्यक्ति स्वाद तथा सफलता के लिए अक्सर अपने मूल्यों को तिलांजलि दे देता है। वर्तमान सुख एवं लालच चिरस्थाई सफलता के सामने महत्वपूर्ण एवं प्राथमिक हो जाता है। आज मनुष्य तत्काल एवं अस्थाई सफलता के पीछे मानवीय मूल्यों प्रतिबद्धताओं को किनारे कर उस मरीचिका की तरफ दौड़ रहा है जो अत्यंत अस्थाई एवं पानी के बुलबुले की तरह है। और इससे न तो कोई इतिहास बनता है और ना ही कोई प्रतिमान ही स्थापित होता है। पानी का पतला रेला नदी का रूप नहीं ले सकता। उसी तरह बिना मूल्यों की सफलता स्थाई नहीं होती है। राजनीति तथा प्रशासन में मूल्यों सिद्धांतों की तो ज्यादा आवश्यकता महसूस की जाती है। क्योंकि राष्ट्र तथा नीति निर्देशक तत्वों को संचालन की दिशा देने के लिए मानवीय संवेदना, मूल्य और सिद्धांतों की अत्यंत आवश्यकता होती है। अन्यथा समाज दिग्भ्रमित होकर बिखरने के कगार पर पहुंच जाता है। राष्ट्र विखंडित होने की स्थिति में आ जाता है। मूल्य विहीन समाज अपने अधिकारों के दुरुपयोग तथा कर्तव्य के प्रति लापरवाही तथा उदासीनता के चलते समाज को सोचनीय स्तर पर लाकर खड़ा कर देता है। सफलता तब ही शाश्वत तथा स्थाई हो सकती है जब इसमें जीवन के मूल्यों और सिद्धांतों का समावेश होता है। वही देश और राष्ट्र चिरस्थाई तथा लंबे समय तक स्वतंत्र रह सकता है, जिसके शासक एवं प्रजा अपने संपूर्ण कार्य मूल्यों, उसूलों और नैतिक प्रतिबद्धता के मार्ग पर चलकर वैश्विक देशों से अपने संबंध निर्मल तथा सैद्धांतिक बनाकर रखता है अन्यथा उस राष्ट्र को विखंडित और पराधीन होने से कोई नहीं बचा सकता।

संजीव ठाकुर
स्तंभकार, चिंतक लेखक
रायपुर छत्तीसगढ़

आशीर्वचन या आत्म-प्रवंचना: क्या है 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' का सच?

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी 2025: हमारे जीवन का सबसे बड़ा रहस्य और गहरा विरोधाभास यह है कि हम हर सत्य को जानते हैं, उसे समझते हैं, फिर भी उसे अपनाने से हिचकते हैं। यह मानव स्वभाव की वह विचित्रता है, जो हमें आत्ममंथन की ओर ले जाती है। हम यह भली-भाँति पहचानते हैं कि प्रकाश के साथ अंधेरा और जीवन के साथ मृत्यु का चोली-दामन का साथ है। सुख की अनुभूति तभी संपूर्ण होती है, जब हमने दुख की आँच को झेला हो। लेकिन जब शुभकामनाओं का मौका आता है, तो हमारे मुँह से एक ही वाक्य निकलता है—"सदा सुखी रहो!" यह शब्द हमारे होंठों पर ऐसे जम गए हैं, जैसे कोई स्वचालित जाप, जिसे हम बिना सोचे दोहराते हैं।

क्या यह महज औपचारिकता है? क्या यह हमारी संस्कृति और संस्कारों का हिस्सा बन चुका है, या फिर यह हमारी मानसिक कमजोरी और कायरता का प्रतीक है? हम यह क्यों नहीं कहते कि "जीवन की हर चुनौती से लड़ने की शक्ति मिले"? शायद इसलिए कि यह सुनने में उतना मधुर नहीं। हमें मीठे शब्दों की आदत पड़ गई है—कड़वा सच न कहना चाहते हैं, न सुनना। यह विडंबना हमारे जीवन की पहचान बन गई है: हम जानते हैं कि दुख के बिना सुख फीका है, फिर भी एक ऐसी दुनिया की कल्पना करते हैं, जहाँ केवल सुख हो—बिना कांटों, बिना ठोकरों के।

यह कितना असंगत और स्वप्निल विचार है! क्या कोई नदी यह माँग सकती है कि उसका प्रवाह कभी चट्टानों से न टकराए? क्या सूरज यह चाह सकता है कि उसकी किरणों को कभी बादल न ढँकें? जीवन की प्रकृति भी ऐसी ही है—बाधाएँ, संघर्ष और दुख इसके मूल तत्व हैं, जैसे सिक्के के दो पहलू। जो कहता है कि उसने दुख को कभी छुआ नहीं, वह या तो सच को छिपा रहा है, या जीवन की गहराई से कोसों दूर है। सुख तब तक बेस्वाद है, जब तक वह दुख की छाया से रंग न ले। यदि हर कदम पर सब कुछ सहज होता, तो जीवन का वह अनमोल सौंदर्य कहाँ उभरता? संघर्ष वह अग्नि है, जो हमारे भीतर की अशुद्धियों को जलाकर हमें निखारती है।

हमारी संस्कृति में "सर्वे भवन्तु सुखिनः" की गूँज है—सब सुखी हों, सबका भला हो। यह एक आदर्श भावना है। लेकिन क्या यह सचमुच संभव है? यदि ऐसा होता, तो दुनिया में इतना दर्द, इतनी असमानता क्यों होती? शायद यह मंत्र भी हमारे लिए एक मानसिक तसल्ली का जरिया बन गया है—एक ऐसा भ्रम, जिसे दोहराकर हम खुद को सब ठीक होने का आश्वासन देते हैं। "सदा सुखी रहो" एक मधुर झूठ है, जिसे हमने सच मान लिया। हम जानते हैं कि यह असंभव है, फिर भी इसे कहने से खुद को रोक नहीं पाते। यह हमारी चेतना का वह अंतर्द्वंद्व है, जहाँ सत्य को पहचानते हुए भी हम उसे गले लगाने से कतराते हैं।

हम यह क्यों नहीं कहते कि "हर तूफान को झेलने का हौसला मिले"? या "तुम्हारा मन इतना मजबूत हो कि कोई आँधी उसे डिगा न सके"? इसलिए नहीं, क्योंकि इन शब्दों में वह मिठास नहीं जो "सदा सुखी रहो" में बसती है। हमें सुनहरे भ्रम की चाहत है। हम अपने शब्दों से एक काल्पनिक संसार बुनते हैं, जहाँ सब सुखद है। लेकिन यह आत्म-प्रवंचना से अधिक कुछ नहीं। सच तो यह है कि जीवन की राह कांटों से भरी है, और जो उन्हें अनदेखा करता है, वह वास्तविकता से मुँह फेरता है।

इससे बड़ी विडंबना क्या होगी कि हम अपने ही बुने भ्रमजाल में इतने उलझ गए कि सच को भूल बैठे। हम अपने बच्चों से कहते हैं—"हमेशा खुश रहो!" लेकिन यह नहीं बताते कि अगर कभी दुख आए, तो उसे कैसे झेलना है। हम उन्हें इतना कोमल बना देते हैं कि हल्की-सी ठेस भी उन्हें चूर कर देती है। यह "सदा सुखी रहो" की लत हमें कमजोर बना रही है। हम चुनौतियों से भागने के रास्ते खोजते हैं, यह मानकर कि सब कुछ ठीक हो जाएगा। लेकिन यह खुद को छलने का तरीका है।

यदि हमें सच्ची शुभकामना देनी है, तो हमें अपने शब्दों में बदलाव लाना होगा। हमें मिठास के साथ साहस का रंग घोलना होगा। हमें कहना चाहिए—"सुख-दुख दोनों आएँ, पर तुम अटल रहो!" या "हर कठिनाई तुम्हें और सशक्त बनाए, तुम्हारा विश्वास कभी न डगमगाए!" ये शुभकामनाएँ इसलिए सच्ची हैं, क्योंकि ये जीवन की हकीकत को स्वीकार करती हैं। किसी को यह कहना कि "तुम्हें कभी दुख न हो" उतना ही व्यर्थ है, जितना सूरज से कहना कि "तुम कभी डूबो मत।"

जीवन की धूप और छाँव को अपनाना ही सच्ची समझदारी है। जो यह जान लेता है कि सुख और दुख दोनों अनिवार्य हैं, वही जीवन को उसकी पूर्णता में जी सकता है। उसे सुख की अतृप्त तलाश में भटकना नहीं पड़ता, क्योंकि वह समझ जाता है कि सुख दुख की गोद में ही खिलता है। सुख और दुख एक ही ताने-बाने के धागे हैं—एक के बिना दूसरा अधूरा है। जो इस शाश्वत सत्य को आत्मसात कर लेता है, वही जीवन की असली समृद्धि को पा सकता है।

जब आप अगली बार किसी को आशीर्वाद देने के लिए अपने शब्दों का अमृत उठाएं, तो क्षण भर को ठिठक जाएं और गहराई से सोचें—क्या आप उसे मधुर मिथ्या की क्षणभंगुर माला पहनाना चाहते हैं, या जीवन के कठोर पर अनमोल सत्य का आलोक दिखाना चाहते हैं? सच्चा आशीर्वचन वह नहीं जो केवल होंठों पर मुस्कान बिखेरे, बल्कि वह है जो हृदय को हिम्मत और आत्मा को अडिगता से भर दे। वह जो उसे स्वप्नों के झूठे पर्दे में न बांधे, बल्कि साहस और विवेक की ज्योति से सजग रखे। क्योंकि जीवन का सर्वोच्च सौंदर्य उसकी निखालिस परिपूर्णता में समाया है—उसके सुख के सुनहरे पलों में, उसके दुख के सघन सायों में, और इन दोनों को गले लगाने की उस असीम सामर्थ्य में, जो मनुष्य को साधारण से असाधारण बनाती है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत"
बड़वानी (मप्र)

आसान नहीं है नेता बनना

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी 2025: "भैया! नेतृत्व करने वालों में किन गुणों का होना जरूरी है?"

"समय प्रबंधन में सक्षम होने का गुण, सहयोगियों की क्षमता को पहचानने का गुण, योजना बनाकर कार्य करने का गुण,रणनीति बनाकर काम करने का गुण होने चाहिए। इसी तरह अच्छे नेता में ये गुण होते हैं: आत्मविश्वास, सुनने का कौशल, ईमानदारी, लचीलापन, सहानुभूति, संवाद कौशल, निर्णायकता, दूरदर्शिता, समर्थन, समरसता, आत्म जागरूकता आदि गुण होने चाहिए।"

"भैया! मैं आपसे चाणक्य नीति के अनुसार या पुराणों में या ग्रंथों में नेतृत्व के जो गुण बताए गए हैं, उनके बारे में नहीं पूछा। आपने जो कहा सही है इतने सारे गुण होने पर ही नेता बन सकता है, लेकिन आज इस कलयुग में इक्कीसवीं सदी के चौबीस वर्षों की समाप्ति के बाद नेता में जो गुण होने चाहिए, उसके बारे में बताइए।"

"तुम ने तो मुझे दुविधा में डाल दिया? खैर! आज तुम्हीं बता दो कि वर्तमान में किन गुणों के होने से नेतृत्व की बागडोर या साथियों की लगाम दी जाती है। लेकिन पहले यह बता दो कि अचानक यह नेतृत्व की बात आई कैसे?"

"अखबार पढ़ना, टीवी पर समाचार देखना, व्हाट्सएप पर ज्ञानसंपदा दर्शन छोड़ दिए हैं क्या? सिर्फ पुस्तक पठन में रमे हैं या कविताएं लिखने में जमे हैं?"

"मतलब दिल्ली की नई सरकार और उसके नेतृत्व पर तुम्हारा रिसर्च चल रहा है? वह तो अब तय हो गया। शपथ ग्रहण भी हो गया! अब क्या बचा है?"

"नेतृत्व के जिन गुणों को अपने बताया है, उसके विपरीत ही सारे गुण नेतृत्व में होने चाहिए, यह सत्ता पार्टी ने सिद्ध कर दिया। दुश्मन को बहुत गंदी और कुसंस्कारी भाषा में जो गालियां देता है, विपक्ष में रहकर जो सबसे अधिक तोड़फोड़ करता है, मुंहफट होने की हद तक गालियों का स्तर गिराता हुआ बोलता है। ईमानदारी, समरसता, सहानुभूति और मानवीय गुणों का जिसमें अभाव होता है, वही नेता है जो सारी ईमानदारों की क्लास लेता है।"

"बड़े भैया का जीरोक्स जैसा नेतृत्व दिल्ली को मिल गया। वे कुंभ नहाए, अमरीका से खाली हाथ लौट आए, गालियां खाए लेकिन दिल्ली के नेतृत्व ने उन्हें इस खुन्नस से बचाया। मजा लगाया। है न!"

"इससे एक बात और हुई है कि उनके फेंके हुए महिला वंदन योजना को थोड़ा सकारात्मक बल भी मिला है। भले ही वह ठंडे बस्ते में हो।"

"जिसे दोस्त कहते थे वह दोस्त नहीं रहा। शायद एक तरफा प्यार की तरह इकतरफा दोस्ती थी। दोस्त दोस्त न रहा। यार यार न रहा। पता चला वह कभी दोस्त ही न था।"

"वहां भी तो सही नेतृत्व के गुणों की कमी से यह सब हुआ। खैर! उसके बारे में बाद में। चलिए दिल्ली के लड्डू खाते हैं।"

"जो खाए सो पछताय और जो न खाए वह भी पछताए।"

डॉ टी महादेव राव
विशाखापटनम (आंध्र प्रदेश)

क्या जघन्य अपराधियों की न सुनी जाये पैरोल की अर्ज़ी?

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी 2025: कैदियों की समय से पहले रिहाई से समाज को ख़तरा हो सकता है, खासकर तब जब वे बार-बार अपराध करते हों। हाल के वर्षों में, इस विचार में एक महत्त्वपूर्ण बदलाव आया है क्योंकि अमीर और शक्तिशाली वर्ग ने जेल में समय बिताने से बचने के लिए पैरोल का उपयोग करना शुरू कर दिया है। दूसरी ओर, लाखों अन्य कैदी, जिनके पैरोल के अनुरोधों को अनदेखा किया जाता है, उनके पास प्रक्रिया का लाभ उठाने के लिए संसाधनों की कमी होती है, या उन्हें कमजोर आधारों के आधार पर ग़लत तरीके से लाभ से वंचित किया जाता है क्योंकि वे गरीब और शक्तिहीन हैं।

पैरोल सुधार और पुनः एकीकरण पर आधारित है, लेकिन जब इसका उपयोग गंभीर अपराधों के लिए किया जाता है, तो यह नैतिक और कानूनी दुविधाएँ पैदा करता है। मानवाधिकारों और पुनर्वास के सिद्धांतों को ध्यान में रखा जाना चाहिए, भले ही न्याय दंड और रोकथाम की मांग करता हो। आपराधिक न्याय प्रणाली में एक महत्त्वपूर्ण क़दम पैरोल है। यह कैदियों को समाज में पुनः एकीकृत करने में सहायता करने के लिए दिया जाने वाला एक प्रकार का विचार है। यह कैदी की सामाजिक पुनर्प्राप्ति के लिए एक उपकरण से अधिक कुछ नहीं है। हालाँकि, हाल के वर्षों में, इस विचार में एक महत्त्वपूर्ण बदलाव आया है क्योंकि अमीर और शक्तिशाली वर्ग ने जेल में समय बिताने से बचने के लिए पैरोल का उपयोग करना शुरू कर दिया है। दूसरी ओर, लाखों अन्य कैदी, जिनके पैरोल के अनुरोधों को अनदेखा किया जाता है, उनके पास प्रक्रिया का लाभ उठाने के लिए संसाधनों की कमी होती है, या उन्हें कमजोर आधारों के आधार पर ग़लत तरीके से लाभ से वंचित किया जाता है क्योंकि वे गरीब और शक्तिहीन हैं। चूँकि हमारी जेलें अहिंसक अपराधियों से सचमुच भरी हुई हैं, इसलिए पैरोल से जेल में बंद लोगों को अपने प्रियजनों के साथ अपनी सजा के बचे हुए हिस्से को पूरा करने का मौका मिलता है, जबकि कानून प्रवर्तन एजेंसियों की उन पर कड़ी नज़र रहती है। यह हर दिन लाखों रुपयों की टैक्स बचत करता है और पूरे समाज के लिए एक बेहतरीन व्यवस्था है। बहुत कम बार आप किसी हिंसक अपराधी के बारे में सुनते हैं जो पैरोल पर रिहा हुआ और फिर एक और हिंसक अपराध करने लगा।

ज़्यादातर हिंसक अपराधी किसी भी मामले में अपनी सजा का कम से कम 85% हिस्सा पूरा करते हैं। लेकिन इसमें कोई दोराय नहीं है कि पैरोल से पीड़ितों और उनके परिवारों की न्याय की भावना कमज़ोर हो सकती है। आतंकवाद, बलात्कार और हत्या जैसे जघन्य अपराधों के खिलाफ़ मज़बूत रोकथाम होनी चाहिए। रोकथाम बनाए रखने के लिए, 2012 के निर्भया मामले के दोषियों को पैरोल नहीं दी गई। कैदियों की समय से पहले रिहाई से समाज को ख़तरा हो सकता है, खासकर तब जब वे बार-बार अपराध करते हों। बार-बार अपराध करने के कारण, 2013 के शक्ति मिल्स सामूहिक बलात्कार मामले के दोषियों को पैरोल नहीं दी गई। राजनीतिक प्रभाव से न्याय में विश्वास को नुक़सान हो सकता है जिसके परिणामस्वरूप पैरोल की मंजूरी मिलती है जो वारंटेड नहीं होती है। टी. पी. चंद्रशेखरन हत्या मामले में पैरोल कथित तौर पर राजनीतिक दबाव के कारण दी गई थी। इन अपराधों में शामिल क्रूरता और पूर्व-योजना के कारण, सुधार चुनौतीपूर्ण है। 2018 के कठुआ बलात्कार मामले ने स्पष्ट कर दिया कि दया से रहित कठोर दंड की आवश्यकता है। भारतीय न्यायालयों के अनुसार, संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत पैरोल पर रिहा किए गए लोगों को संतानोत्पत्ति और विवाह के अपने अधिकारों का प्रयोग करने की अनुमति है। हालाँकि, चूँकि विवाह के अधिकार को कानून द्वारा मान्यता नहीं दी गई है, इसलिए इस आधार पर पैरोल देने से समलैंगिक कैदियों के समानता के अधिकार से समझौता होता है।

सभी कैदियों के लिए समानता और समावेशिता की गारंटी देने के लिए, न्यायालय अनुच्छेद 21 के तहत अंतरंगता के अधिक सामान्य अधिकार से पैरोल को जोड़ सकते हैं। नेल्सन मंडेला नियम (2015), कैदियों के उपचार के लिए संयुक्त राष्ट्र मानक न्यूनतम नियम, का एक प्रमुख घटक सुधार है। पैरोल एक अधिकार है, न कि विशेषाधिकार, जैसा कि न्यायमूर्ति कृष्ण अय्यर ने कई फैसलों में ज़ोर दिया है। सामान्य प्रतिबंध होने के बजाय, व्यवहार मूल्यांकन के आधार पर पैरोल दी जानी चाहिए। आजीवन कारावास की सजा काट रहे कैदियों के पुनर्वास के परिणामस्वरूप 2023 में महाराष्ट्र में पुनरावृत्ति में कमी आई। पैरोल अनुरोधों का मूल्यांकन न्यायालयों द्वारा पहले से ही योग्यता के आधार पर किया जाता है, जिससे सुरक्षा और न्याय की गारंटी मिलती है। हरियाणा राज्य बनाम जय सिंह (2003) में, सर्वोच्च न्यायालय ने पुष्टि की कि पैरोल निष्पक्ष मानकों के अनुसार दी जानी चाहिए। अनुच्छेद 21 (सम्मान के साथ जीवन जीने का अधिकार) का उल्लंघन पैरोल की संभावना के बिना जेल में आजीवन कारावास द्वारा किया जा सकता है, यदि सुधार प्रदर्शित किया जाता है। श्रीहरन (2015) के अनुसार, किसी को पैरोल से पूरी तरह से वंचित करना असंवैधानिक है। नॉर्वे जैसे देशों में धीरे-धीरे पुनः एकीकरण पर ज़ोर देकर, यहाँ तक कि जघन्य अपराधों के लिए दोषी ठहराए गए लोगों के लिए भी पुनः अपराध दर कम हो गई है। पुनर्वास न्याय के अपने मॉडल की बदौलत नॉर्वे में दुनिया में पुनरावृत्ति की सबसे कम दरें हैं।

जैसा कि आमतौर पर जाना जाता है, मज़बूत प्रशासनिक और राजनीतिक दबाव से पैरोल प्रशासन की प्रभावशीलता बाधित हुई है। कार्यक्रम के लक्ष्य से नियमित रूप से समझौता किया जाता है और कई अनुचित अपराधियों को प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में पैरोल दी जाती है। पैरोल के सम्बंध में, एक अच्छी तरह से परिभाषित न्यायिक नीति आवश्यक है और किए गए कार्यकारी कर्तव्यों की अदालतों द्वारा समीक्षा की जानी चाहिए। हमारे कानून निर्माताओं के लिए हमारी आपराधिक न्याय प्रणाली में सुधार के लिए आवश्यक बदलाव करने का समय आ गया है। इन बदलावों में कैदियों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए प्रगतिशील तरीके से पर्यवेक्षित रिहाई प्रणाली को लागू करने के लिए मज़बूत दिशा-निर्देश बनाना, लगातार पैरोल कानून बनाकर यह साबित करना कि यह पुनर्वास के लिए एक प्रभावी उपकरण है और भारत में पैरोल के दुरुपयोग को रोकने के लिए जाँच और संतुलन स्थापित करना शामिल होना चाहिए। सरकार को जेलों में भीड़भाड़ के बारे में चिंतित होना चाहिए और उन्हें तुरंत इस पर ग़ौर करना चाहिए। भयानक अपराधों के लिए पैरोल को सीमित करते समय न्याय, निवारण और पुनर्वास सभी पर विचार किया जाना चाहिए। सख्त न्यायिक निगरानी के साथ पारदर्शी, योग्यता-आधारित दृष्टिकोण का उपयोग करके व्यापक प्रतिबंधों के बिना सार्वजनिक सुरक्षा और नैतिक निष्पक्षता की गारंटी दी जा सकती है। पैरोल एक ऐसी चीज है जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती, जैसा कि स्पष्ट है।

डॉ सत्यवान सौरभ

महाराष्ट्र में देवेंद्र फडणवीस और एकनाथ शिंदे के बीच कोल्ड वॉर- एकनाथ शिंदे के इशारे का क्या है मतलब?

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी 2025: महाराष्ट्र की महायुति सरकार में सबकुछ ठीक नहीं चल रहा। इसके संकेत उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के हालिया बयानों से मिलते हैं। सूत्रों की मानें तो शिंदे और मुख्यमंत्री फडणवीस के बीच कोल्ड वॉर की स्थिति है। इस बीच शुक्रवार को एकनाथ शिंदे ने एक बार फिर दो दिन पहले दिया अपना 'टांगा पलटने' वाला बयान दोहराया। नागपुर में पत्रकारों ने शिंदे से जब उनके इस बयान के बारे में सवाल किया, तो उन्होंने कहा, 'ये तो मैंने पहले ही कहा है, जिन्होंने मुझे हल्के में लिया है। मैं एक कार्यकर्ता हूं, सामान्य कार्यकर्ता हूं। लेकिन बाला साहेब और दिघे साहेब का कार्यकर्ता हूं। ये समझ के मुझे सबने लेना चाहिए और इसलिए जब हल्के में लिया तो 2022 में टांगा पलटी कर दिया। सरकार को बदल दिया और हम आम जनता की इच्छाओं की सरकार लाए। इसलिए मुझे हल्के में मत लेना, ये इशारा जिन्हें समझना है वे समझ लें।'

गौरतलब है कि महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस और उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के बीच मतभेदों की अटकलों के बीच, ₹900 करोड़ की एक और परियोजना, जिसे शिंदे के सीएम कार्यकाल के दौरान मंजूरी दी गई थी, वो अब रोक दी गई है। शिंदे द्वारा अनुमोदित जालना जिले की यह परियोजना अब मुख्यमंत्री कार्यालय के आदेश के अनुसार सिडको के प्रबंध निदेशक द्वारा जांच की जा रही है। इस घटनाक्रम से शिवसेना और बीजेपी के बीच टकराव की स्थिति पैदा हो सकती है, जिससे सीएम फडणवीस और डिप्टी सीएम शिंदे के बीच तनाव बढ़ सकता है।

जालना खारपुडी परियोजना की जांच ने इसकी वैधता और शिंदे की मंजूरी के पीछे के इरादों पर सवाल उठाए हैं। उद्धव ठाकरे गुट के पूर्व विधायक संतोष सांबारे ने भी इस मामले में सीएम फडणवीस से कार्रवाई की मांग की है। शिवसेना यूबीटी के नेता और महाराष्ट्र विधान परिषद में विपक्ष के नेता अंबादास दानवे ने भी सीएम देवेंद्र फडणवीस को पत्र लिखकर परियोजना में अनियमितताओं को उजागर करते हुए हाई पावर कमेटी से जांच कराने और राज्य सरकार को गुमराह कर सरकारी खजाने को सैकड़ों करोड़ रुपये का नुकसान करने वाले अधिकारियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की है। इस घटनाक्रम ने जालना खारपुडी परियोजना के भाग्य और महायुति सरकार में समन्वय पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे 3 सरकारी कार्यक्रमों में शामिल नहीं हुए। उनके इस कदम से राज्य में उन चर्चाओं को बल मिला है कि सत्तारूढ़ गठबंधन में सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है। हालांकि वो गुरुवार को दिल्ली में नई सरकार के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल हुए थे। वहां पीएम नरेंद्र मोदी उनसे बातचीत करते हुए भी नजर आए थे। लेकिन राज्य के सरकारी कार्यक्रमों में न शामिल होने से लग रहा है कि सरकार चला रही महायुति में तनातनी चल रही है। पिछले साल नवंबर में हुए विधानसभा चुनाव के बाद राज्य में महायुति की सरकार चल रही है।

उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे थाणे जिले के बदलापुर में आयोजित छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा के अनावरण पर आयोजित कार्यक्रम में भी शामिल नहीं हुए। थाणे उनका गृह जिला है। वो इसी जिले से चुनकर आए हैं। शिंदे ऐतिहासिक आगरा किले में छत्रपति शिवाजी महाराज की जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में भी शामिल नहीं हुए। वो अंबेगांव बुद्रक में आयोजित शिवसृष्टी पार्क के दूसरे चरण के उद्घाटन समारोह में भी नहीं शामिल हुए थे।

बताया जाता है कि उनका हालिया बयान मौत की धमकियों के जवाब में दिया गया था, जिसमें उनकी कार में बम होने की चेतावनी दी गई थी। शिंदे ने खुद को निडर बताया और कहा कि उन्हें पहले भी धमकियां मिली थीं। लेकिन वे डरे नहीं हैं। लेकिन इनके इस बयान के कई सियासी मायने निकाले जा रहे हैं।

ध्यान देने योग्य यह है कि महाराष्ट्र में सरकार चला रही महायुति में बीजेपी, शिवसेना और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी शामिल हैं। इस गठबंधन ने 288 सदस्यों वाली विधानसभा के चुनाव में 230 सीटों पर जीत दर्ज की थी। शिंदे ने 2022 में उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना में बगावत कर बीजेपी से हाथ मिला लिया था। इससे शिवसेना दो हिस्सों में टूट गई थी। चुनाव आयोग और अदालत के फैसलों से शिंदे के नेतृत्व वाले गुट को शिवसेना नाम और पार्टी का चुनाव चिन्ह मिल गया था। महायुति के चुनाव जीतने के बाद बनी सरकार में शिंदे को मुख्यमंत्री का पद नहीं मिला। इससे शिवसेना कैडर का असंतोष खुलकर सामने आ गया था। बाद में उन्हें राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण में समायोजित किया गया। महायुती में यह मतभेद उस समय और बढ़ गया जब कुछ विधायकों से 'वाई' श्रेणी की सुरक्षा कम कर दी गई। शिवसेना में विभाजन के बाद एकनाथ शिंदे का समर्थन करने वाले विधायकों को प्रदान की गई Y+ श्रेणी की सुरक्षा वापस लेने के गृह विभाग के फैसले ने सत्तारूढ़ महागठबंधन में गृह युद्ध पैदा कर दिया है। हालांकि यह निर्णय सही है, लेकिन यह उन लोगों के लिए मुश्किल होगा जो पुलिस काफिले के साथ गांव-गांव कार उड़ाने के आदी हैं और लोगों से 'सुरक्षा क्या है' सुनते हैं। ऐसा लगता है। हालांकि गृह विभाग ने खुलासा किया है कि न केवल शिवसेना, बल्कि भाजपा और एनसीपी के विधायक भी कम हो गए हैं, लेकिन इससे विधायकों की नाराजगी और बढ़ गई है, जो विभिन्न कारणों से रोने लगे हैं।

आश्चर्य होगा अगर इन विधायकों में यह भावना न हो कि उन्होंने सत्ता में आने तक इसे फूल की तरह रखा और अब चुनाव के बाद चट्टान की तरह दरकिनार कर दिया गया। जब एकनाथ शिंदे ने शिवसेना छोड़ी और सरकार में शामिल हुए, तो उनके समर्थक विधायकों को 'वाई+' सुरक्षा दी गई, जिसमें पुलिस की कारों और घरों के बाहर पुलिस सुरक्षा भी शामिल थी। अब घरों के बाहर आगे की कारों और पुलिस को कम किया जाएगा और प्रत्येक को एक ही गार्ड दिया जाएगा।

ज्ञात हो कि 1990 के दशक में, जब मुंबई में विधायकों और जन प्रतिनिधियों की हत्या और हमला किया गया था, तो सभी विधायकों को बंदूक चलाने वाले पुलिसकर्मियों की सुरक्षा प्रदान की गई थी। इस व्यापक निर्णय ने उन लोगों को भी सुरक्षा प्रदान की जिनके पास सुरक्षा के लिए कोई खतरा या खतरा नहीं था। इस व्यापक निर्णय के कारण कुछ लोगों ने उन अंगरक्षकों को खो दिया, जिनके साथ वे थे, जिनमें से कुछ में अंगरक्षकों के ड्राइविंग और विधायकों के अपनी बंदूकों के साथ पीछे बैठे मजाकिया दृश्य थे। आपको याद होगा। जब ये अनुभव अधर में थे तो सभी की कीमत पर पुलिस को शामिल करना अव्यावहारिक था। राज्य में अपराधों की संख्या बढ़ रही है, सामाजिक अशांति अक्सर भड़क रही है, पुलिस जांच और कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए अपर्याप्त है। पुलिस बल मुख्य कार्य की उपेक्षा करके वीआईपी सुरक्षा में लगा हुआ है।

कुछ समय पहले पुणे में एक मंत्री के कहने पर 48 पुलिसकर्मियों का काफिला हुआ था, जिनमें से कुछ के खिलाफ गंभीर आपराधिक मामले दर्ज हैं। इन जनप्रतिनिधियों के अलावा कई कार्यकर्ता और बड़े लोग भी 'मुझे धमकी दी जा रही है' की शिकायत कर पुलिस सुरक्षा लेते हैं। घटना भी ताजा है। इन सभी लोगों को जागरूक करने की जरूरत है कि पुलिस जनप्रतिनिधियों का घर नहीं है, चाहे वह राजनीतिक हो या प्रशासनिक; अगर फडणवीस ने किसी वजह से यह कदम उठाया है तो इसका स्वागत किया जाना चाहिए था। अगर ये विधायक भी बिना नाराज हुए पुलिस की तह से बाहर निकलकर आम जनता से घुलमिल जाएं तो ये नागरिकों की सही भावनाओं को भी समझेंगे।

पिछले कुछ दिनों में मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने विभिन्न विभागों पर कटाक्ष किया है और संदिग्ध और विवादास्पद फैसलों का मुद्दा उठाया है। दूसरी ओर, शिंदे ने मंत्रालय में ही एक समानांतर 'वार रूम' स्थापित किया; उन्होंने मुख्यमंत्री की कुछ बैठकों को छोड़कर यह भी दिखाने की कोशिश की कि वह ज्यादा पीछे नहीं हैं। फडणवीस ने यह दिखाने का एक भी मौका नहीं छोड़ा कि सरकार बनने के बाद उनका अपना फैसला अंतिम होगा। हालांकि शिंदे ने विधायकों की सुरक्षा व्यवस्था पर चर्चा करने का वादा किया था, लेकिन सरकार के सुर में फैसला बदलने की संभावना नहीं है।उधर, संकेत मिल रहे हैं कि विधायकों की नाराजगी का मुकाबला करने के लिए शिंदे को कड़ी मशक्कत करनी होगी।

हालांकि फडणवीस और शिंदे दोनों ने अपने बीच किसी भी तरह के मतभेद से इनकार किया है और सब कुछ ठीक है के संदेश के साथ एकता की तस्वीर पेश करने की कोशिश की है, लेकिन कई उदाहरण ऐसे हैं, जो अलग तस्वीर पेश करते हैं। रायगढ़ और नासिक जिलों के संरक्षक मंत्रियों की नियुक्ति में भी यह दरार बढ़ती देखी गई। राकांपा विधायक अदिति तटकरे और भाजपा नेता गिरीश महाजन की क्रमशः रायगढ़ और नासिक के संरक्षक मंत्री के रूप में नियुक्ति से शिवसेना नाराज थी। हालांकि, मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने इन दोनों नियुक्तियों को रोक दिया और अब तक इन दोनों जिलों में संरक्षक मंत्री नहीं नियुक्ति हो सके हैं। अब देखने वाली बात यह होगी कि इशारों वाला उंट किस करवट बैठता है।

अशोक भाटिया
मुंबई (महाराष्ट्र)

अश्लीलता फैलाने वाले कलाकारों पर लगे बैन, ग़लत दृश्य दिखाना, अश्लील नाटकों-गीतों का मंचन समाज से खिलवाड़

लोककला के नाम पर अश्लीलता का तड़का

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी 2025: एक ओर जहाँ कई लोग संस्कृति को प्रमोट करने के लिए अपना करियर, अपनी मेहनत और अपना सब कुछ दांव पर लगा रहे हैं तो कोई हमारी संस्कृति को इस तरह से बदनाम कर उसे अश्लील गानों के साथ परोस रहे हैं। अब आप ही सोचिए की अगर हमें ऐसी अश्लीलता ही दिखानी है या देखनी है तो आने वाले समय पर हम संस्कृति के नाम पर क्या करेंगे और क्या-क्या होगा? कला का सहारा लेकर कुछ लोग कम समय में चर्चित होना चाहते हैं। मशहूर होना है तो अपने हुनर से हों। चर्चा में रहने के लिए कला और अपनी संस्कृति से खिलवाड़ करना एकदम ग़लत है। ऐसे कलाकारों को सजा होनी चाहिए। अश्लीलता फैलाने के लिए कुछ लोग कला की आड़ ले रहे हैं। अश्लील नाटक, गीतों का मंचन करने वाले कलाकार ही नहीं बल्कि वे आयोजक और संयोजक भी दोषी है, जो ऐसी प्रस्तुतियों को बढ़ावा देते हैं। इन गीतों का श्रवण विशेषकर युवा वर्ग आनंदपूर्वक करता है। कई अवसरों पर शादी-व्याह आदि उत्सवों में कुछ बुज़ुर्ग जन भी इस तरह के गीतों पर जमकर ठुमके लगाते हैं। सांस्कृतिक परम्परा पर चिंतन करने वाले लोग इसे लोक संगीत पर गहरी ठेस मानते हैं। आशिकी अंदाज़ के साथ पाश्चात्य संस्कृति की चपेट में आकर गीत गाने वाले गायक-गायिकाएँ, नायक-नायिकायें धीरे'-धीरे सांस्कृतिक पहरूओं की नज़र का कांटा बनते जा रहे हैं। ऐसा मालूम पड़ता है यदि इन्हीं गीतों का दौर अश्लीलता की पराकाष्ठा लांगता रहा तो इस तरह के लोगों का सामाजिक बहिष्कार ज़रूरी हो सकता है।

वर्तमान परिदृश्य में लोककला के नाम पर अश्लीलता परोसी जा रहा है, जो कि चिंतनीय व शर्मनाक है। यह न केवल इन परंपरागत शैलियों को धूमिल कर रहा है बल्कि ' विदेशी / वेस्टर्न के चक्कर में हम अपनी पहचान से दूर होते जा रहे हैं। सोशल मीडिया या यूट्यूब, फ़िल्म हो या टीवी के कार्यक्रम सभी जगह फूहड़ नाच का नंगा प्रदर्शन किए जाने की परंपरा ने ज़ोर पकड़ लिया है। यूट्यूब और सोशल मीडिया पर रिल्स, गानों, फ़िल्मों, कार्यक्रमों सबमें अश्लीलता इस क़दर घर करती जा रही है कि आप अपने परिवार के साथ देख ही नहीं सकते और रही सही कसर अब नंगे होकर रील बनाने वालों ने पूरी कर दी है। अधिकतर गाने, एलबम और सिनेमा अश्लीलता से भरपूर है। आज के लोकगीत सुनने की ही बात कर लें तो उन गानों के हर शब्द में अश्लीलता कूट-कूट कर भरा होता है। जब हम-आप परिवार के साथ मिलकर गाना नहीं सुन सकते तो यह सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है कि इन गानों के सीनों का क्या हाल होगा। ऊपर से अश्लीलता का कम्पीटिशन इस क़दर होता जा रहा है कि एक से एक हिट एलबम, गाने बनते हैं। अश्लीलता को दिखाने का होड़ इस क़दर है कि मत पूछिए। इस बारे में कलाकारों, गायकों से पूछ लिया जाता है तो छूटते ही कहते हैं कि यह तो पब्लिक डिमांड है। जनता यही सब देखना पसंद करती है। ऐसा न परोसें तो गाना हिट ही नहीं होगा। अब ऐसे कलाकारों को कौन समझाए कि अश्लीलता की शुरुआत तो फ़िल्मों व गानों के जरिए ही हमारे समाज में फैली। जिसे रोकने का कोई सकारात्मक क़दम नहीं उठाया गया। ऐसे मजनू कलाकारों के चक्कर में हमारा पूरा समाज दूषित होता जा रहा है। मान-मर्यादा सब छिन्न-भिन्न होता जा रहा है।

यदि आज भी हम नहीं सचेते तो न जाने हमारे समाज की दशा और दिशा क्या होगी। ऐसा नहीं है कि ऐसे नृत्यों का असर नहीं हो रहा है। पिछले 5-10 सालों में जिस प्रकार का नृत्य व गाने प्रस्तुत किए है, उसने तो हमारे समाज के ताना-बाना को ही हिलाकर रख दिया है। ये मन को शांत करने के बजाय अशांत ही कर देता है। बाज़ार की लालची और मुनाफाखोर प्रवृत्ति ने एक लोककला की हत्या कर दी और अब उसके नाम पर लोगों को अश्लीलता परोस रही है। इन्टरनेट ने बेशक लोगों तक ज़्यादा सूचनाएँ पहुँचाई है लेकिन इसने ग्रामीण सौंदर्यबोध और मान-मर्यादा को खंडित कर दिया। वह हर चीज को अधिक बिकाऊ बनाने के लिए अश्लीलता की सारी हदें पार कर दी। कुल मिलाकर यह आसानी से देखा जा सकता है कि इन्टरनेट के विस्तार और मोनेटाइजेशन ने ऐसी सामग्री को बढ़ावा दिया है जो बहुत ज़्यादा देखी जा रही है लेकिन मानवीय संवेदनाओं पर उसने घातक प्रहार किया है। संगीत की शालीनता पर फूहड़पन भारी वातावरण को प्रदूषित कर रहे हैं आशिकमिजाज गीतकार जिससे देशभर में लम्पटीकरण भरे गीतों के प्रचलन से संस्कृति को गहरी चोट पहुँची है। आधुनिकता की चकाचौंध में हमारी संस्कृति व विरासत से जुड़े गीत न जाने कहाँ गुम से हो गये हैं और प्रचलन बढ़ा उन मद भरे गीतों का, जिनमें से संस्कृति व सौन्दर्य गायब होकर उपहासित हो गयी है। लम्पटीकरण के शब्द गीतों में भर आये हैं। वर्तमान में तथाकथित रचनाकारों द्वारा रचित गीतकारों, मजनू गायकों द्वारा गाये हुए गीतों में पाश्चात्य संस्कृति की तर्ज पर नंगापन आ गया है। इन अलफाजों में गीत गाने वाले गायकों को इतनी भी शर्म नहीं है कि जिस अंदाज़ में वे अपने शब्दों को व्यक्त कर रहे हैं व अंदाज़ 'जिस डाल पर बैठे हैं उसी को काटने' जैसा है।

यही अंदाज़ संस्कृति पर गहरी चोट मार रहा है। लोक गायकों के नाम पर अश्लील लिंक्स से सोशल मीडिया बाज़ार भरा पड़ा है। कई चैनलों पर भी इस तरह के गीतो का प्रचलन बहुत तेजी से बढ़ा है। गीत बिकवाने की होड़, व्यूज और लाइक्स के जरिए पैसा कमाने की लालसा, इन सबने पहले ही संस्कृति व विरासत धूमिल कर डाली है क्योंकि गीत संगीत ही एक ऐसा माध्यम होता है जो समाज को संदेशो का पैगाम देती है। आज ये पैगाम अपनी दिशा बदल चुके हैं। विभिन्न बस स्टेशनों, चलने वाले विभिन्न जीप-कार, बसों में जो गीत सुनने को मिलते हैं उनमें छिछोरापन व लम्पटीकरण का अंदाज़ साफ़ झलकता है। इन गीतों का श्रवण विशेषकर युवा वर्ग आनंदपूर्वक करता है। कई अवसरों पर शादी-व्याह आदि उत्सवों में कुछ बुज़ुर्ग जन भी इस तरह के गीतों पर जमकर ठुमके लगाते हैं। सांस्कृतिक परम्परा पर चिंतन करने वाले लोग इसे लोक संगीत पर गहरी ठेस मानते हैं। आशिकी अंदाज़ के साथ पाश्चात्य संस्कृति की चपेट में आकर गीत गाने वाले गायक-गायिकाएँ, नायक-नायिकायें धीरे'-धीरे सांस्कृतिक पहरूओं की नज़र का कांटा बनते जा रहे हैं। ऐसा मालूम पड़ता है यदि इन्हीं गीतों का दौर अश्लीलता की पराकाष्ठा लांगता रहा तो इस तरह के लोगों का सामाजिक बहिष्कार ज़रूरी हो सकता है। आज के गानों में बंदूक, दारू, लड़कीबाजी व अश्लीलता का आयाम देखने को मिल रहा है जो कि हमारी संस्कृति के लिए और गानों के लिए बहुत ज़्यादा हानिकारक है। अब गीत के कलाकार, गायक, निर्माता ऐसा क्यों कर रहे हैं ये तो बड़ा सवाल है?

या फिर हो सकता है कि दर्शकों को लुभाने या फिर गाने के नाम पर अश्लीलता परोसा कर सस्ती लोकप्रियता हासिल करने के लिए ये सब किया जा रहा हो लेकिन बदनाम संस्कृति व लोककला से जुड़े लोग भी हो रहे हैं। एक ओर जहाँ कई लोग संस्कृति को प्रमोट करने के लिए अपना करियर, अपनी मेहनत और अपना सब कुछ दांव पर लगा रहे हैं तो कोई हमारी संस्कृति को इस तरह से बदनाम कर उसे अश्लील गानों के साथ परोस रहे हैं। अब आप ही सोचिए की अगर हमें ऐसी अश्लीलता ही दिखानी है या देखनी है तो आने वाले समय पर हम संस्कृति के नाम पर क्या करेंगे और क्या-क्या होगा? कला का सहारा लेकर कुछ लोग कम समय में चर्चित होना चाहते हैं। मशहूर होना है तो अपने हुनर से हों। चर्चा में रहने के लिए कला और अपनी संस्कृति से खिलवाड़ करना एकदम ग़लत है। ऐसे कलाकारों को सजा होनी चाहिए। अश्लीलता फैलाने के लिए कुछ लोग कला की आड़ ले रहे हैं। अश्लील नाटक, गीतों का मंचन करने वाले कलाकार ही नहीं बल्कि वे आयोजक और संयोजक भी दोषी है, जो ऐसी प्रस्तुतियों को बढ़ावा देते हैं।

प्रियंका सौरभ

शिक्षा में महत्वपूर्ण बदलाव है महिला अध्यापिकाओं की बढ़ती संख्या

महिलाओं द्वारा संचालित कक्षाओं में समावेशी भागीदारी 20% अधिक होती है। सामाजिक बाधाओं और सुरक्षा संबंधी चिंताओं को दूर करके, महिला शिक्षकों की उपस्थिति लड़कियों के शैक्षिक अवसरों को बढ़ाती है। महिला शिक्षकों की संख्या में वृद्धि के कारण बिहार की कन्या उत्थान योजना में महिलाओं के नामांकन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। लिंग भूमिकाओं, बाल विवाह और मासिक धर्म स्वच्छता के बारे में बातचीत को सामान्य बनाकर, महिला शिक्षक समानता को बढ़ावा देती हैं। उड़ान योजना के अंतर्गत किशोरियों को महिला शिक्षकों द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। महिला शिक्षकों द्वारा भावनात्मक समर्थन देने की संभावना अधिक होती है, जिससे विद्यार्थियों का कल्याण बेहतर होता है। अकादमिक महिलाओं को प्रायः मार्गदर्शन और मजबूत व्यावसायिक नेटवर्क का अभाव होता है, जो शोध के अवसरों और कैरियर में उन्नति के लिए आवश्यक है। कई महिलाएं घर के कामकाज की दोहरी जिम्मेदारी के कारण अपने करियर से ब्रेक ले लेती हैं, जिससे उनके करियर में आगे बढ़ने और गुणवत्तापूर्ण शोध करने की क्षमता में बाधा आती है। नीति आयोग के अनुसार, भारत में महिला सदस्य बच्चे को जन्म देने के बाद लम्बे समय तक अपने करियर से ब्रेक ले लेती हैं, जिससे उनके स्थायी आधार पर नियुक्त होने की संभावना कम हो जाती है।

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी 2025: यूडीआईएसई+ 2023-24 रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय स्कूल शिक्षकों में अब 53.34 प्रतिशत महिलाएं हैं, जो शिक्षा में उनकी बढ़ती भूमिका को दर्शाता है। उच्च शिक्षा में केवल 43% संकाय महिलाएं हैं, नेतृत्व की भूमिकाओं में उनका प्रतिनिधित्व और भी कम है। शैक्षणिक जगत में लैंगिक समानता अभी भी जड़ जमाये पूर्वाग्रहों, व्यावसायिक बाधाओं और संस्थागत कठिनाइयों के कारण बाधित है। भारत के शिक्षण कार्यबल में महिलाओं के प्रतिशत में वृद्धि शिक्षा की गुणवत्ता, समावेशिता और सामाजिक समानता में आमूलचूल परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करती है। शिक्षणशास्त्र में लैंगिक पूर्वाग्रहों को चुनौती दी जाती है, समावेशी शिक्षा को बढ़ावा दिया जाता है, तथा महिला शिक्षकों द्वारा महिला विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि की जाती है। छात्रों की व्यापक सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए, महिला शिक्षक कक्षा में अधिकाधिक भागीदारी और लिंग-संवेदनशील शिक्षण को प्रोत्साहित करती हैं। यूनेस्को की 2022 की रिपोर्ट के अनुसार, महिलाओं द्वारा संचालित कक्षाओं में समावेशी भागीदारी 20% अधिक होती है। सामाजिक बाधाओं और सुरक्षा संबंधी चिंताओं को दूर करके, महिला शिक्षकों की उपस्थिति लड़कियों के शैक्षिक अवसरों को बढ़ाती है। महिला शिक्षकों की संख्या में वृद्धि के कारण बिहार की कन्या उत्थान योजना में महिलाओं के नामांकन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। लिंग भूमिकाओं, बाल विवाह और मासिक धर्म स्वच्छता के बारे में बातचीत को सामान्य बनाकर, महिला शिक्षक समानता को बढ़ावा देती हैं। उड़ान योजना के अंतर्गत किशोरियों को महिला शिक्षकों द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। महिला शिक्षकों द्वारा भावनात्मक समर्थन देने की संभावना अधिक होती है, जिससे विद्यार्थियों का कल्याण बेहतर होता है।

उच्च शिक्षा संकाय पदों में महत्वपूर्ण लैंगिक असमानताएं महिला संकाय सदस्यों के कम प्रतिनिधित्व के कारण होती हैं। उच्च शिक्षा पर अखिल भारतीय सर्वेक्षण के अनुसार, शिक्षण पदों पर पुरुषों की संख्या अधिक होने के बावजूद, उच्च शिक्षा संकाय में महिलाओं की हिस्सेदारी केवल 43% है। आईआईटी और एनआईटी में महिला संकाय का प्रतिनिधित्व अभी भी 20% से कम है, जो प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में लैंगिक असमानताओं को दर्शाता है। अकादमिक नेतृत्व में महिलाओं की भूमिका एसोसिएट प्रोफेसर और प्रोफेसर स्तर तक सीमित है, जहां उनका प्रतिशत तेजी से गिरता है। सार्वजनिक विश्वविद्यालयों में 25% से भी कम पूर्ण प्रोफेसर महिलाएं हैं, जो निर्णयों को प्रभावित करने की उनकी क्षमता को सीमित करता है। भारत के शीर्ष 50 विश्वविद्यालयों में 10% से भी कम कुलपति महिलाएं हैं। सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाओं के कारण, केरल और तमिलनाडु जैसे दक्षिणी राज्यों में महिलाओं की भागीदारी अधिक है, जबकि ग्रामीण और उत्तर भारतीय विश्वविद्यालयों में यह कम है। केरल के सार्वजनिक विश्वविद्यालयों में आधे से अधिक प्राध्यापक महिलाएं हैं, जबकि बिहार और राजस्थान में यह प्रतिशत 30% से भी कम है। नियुक्ति और पदोन्नति में अचेतन पूर्वाग्रहों के कारण महिलाओं के नेतृत्वकारी भूमिकाएं निभाने की संभावना कम होती है। अकादमिक महिलाओं को प्रायः मार्गदर्शन और मजबूत व्यावसायिक नेटवर्क का अभाव होता है, जो शोध के अवसरों और कैरियर में उन्नति के लिए आवश्यक है। कई महिलाएं घर के कामकाज की दोहरी जिम्मेदारी के कारण अपने करियर में ब्रेक ले लेती हैं, जिसका असर उनकी उन्नति और शोध कार्य की संभावनाओं पर पड़ता है।

समान कैरियर उन्नति के अवसर सुनिश्चित करना, लिंग कोटा स्थापित करना, चयन समितियों की निष्पक्षता सुनिश्चित करना तथा स्पष्ट पदोन्नति मानकों को लागू करना, शैक्षणिक नियुक्ति समितियों में 40 प्रतिशत महिला प्रतिनिधित्व की अनिवार्यता के द्वारा, जर्मनी का डीएफजी कार्यक्रम अधिक महिलाओं को उच्च शिक्षा में नामांकन के लिए प्रोत्साहित करता है। शिक्षाविदों में महिलाओं की मेंटरशिप और नेटवर्किंग अवसरों तक पहुंच बढ़ाना: महिला संकाय सदस्यों को वरिष्ठ शिक्षाविदों के साथ जोड़ने के लिए औपचारिक मेंटरशिप कार्यक्रम स्थापित करना, वित्तपोषण के अवसरों, अनुसंधान और नेतृत्व विकास पर सलाह देना। केंद्रित मार्गदर्शन और समर्थन नेटवर्क के मूल्य के प्रमाण के रूप में, अमेरिका का "विज्ञान और इंजीनियरिंग में महिलाएं" कार्यक्रम नेतृत्व भूमिकाओं में महिलाओं की संख्या बढ़ाने में सहायक रहा है। कार्य-जीवन संतुलन को बढ़ावा देना, परिसर में बाल देखभाल सेवाएं प्रदान करना, सवेतन मातृत्व अवकाश बढ़ाना, तथा लचीले कार्यकाल पथ को लागू करना, महिला संकाय सदस्यों को मातृत्व के बाद एक वर्ष का कार्यकाल विस्तार प्रदान करके उनके शोध करियर को जारी रखने में मदद करता है। महिलाओं की प्रशासनिक और शैक्षणिक दृश्यता में सुधार लाने के लिए विशिष्ट वित्तपोषण उपलब्ध कराना तथा उनके लिए नेतृत्व विकास पाठ्यक्रम चलाना, भारत की "महिला वैज्ञानिक योजना" महिला शोधकर्ताओं को करियर ब्रेक के बाद वित्त पोषण प्रदान करके शिक्षा जगत में वापस लौटने में मदद करती है। उच्च शिक्षा संकाय में महिलाओं की हिस्सेदारी केवल 43% है, जो कक्षा के बाहर उनके प्रभाव को सीमित करता है। आईआईटी और आईआईएम में महिला शिक्षकों का प्रतिशत 20% से भी कम है।

यूजीसी का जेंडर एडवांसमेंट फॉर ट्रांसफॉर्मिंग इंस्टीट्यूशंस (जीएटीआई) कार्यक्रम महिला संकाय सदस्यों को नेतृत्वकारी पदों पर आसीन होने के लिए प्रोत्साहित करता है। समान वेतन के दिशा-निर्देश स्थापित करें, श्रम कानूनों को अधिक सख्ती से लागू करें तथा अनुबंध शिक्षकों को नियमित करें। निजी शिक्षा में समान पारिश्रमिक अधिनियम 1976 का सशक्त प्रवर्तन आवश्यक है। परिसर में सुरक्षा प्रोटोकॉल, परिवहन विकल्प और शिकायत प्रक्रिया को बेहतर बनाएं। शैक्षणिक संस्थानों में महिला सुरक्षा उपायों की स्थापना को निर्भया फंड (2013) द्वारा वित्त पोषित किया गया है। लिंग-संतुलित शिक्षण स्टाफ प्रारंभिक शिक्षा में स्त्रीकरण को कम करेगा और देखभाल संबंधी जिम्मेदारियों को सामान्य बनाएगा। प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में, फिनलैंड और स्वीडन पुरुषों की भर्ती को आक्रामक रूप से प्रोत्साहित करते हैं। गुमनाम शिकायत निवारण प्रक्रियाएं स्थापित करें, सुनिश्चित करें कि आंतरिक शिकायत समितियां (आईसीसी) कार्यरत हों, तथा सभी विश्वविद्यालयों में कठोर उत्पीड़न-विरोधी नीतियां लागू करें। यूजीसी के 2023 निर्देश के अनुसार विश्वविद्यालयों में आईसीसी आवश्यक है; हालाँकि, अभी भी कार्यान्वयन में खामियाँ हैं, विशेष रूप से छोटे और ग्रामीण संस्थानों में। शिक्षा जगत में लैंगिक अंतर को कम करने के लिए मजबूत मार्गदर्शन कार्यक्रम, समावेशी नियुक्ति प्रथाएं, संस्थागत परिवर्तन और बहुआयामी रणनीति आवश्यक हैं। परिवार-अनुकूल कार्यस्थलों को बढ़ावा देना, पारदर्शी पदोन्नति की गारंटी देना, तथा भेदभाव-विरोधी कानूनों को मजबूत बनाना, उच्च शिक्षा में महिलाओं को सशक्त बनाने में सहायक हो सकता है। लिंग-संवेदनशील, योग्यता-आधारित नीतियों की ओर प्रतिमान बदलाव से प्रतिनिधित्व में सुधार होगा और भारत की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी।

प्रियंका सौरभ
रिसर्च स्कॉलर इन पोलिटिकल साइंस, कवयित्री, स्वतंत्र पत्रकार एवं स्तंभकार, उब्बा भवन, आर्यनगर, हिसार (हरियाणा)

शिव जयंती महोत्सव पर निकली भव्य शोभायात्रा

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी (ऋषिकान्त मिश्र) पीरपैंती-: प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय पिरोजपुर बाराहाट के तत्वावधान में 89वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव का आयोजन किया गया।इसमें मेहरमा बीडीओ अभिनव कुमार,थानाध्यक्ष सौरभ कुमार,पूर्व सांसद प्रत्याशी हरेराम निराला,बीके जयमाला दीदी दुमका, बीके रेखा, बीके डॉ. पीयूष, बीके बंटी, बीके लीला दीदी, मानस शिरोमणि नागेश्वर प्रसाद राम सहित अन्य अतिथियों ने हरी झंडी दिखा कलश शोभा यात्रा को रवाना किया। शोभा यात्रा पिरोजपुर से निकल कर विभिन्न जगहों का भ्रमण करते हुए बीके काशी प्रसाद राणा के गीता पाठशाला आश्रम पहुंचकर सम्पन्न हुई। इस दौरान अतिथियों और पत्रकारों को अंग वस्त्र से सम्मानित भी किया गया। मौके पर सिकंदर पंडित, पंकज राम, स्काउट जिला प्रशिक्षक मुकेश आजाद, नितिन कुमार, बीके वीरू कुमार, भावना बहन, शिक्षक चंदन राज, प्रभु प्रिया, सुनील साह सहित अन्य लोगों के ने कार्यक्रम को सफल बनाने में महती भूमिका का निर्वहन किया। बीके जयमाला दीदी ने कहा कि हमे अपने जाती धर्म ऊंच-नीच गरीब-अमीर के मत भेदों को मिटाकर परमात्मा के कार्य में यथासंभव सहयोग करना चाहिए।

स्टार्ट अप सेल, नालंदा द्वारा राजकीय पॉलिटेक्निक अस्थावां मे पिचिंग डेक का आयोजन

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी (पटना): नालंदा अभियंत्रण महाविद्यालय, चण्डी के प्राचार्य प्रो० (डॉ०) गोपाल नंदन एवम राजकीय पॉलीटेक्निक, अस्थावां के प्राचार्य आनंद कृष्णा के मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन से 27 फरवरी को स्टार्ट अप सेल, नालंदा के द्वारा पिचिंग डेक का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्राचार्य ने कहा कि आप लोग स्टार्टअप योजना का लाभ अपने बेहतर आइडिया के माध्यम से ले सकते हैं। उन्होंने कहा कि स्टार्टअप की दुनिया विशाल है और वर्तमान समय में युवाओं को बेहतर अवसर प्रदान करता है। समय की मांग है कि युवा तकनीकी शिक्षा को आत्मसात करें और नवीन आईडिया के साथ-साथ दक्षता हासिल करें। कार्यक्रम में छात्र छात्राओं ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया।

कार्यक्रम के दौरान प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसमें शीर्ष तीन टीमों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए स्टार्टअप सेल इंचार्ज डॉ० धीरेन्द्र कुमार ने स्टार्टअप सेल के पॉलिसी एवं इसके फायदे के बारे में जानकारी साझा की।

शिवजी को जब संहार करना होगा, तो जैसे अलार्म बजता है, ऐसे वो डमरू बजाएंगे - बाबा उमाकान्त जी महाराज

शिवजी दाता दयाल हैं और वहीं संहारकर्ता हैं, उनके नियम का पालन करो

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी (उज्जैन/ मप्र): परम पूज्य परम सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज ने 26 फरवरी, 2025 को सतसंग के माध्यम से बताया कि शंकर जी, शिव जी जिनको कहते हो, वो दाता दयाल हैं, और वही संहारकर्ता हैं। जब ये खुश रहेंगे, तब आपको देंगे। जब पवन देवता, पृथ्वी देवता, आकाश देवता, जल देवता, ये सब खुश रहेंगे, तो ये आपको धन-धान्य से पूर्ण कर देंगे। और यही नाराज़ जब होंगे, तो तरह-तरह की तकलीफें लाएंगे, अब वो चाहे धरती हिले, चाहे भूकंप आवे, चाहे तूफान आवे और चाहे बाढ़ आवे। इसलिए इनका जो नियम है, उसका सबको पालन करने की जरूरत है।

शिवजी के डमरू की आवाज कैसी होगी?

शिवजी को जब संहार करना होगा, तो जैसे अलार्म बजता है, ऐसे वो डमरू बजाएंगे, और वो सबको सुनाई पड़ेगा। अब वह डमरू किस तरह का होगा?

डमरू इसी तरह बजेगा कि तेज आवाजें होंगी और चिंगारियां निकलेंगी। जहां वो चिंगारियां गिरेंगी, वहीं चाहे गाँव हो, चाहे आदमी हो, चाहे जानवर हो, चाहे धरती हो या खेत-खलिहान हो, वो आपको नष्ट हुआ दिखाई पड़ेगा। आवाज होगी, धरती हिलेगी, और उसमें बहुत जाएंगे। जो ये लड़ाई करने के लिए, मरने-मिटने के लिए तैयार हैं, यदि चंडी उनके सिर पर सवार हो गई और बुद्धि भ्रष्ट कर दी, तो वे परमाणु बम (एटम बम), तोपें और क्या-क्या जो बना रखा है, उनकी आवाजें सुनाई पड़ेंगी, तब समझ लेना कि अब विनाश का डमरू बजने लग गया। फिर तांडव होगा।

शिव तांडव किसको कहते हैं?

शिव तांडव किसको कहते हैं, अभी आप इस चीज़ को नहीं समझते हो। कहते तो हो कि शिव तांडव होगा, लेकिन शिव तांडव में कोई नाच-गाना नहीं होगा। कोई ऐसा मस्ताना बाजा नहीं बजेगा, जैसा लोग बजाते हैं। शिव तांडव जब होगा, तब गुहार मचेगी, जैसे मुसीबत आती है, तो लोग पापा, भैया, दादा पुकारते हैं, उस तरह का शिव तांडव होगा। इसलिए हमेशा होशियार रहने की जरूरत है। चाहे आप सतसंगी हों, चाहे सतसंगियों के रिश्तेदार हों, चाहे आपके पड़ोसी हों, प्रेमियों आप इस बात को बताओ कि जो देवताओं का नियम है, वेद में जो धर्म लिखा हुआ है कि धर्म यह है इसका सभी लोग पालन करो और उस धर्मरूपी वृक्ष के नीचे सब लोग खड़े हो जाओ। उसकी छाया में हो जाओ नहीं तो तपन महसूस होगी। इस बात को आप सब लोग प्रचार-प्रसार करके लोगों को बताते रहो।

नशा मुक्ति अभियान के तहत कबड्डी, पेंटिंग, नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी (ऋषिकान्त मिश्र) पीरपैंती-: नशा मुक्ति अभियान के तहत बुद्दचक थाना प्रभारी मुकेश कुमार के नेतृत्व में मध्य विद्यालय बरोहिया के प्रांगण में पुलिस पब्लिक सप्ताह कार्यक्रम के अंतर्गत एक दिवसीय कबड्डी प्रतियोगिता (बालक/ बालिका) वर्ग अभियान गीत, नृत्य, पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कबड्डी बालिका वर्ग में इंस्टाग्राम टीम विजेता और मौज टीम उप विजेता रही। बालक वर्ग में महाकाल टीम विजेता और माही टीम उप विजेता रही। वही थाना प्रभारी ने कहा कि नशा से मुक्ति के लिए आम जनता के अंदर जागरूकता पैदा करना है और इस अभियान को जन जागरूकता के माध्यम से ही सफल बनाया जा सकता है।कार्यक्रम के सफल संचालक विनीत रंजन, स्कोरर आकाश,किरण,निर्णायक सर्वोत्तम कुमार शर्मा रहे। वही कार्यक्रम के सफल संचालन में एस आई राजीव कुमार, शिक्षक राजकिशोर मंडल, दिलीप साह, रीना कुमारी, रंजू, नीलम, पूजा, सीता सहित अन्य शिक्षक शिक्षिकाएं व ग्रामीण उपस्थित रहे।

केंद्रीय कोयला एवं खान राज्य मंत्री ने आंगनबाड़ी केंद्र पर सामग्री का किया वितरण

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी (नरकटियागंज): केंद्रीय कोयला एवं खान राज्य मंत्री सतीश चन्द्र दुबे ने अपने बिहार दौरा के क्रम में नरकटियागंज नगर परिषद के आँगनबाड़ी केंद्र संख्या 180 पर बच्चों को पोषण किट एवं बैग विथ डेस्क का वितरण किया, इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री ने कहा की आंगनबाड़ी केंद्र पर आने वाले बच्चों को पोषण युक्त भोजन का वितरण हो और शिक्षा भी अच्छी हो इसी को लेकर डबल इंजन की सरकार कार्य कर रही है, इस अवसर पर बगहा के विधायक राम सिंह नगर सभापति रीना देवी समेत भारी संख्या में लोग उपस्थित थे,

नाला निर्माण में अनियमितता का ग्रामीणों ने लगाया आरोप

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी (निरसा): शिवलीबाड़ी उत्तर पंचायत अंतर्गत संजय नगर हरिजन टोला (धोबी मोहल्ला) में पूर्व विधायक फंड से हो रहे नाला के निर्माण में ग्रामीणों द्वारा कहा जा रहा है कि नाला निर्माण में अनियमित तरीके से कार्य किया जा रहा है।आने जाने वाले चालू रास्ते पर पिछले बीस दिनों से नाला निर्माण के कार्य को बंद करके रखा गया है। जिस कारण आने जाने वाले लोगों को कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है।

मौके पर मौजूद शिक्षक रुपेश मिश्रा ने जानकारी देते हुए बताया कि अभी तक दर्जनों ग्रामीण गिरकर घायल हो चुके हैं एवं एक व्यक्ति का पैर भी टूट गया है। जिससे ग्रामीणों में काफी आक्रोश देखा जा रहा है। जब इस मामले में हमारे संवाददाता ने कार्य स्थल पर पहुंचा तो देखा कि किसी भी तरह का कोई भी लागत राशि की शिलापट्ट भी नहीं लगाई गई है और ना ही कार्य करवा रहे ठेकेदार का कोई पता है।

ग्रामीणों से जब नाला निर्माण कार्य की जानकारी ली गई तो उनका कहना था कि उन्हें कुछ भी मालूम नहीं है कि कौन ठेकेदार है।शिक्षक रुपेश मिश्रा एवं ग्रामीणों ने बताया कि रात होते ही पूरे मोहल्ला में अंधेरा छाया रहता है। पंचायत के जनप्रतिनिधियों से गुहार लगाई की मोहल्ले में स्ट्रीट लाइट एवं पेवर ब्लॉक का कार्य किया जाए।

मौके पर वार्ड सदस्य नमिता देवी, राजेंद्र रजक, विश्वनाथ रजक, धर्मेंद्र रजक, अभिमन्यु रजक, रंजीत यादव आदि अन्य ग्रामीण मौजूद थे।

विधानसभा में गूंजा विजयनगर रेप कांड

- सिविल लाइंस विधायक गोपाल शर्मा ने उठाया ब्लैकमेलिंग और रेप कांड का मुद्दा
- ब्यावर जिले में नाबालिग छात्राओं के देहशोषण और धर्मांतरण के सरगना के कांग्रेस से संबंध

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी (जयपुर): विधानसभा में गुरुवार को विजयनगर लव जिहाद रेप कांड की गूंज रही। सिविल लाइंस विधायक गोपाल शर्मा ने व्यवस्था के प्रश्न के तहत सदन में मजबूती से इस विषय को रखा। विधायक शर्मा ने आरोप लगाते हुए कहा कि यह लव जिहाद का सोचा-समझा षड्यंत्र है। लव जिहाद, रेप, ब्लैकमेलिंग के बाद धर्मांतरण के लिए मजबूर करने की घटनाएं असहनीय हैं। सिविल लाइंस विधायक शर्मा ने विधानसभा में विजयनगर लव जिहाद कांड का मुद्दा उठाते हुए कांग्रेस नेताओं के शामिल होने का आरोप भी लगाया। उन्होंने 33 वर्ष पुराने अजमेर अश्लील कांड की भयावहता भी याद दिलाई। शर्मा ने कहा कि ऐसी साजिशों से ही देश का बंटवारा हुआ, हम मिनी पाकिस्तान नहीं बनने देंगे।

विधायक शर्मा ने कहा- 'ब्यावर जिले के विजयनगर में नाबालिग छात्राओं से दुष्कर्म और धर्मांतरण के लिए मजबूर और ब्लैकमेल करने की सिलसिलेवार घटनाओं ने प्रदेश की अंतरात्मा को झकझोर कर रख दिया है। पूरे राजस्थान में इस जघन्य घटनाक्रम के खिलाफ प्रदर्शन और बंद आयोजित हो रहे हैं और विजयनगर सुलग रहा है। अजमेर अश्लील कांड की याद दिलाने वाले इस लव जिहादी घटनाक्रम पर आम जनता विधानसभा की ओर टुकुर- टुकुर देख रही है।'

उन्होंने आगे कहा, 'राज्य सरकार की सजगता और पुलिस की सक्रियता के कारण कई आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है और इनका कथित सरगना भी पकड़ा गया है लेकिन स्थानीय जनता पूरी तरह संतुष्ट नहीं है। इस संगठित लव जिहाद गिरोह को अभियान चलाकर ध्वस्त किए जाने की आवश्यकता है।

शिवालय हर हर महादेव से गूंजे, डॉ. शम्भू पंवार ने भगवान शिव का किया अभिषेक

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी (चिड़ावा): महाशिवरात्रि का पर्व पर शिवालयों में अल सुबह से ही मंदिरो हर हर महादेव, ॐ नमः शिवाय के जयकारों से गुजमान होने लगे। शिवालयों में सुबह से देर रात्रि तक श्रद्धा का सैलाब उमड़ रहा था। चिड़ावा कस्बे के पंडित गणेश नारायण मंदिर, भूतनाथ मंदिर, गौशाला रोड स्थित शिवालय, अडूकिया स्कूल के पास महाकालेश्वर शिवालय, पंचायत समिति परिसर, आरावतिया कॉलोनी, रेलवे स्टेशन, सूरजगढ़ रोड, आदि शिवालयों में श्रद्धालुओं ने भोलेनाथ का जलाभिषेक कर पूजा अर्चना की। महाशिवरात्रि पर विशेष योग होने से हर श्रद्धालु भगवान शिव की पूजा- अर्चना करने को आतुर थे। भक्तजनों ने मंदिरों में तो कई श्रद्धालुओं ने अपने निवास स्थान पर भगवान शिव का रुद्राभिषेक किया। ऐसा मानना है कि महाशिवरात्रि के दिन भगवान शिव का अभिषेक करने से साधक को अभीष्ठ फल की प्राप्ति होती है।

इस पावन अवसर पर सुगन कुटीर में शिव के अनन्य भक्त वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर, अंतरराष्ट्रीय लेखक, पत्रकार- विचारक डॉ. शंभू पवार ने सपत्नीक श्रीमती कमलेश पंवार एवं विजय पंवार, सुभाष बबीता,अभिषेक - ज्योति, अंकित- प्रिया, नन्ही यशस्वी, यशु ने भोले नाथ को विल्व पत्र, आक, धतूरा, गाजर, बैर, अर्पित किए।

पंडित डॉ.धर्मेंद्र तिवारी के आचार्यत्व में भगवान शिव का दूध, जल, गन्ने का रस, फलों के रस, शहद, व पंचामृत से रुद्राभिषेक किया। डॉ. शम्भू पंवार ने भगवान शिव से देश में अमन चैन व खुशहाली की कामना की। मुनका की ढाणी स्थित शिवालय में हुए रुद्राभिषेक में नगरपालिका अध्यक्ष सुमित्रा सैनी ने भगवान शिव की पूजा कर देश में अमन चैन की कामना की।

एक-एक कर सबको जाना है

क्यों कर रहा अहंकार तू मनुज ?
एक बात हमें समझना है,
राख हो जाना है सबको एक दिन
अहंकार भी ख़ाक हो जाना है
स्वीकारो परम सत्य जीवन का
एक-एक कर सबको जाना है !
छोटी-छोटी बातों में उलझते हैं
पर छोटी सी बात नहीं समझते हैं,
सारा यहीं का यहीं धरा रह जाना है
खाली हाथ ही हमें जाना है,
स्वीकारो परम सत्य जीवन का
एक-एक कर सबको जाना है !
चाहे अहंकार हो खूबसूरती का
या जुटाई हुई धन संपत्ति का
ले जा न पाओगे कुछ भी साथ
ठाट-बाट सब यहीं छोड़ जाना है
स्वीकारो परम सत्य जीवन का
एक-एक कर सबको जाना है !
सभी का समय तय है यहाँ ?
कोई उसे जीत पाया कहाँ ?
किसी को कुछ पहले जाना है,
किसी को पीछे-पीछे आना है
स्वीकारो परम सत्य जीवन का,
एक-एक कर सबको जाना है !
नश्वर शरीर छूट जाएगा यहीं,
धन-दौलत तो संग जाएगा नहीं
जो जाएगा साथ वह होगा कर्म ,
इसलिए अच्छा कर्म ही कमाना है,
स्वीकारो परम सत्य जीवन का
एक-एक कर सबको जाना है !

© अनंत ज्ञान
हजारीबाग (झारखंड)
कोलफील्ड मिरर

बुजुर्ग की दो बात

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी 2025: बुजुर्ग अपने अनुभव से बहुत अच्छी बात कहते है। किसी बुजुर्ग ने दो मार्मिक बहुत अच्छी बात कही है। आज की दुनिया में यह प्रायः देखने में आता है कि सब अपने मतलब की बात तो बहुत अच्छे से समझते हैं पर बात का मतलब बिरले ही समझते हैं। हम इस कदर तरक्की कर चुके हैं कि हाथ में पकड़े हुए मोबाइल की अहमियत पास में बैठे अपनों से भी ज्यादा दिखाने में जरा भी हम नहीं हिचकिचाते हैं। आजकल विज्ञान की उन्नति के कारण इस मोबाइल के आ जाने से सारी दुनिया की खबर तो सबको रहती है परन्तु अपनापन खो सा गया है। अब इस छोटे से खिलौने में इतने व्यस्त हैं कि रिश्तों की अहमियत गायब हो गयी है। कहते हैं पत्थर तब तक सलामत है जब तक वो पर्वत से जुड़ा है, पत्ता तब तक सलामत है जबक तक वो पेड़ से जुड़ा हैं, इंसान तब तक सलामत है जब तक वो परिवार व अपनों से जुड़ा है, क्योंकि अपनों से अलग होकर आजादी तो मिल जाती है लेकिन संस्कार चले जाते हैं। हम आज के समय में इस भौतिक चकाचौंध में कहीं खो गये हैं या भीड़ में खो गये हैं, इससे अच्छा तो हम एकांत में खो जायें फिर जो इससे हमको अनुभव हो वह दूजों को बताना। धर्म शुद्ध आत्मा में टिकता है। व्यक्ति धर्म करता है, अनेकों -अनेकों जन्मों के कर्म साथ लेकर चलते हैं, संस्कारों का बोझ भी ढोते हैं जिनमें अच्छे और बुरे सब आते हैं, यह सब संयोग पर निर्भर करता है। व्यक्ति में ग्रहण शीलता होने पर ही ज्ञान टिकता है। धर्म शुद्ध आत्मा में ही टिकता है। शुद्ध आत्मा किसमे कहें! उसके क्या गुण या लक्षण होते हैं आदि -आदि। जो व्यक्ति ऋजु मना होता है, सरल हृदय वाला होता है, अनुकंपा शील होता है वही शुद्ध आत्मा वाला माना जाता है। आचारांग सूत्र में बताया गया है कि शुद्ध मन वाला व्यक्ति जैसा भीतर से होता है वैसा ही बाहर से होता है वह किसी के साथ धोखा धड़ी नहीं करता हैं। हमें अपने जीवन में किसी के साथ भी छल, कपट नहीं करना चाहिए। हमारा जीवन पारदर्शी होना चाहिए। व्यक्ति को शुद्ध और नेक जीवन जीना चाहिए। जिस प्रकार शुद्ध पात्र में वस्तु ठहर पाती है वैसे ही धर्म के लिए भी शुद्ध आत्मा का होना जरूरी है।

प्रदीप छाजेड़
बोरावड़

पेंशन @ यूनिफाईड पेंशन स्कीम पर लगा सरकार का ठप्पा-1 अप्रैल 2025 से लागू होगी

पुरानी व नई पेंशन स्कीम के बीच मचे घमासान के बीच यूनिफाईड पेंशन स्कीम लांच

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी (गोंदिया): भारत में केंद्र व राज्य सरकार स्तरपर हम करीब दो दशकों से देख रहे हैं कि कर्मचारियों व सरकारों केबीच पुरानी पेंशन स्कीम व नई पेंशन स्कीम का मुद्दा छाया हुआ था, इसपर कई आंदोलन भी हमने देखे, जिसपर केंद्र सरकार ने वर्ष 2022 में पूर्व वित्त सचिव टीवी स्वामीनाथन की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया था ताकि एनपीएस की समीक्षा की जा सके। इस समिति ने केंद्रीय कर्मचारियों के संघों व दूसरे प्रतिनिधियों, राज्य सरकारों, आरबीआई, विश्व बैंक, राजनीतिक दलों समेत दूसरे श्रम संगठनों के साथ विस्तार सेविमर्श के बाद एक रिपोर्ट तैयार की थी। जिसके आधार पर दिनांक 24 अगस्त 2024 को केंद्रीय कैबिनेट मंत्रीमंडल की मीटिंग में देर शाम यूनिफाइड पेंशन स्कीम के फैसले पर मोहर लगाई गई जो 1 अप्रैल 2025 से लागू होगा, जिसमें कहा गया है कि कर्मचारी नई पेंशन स्कीम व यूनिफाईड पेंशन स्कीम में चॉइस कर सकते हैं। चूंकि पुरानी व नई पेंशन स्कीम के बीच मचे घमासान के बीच यूनीफाईड पेंशन स्कीम लॉन्च की गई है,इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे पेंशन @ यूनिफाइड पेंशन स्कीम पर लगा सरकार का ठप्पा, 1 अप्रैल 2025 से लागू होगी।नई लांच की गई यूनिफाइड पेंशन स्कीम व नई पेंशन स्कीम में से कोई एक चुनने में कर्मचारी स्वतंत्र होंगे, इस स्कीम पर विपक्ष का तंज परंतु कर्मचारियों नें पीएम से मिलकर आभार जताया है।

साथियों बात अगर हम दिनांक 24 अगस्त 2024 को देर शाम यूनिफाइड पेंशन स्कीम लॉन्च करनेकी करें तोसरकार के खजाने पर बढ़ते दवाबको देखतेहुए ओल्ड पेंशनस्कीम को खत्म करके नई पेंशन स्कीम (एनपीएस) को लाया गया था। मगर उसका विरोध होता रहा और अब सरकार ने एनपीएस से बेहतर स्कीम उतारने का दावा किया है, जिसे यूपीएस कहा जा रहा है। अब हम तीनों में क्या फर्क है यह जानना जरूरी है, और समय के साथ क्या -क्या होता गया, केंद्र सरकार ने देश में पुरानी पेंशन स्कीम और नई पेंशन स्कीम के बीच मचे घमासान के बीच नई पेंशन स्कीम को हटाते हुए इसकी जगह पर यूनिफाईड पेंशन योजना लॉन्च की है। यूपीएस लॉन्च होने पर सवाल उठता है कि आखिरी नई पेंशन स्कीम क्या थी और ये पुरानी पेंशन स्कीम से कितना अलग था। इसमें क्या दिक्कतें थी जिसकी वजह से इसका विरोध किया जा रहा था जो अब नीचे के पैराग्राफ में चर्चा करेंगे। परन्तु अब, यूपीएस सामने आई है। सरकार दावा कर रही है कि इसमें एनपीएस में आ रही तमाम शिकायतों को दूर कर दिया गया है। इस योजना में ओल्ड पेंशन स्कीम की तरह ही सुनिश्चित पेंशन का प्रावधान है, और इसे 2025 से लागू किया जाएगा। यूपीएस में पेंशन की राशि निश्चित होगी, और यह परिवार के लिए भी सुनिश्चित पेंशन का लाभ प्रदान करेगी। साथ ही, इसमें महंगाई के अनुसार पेंशन में समायोजन का प्रावधान भी है। यूपीएस को एक बैलेंस्डसॉल्यूशन के रूप में देखा जा रहा है। केंद्रीय मंत्रिमंडल के फैसलों की जानकारी देते हुए सूचना और प्रसारण मंत्री ने कहा,सरकारी कर्मचारियों की एनपीएस में सुधार की मांग रही है। यूपीएस सरकार के कर्मचारियों के लिए नई पेंशन योजना है, इस योजना के तहत कर्मचारियों को एक निश्चित पेंशन का प्रावधान किया जाएगा,जो एनपीएस से अलग है, जिसमें पेंशन की राशि निश्चित नहीं होती थी.सरकार की तरफ से कहा गया है कि केंद्र सरकार के कर्मचारियों को यह निर्णय लेने का अधिकार होगा कि वे एनपीएस में बने रहें या यूपीएस में शामिल हों।कैबिनेट सचिव टी वी सोमनाथन ने भी कहा,यह योजना उन सभी पर लागू होगी, जो 2004 के बाद से एनपीएस के तहत रिटायर हो चुके हैं। हालांकि यूपीएस 1 अप्रैल, 2025 से प्रभावी होगी, लेकिन 2004 से लेकर 31 मार्च, 2025 तक एनपीएस के तहत सेवानिवृत्त हुए सभी कर्मचारी यूपीएस के पांचों लाभ के पात्र होंगे। उन्हें पिछले पेंशन भुगतानों के समायोजन के बाद इस योजना का लाभ मिलेगा।

साथियों बात अगर हम यूपीएस के पांच मुख्य स्तंभों की करें तो केंद्रीय मंत्री ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में एनिमेशन से बताया,(1) निश्चित पेंशन:यूपीएस के तहत, कर्मचारियों की पेंशन उनकी रिटायरमेंट से पहले के अंतिम 12महीनों के औसत मूल वेतन का 50 प्रतिशत होगी, इसके लिए शर्त यह है कि यदि उन्होंने कम से कम 25 वर्षों की सर्विस की हो। यदि सर्विस 25 साल से कम है और 10 साल से अधिक है तो यह अमाउंट प्रो-डेटा के आधार पर दी जाएगी। (कितने वर्ष पर कितनी होगी, इससे विस्तृत जानकारी का इंतजार है) न्यूनतम 10 वर्षों की सेवा के लिए पेंशन का प्रावधान रहेगा।(2) निश्चित पारिवारिक पेंशन: यूपीएस के तहत पारिवारिक पेंशन भी दी जाएगी, जो कर्मचारी के मूल वेतन का 60 प्रतिशतहोगी।यह पेंशन कर्मचारी की मृत्यु के तुरंत बाद उनके परिवार को दी जाएगी, हालांकि अभी तक यह स्पष्ट नहीं है कि यदि पहले ही वर्ष किसी कर्मचारी की मृत्यु हो जाती है तो क्या उसके परिवार को भी इसी आधार पर पेंशन मिलेगी (3) न्यूनतम पेंशन का प्रावधान: यूपीएस के तहत यदि कोई कर्मचारी कम से कम 10 वर्षोंकी सेवाके बादरिटायर होता है, तो उसे न्यूनतम 10, हज़ार रुपये प्रति माह की पेंशन मिलेगी। (4) महंगाई का समायोजन: इस योजना में पेंशन पारिवारिक पेंशन और न्यूनतम पेंशन परमुद्रास्फीति के अनुसार समायोजन का प्रावधान भी है (5) ग्रेच्युटी: यूपीएस के तहत रिटायरमेंट के समय एकमुश्त भुगतान किया जाएगा, जो कर्मचारी के अंतिम वेतन (मूल वेतन + महंगाई भत्ता) का 1/10वां हिस्सा होगा. यह भुगतान हर छह महीने की सेवा के लिए होगा और यह पेंशन की राशि को कम नहीं करेगा। इससे केंद्र पर वर्ष 2025-26 के दौरान ही 6250 करोड़ रुपये का अतिरिक्त बोझ पड़ेगा। चुनावी माहौल में इसे सरकार की ओर से बड़ाराजनीतिक मोहरा भी माना जा रहा है। यूक्रेन से यात्रा के बाद शनिवार दोपहर नई दिल्ली पहुंचे पीएम की अध्यक्षता में कैबिनेट की बैठक देर शाम को हुई जिसमें यूनीफाइड पेंशन स्कीम के बारे में फैसला किया गया।

साथियों बात अगर हम यूनिफाइड पेंशन स्कीम को समझने की करें तो, (1) इस स्कीम का सबसे पहला तथ्य यह है कि इसमें कर्मचारियों को सुनिश्चित पेंशन मिलेगा, जबकि एनपीएस में बाजार में निवेशित राशि के हिसाब से पेंशन राशि मिलने की व्यवस्था है। (2) यूपीएस का फार्मूला यह है कि अगर कर्मचारी ने 25 वर्षों की सेवा दी है तो उसके अंतिम कार्य-वर्ष के 12 महीनों के औसत मूल वेतन का 50 फीसद राशि बतौर पेंशन दी जाएगी। अगर सेवा काल 10 से 25 वर्षों का है तो पेंशन की राशि समानुपातिक आवंटन के आधार पर तय होगी। (3) यूपीएस का दूसरा अहम पहलू यह है कि सेवानिवृत्त कर्मचारी की मृत्यु होने पर उसके आश्रित (पति यापत्नी) को पेंशन राशि का 60 फीसदी सुनिश्चत पारिवारिक पेंशन के तौर पर दी जाएगी। (4) तीसरा महत्वपूर्ण पहलू यह है कि कर्मचारी का कार्य वर्ष चाहे जितना भी हो उनकी पेंशन की न्यूनतम राशि 10 हजार रुपये से कम नहीं होगी। (5) मंत्री का कहना है कि आज की तारीख में जो न्यूनतम वेतन है उसके आधार पर न्यूनतम पेंशन की राशि 15 हजार रुपये बनती है। (6) चौथा पहलू, पेंशन की राशि जो महंगाई के सूचकांक से जोड़ा गया है। यानी खुदरा महंगाई दर बढ़ेगी तो पेंशन की राशि भी बढ़ेगी। महंगाई भत्ता के आधार पर पेंशन, पारिवारिक पेंशन और न्यूनतम पेंशन तीनों का निर्धारण होगा। (7) पांचवा पहलू, सेवा में संपन्न हर छह माह के लिए मूल वेतन का 10 फीसद राशि एकमुश्त मिलेगी जो ग्रेच्यूटी के अलावा होगी।(8) सूचना व प्रसारण मंत्री के मुताबिक मोटे तौर पर 30 वर्ष की सेवा के लिए एक कर्मचारी को छह माह का वेतन अलग से सेवानिवृत्त होने पर मिलेगा। केन्द्रीय मंत्री ने बताया कि अगर राज्य सरकारें चाहें तो इसी आधार पर अपने कर्मचारियों के लिए भी पेंशन स्कीम लागू कर सकती हैं। ऐसा होता है तो देश भर में 90 लाख राज्य सरकारों के कर्मचारियों को भी फायदा हो सकता है। स्पष्ट है कि चुनाव में मुद्दा बने रहे विपक्षी दलों पर अब यह जिम्मेदारी आएगी कि वह भी अपने राज्यों में तत्काल प्रभाव से इसे लागू करने की घोषणा करे। हरियाणा और जम्मू कश्मीर में चुनाव की घोषणा हो चुकी है और अगले एक दो महीने में महाराष्ट्र और झारखंड में भी घोषणा होनी है। ऐसे में राजनीतिक दलों पर यह दबाव रहेगा कि वह अपने मेनिफेस्टो में राज्य में इसे लागू करने की घोषणा करे।

साथियों बात अगर हम नई व पुरानी पेंशन स्कीम को समझने और दोनों में अंतर की करें तो,दरअसल, सरकार ने नई पेंशन योजना को साल 2004 में शुरू किया था। इसके तहत सरकारी कर्मचारियों को निवेश की मंजूरी मिलती है, जिसके तहत वो अपने पूरे करियर में पेंशन खाते में नियमित तौर पर योगदान करके अपने पैसे के निवेश को अनुमति दे सकते हैं। यही नहीं, एनपीएस में जब कर्मचारी का रिटायरमेंट हो जाता है, तो इसके बाद उसे पेंशन राशि का एक हिस्सा एकमुश्त निकालने की छूट मिलती है। वहीं, बाकी रकम के लिए एन्युटी प्लान खरीद सकते हैं।एन्युटी एक तरह का इंश्योरेंस प्रोडक्ट है, जिसमें एकमुश्त निवेश करना होता है और आप इसे हर महीने, 3 महीने में या साल भर में निकाल सकते हैं। रिटायर्ड कर्मचारी की मृत्यु होने तक उसे नियमित आमदनी मिलती है। जबकि, अगर उसकी मृत्यु हो जाए, तो पूरा पैसा नॉमिनी को मिल जाता है। बात अगर ओल्ड पेंशन योजना की करें, तो इसमें कर्मचारी के आखिरी वेतन का 50 फीसदी पेंशन होती थी। वहीं, इसकी पूरी राशि का भुगतान सरकार की तरफ से किया जाता था। हालांकि, दिवंगतपूर्व पीएम ने दिसंबर 2003 में इसओल्ड पेंशन योजना को खत्म कर दिया था। वहीं, अब लोग इसी पुरानी पेंशन स्कीम को लागू करने के लिए आंदोलन तक कर रहे हैं। जहां नई पेंशन योजना मेंकर्मचारी के वेतन से 10 प्रतिशत यानी बेसिक और डीए की कटोती होती है, तो वहीं ओल्ड पेंशन योजना में पेंशन के लिए वेतन से कोई कटौती नहीं होती। एनपीएस में जनरल प्रोविडेंट फंड की सुविधा नहीं जोड़ी गई है, जबकि पुरानी पेंशन योजना में जनरल प्रोविडेंट फंड की सुविधा है। नई पेंशन योजना में 6 महीने के बाद मिलने वाला महंगाई भत्ता लागू नहीं होता, जबकि पुरानी पेंशन योजना में ये लागू होता हैजहां एक तरफ एनपीएस में रिटायरमेंट पर शेयर बाजार के आधार पर जो पैसा मिलेगा, उस पर टैक्स देना पड़ेगा। वहीं, दूसरी तरफ पुरानी पेंशन योजना में रिटायरमेंट पर जीपीएफ के ब्याज पर किसी तरह का कोई इनकम टैक्स नहीं लगता।देश में काफी समय से पुरानी पेंशन स्कीम को फिर से बहाल करने को लेकर लोग आंदोलन तक कर रहे हैं। वहीं, विशेषज्ञ मानते हैं कि पुरानी योजना के मुकाबले नई पेंशन योजना में कर्मचारियों को काफी कम फायदे मिलते हैं, जिससे उनका भविष्य सुरक्षित नहीं है। इस बवाल के बीच केंद्र सरकार ने यूपीएस लॉन्च की है। सरकार के खजाने पर बढ़ते दवाब को देखते हुए ओल्ड पेंशन स्कीम को खत्म करके एनपीएस को लाया गया था. मगर उसका विरोध होता रहा और अब सरकार ने एनपीएस से बेहतर स्कीम उतारने का दावा किया है, जिसे यूपीएस कहा जा रहा है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषणकरें तो हम पाएंगेकि पेंशन @यूनिफाईड पेंशन स्कीम पर लगा सरकार का ठप्पा-1 अप्रैल 2025 से लागू होगी। पुरानी व नई पेंशन स्कीम के बीच मचे घमासान के बीच यूनिफाईड पेंशन स्कीम लांचनई लांच की गई यूनिफाईड पेंशन स्कीम व नई पेंशन स्कीम चॉइस में कर्मचारी स्वतंत्र-विपक्ष का तंज-कर्मचारी संघों ने पीएम से मिलकर आभार जताया है।

-संकलनकर्ता लेखक-
कर विशेषज्ञ स्तंभकार
एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी
गोंदिया महाराष्ट्र

सर्दी में स्टेशन की कुल्हड़ चाय

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी 2025: सर्दियों के मौसम में रेलवे स्टेशन का नज़ारा अलग ही अनुभव देता है। हल्की धुंध, ठंडी हवाएँ और यात्रियों की भीड़ के बीच जो चीज़ सबसे ज्यादा सुकून देती है, वह है कुल्हड़ में गर्मागर्म चाय। यह सिर्फ एक पेय नहीं, बल्कि एक अहसास है, जो ठंड में ठिठुरते हाथों को गर्माहट देता है और सफर को सुहाना बना देता है।

मिट्टी की सौंधी खुशबू इसे और भी खास बना देती है। जैसे ही गरम चाय कुल्हड़ में डाली जाती है, उसकी खुशबू हवा में घुलकर एक अनोखी ताजगी का अहसास कराती है।

रेलवे स्टेशन पर यात्रियों के लिए कुल्हड़ चाय सिर्फ एक पेय नहीं, बल्कि यात्रा का एक अभिन्न हिस्सा बन चुका है। ठंड के मौसम में जब सुबह-सुबह कोहरे में ट्रेन का इंतजार करते हुए शरीर कांपने लगता है, तब कुल्हड़ चाय की चुस्की राहत देती है। यह यात्रियों को ताजगी के साथ-साथ ऊर्जा भी देती है, जिससे उनका सफर आनंदमय हो जाता है।

स्टेशन पर कुल्हड़ चाय केवल सर्दी से राहत का साधन नहीं, बल्कि लोगों को जोड़ने का भी माध्यम है। अनजान मुसाफिर कुल्हड़ चाय के बहाने बातचीत कर लेते हैं, नए दोस्त बन जाते हैं, और कुछ पल के लिए अपने जीवन की व्यस्तता से दूर हो जाते हैं।

चाहे ठंड कितनी भी तेज़ हो, कुल्हड़ चाय की गरमाहट दिल तक पहुंचती है और सफर को सुहाना बना देती है।

कमलेश झा
भागलपुर बिहार

भ्रम सा अश्वत्थामा अमर है

अश्वत्थामा सदा भ्रम में जिया
जब उसके निर्धन पिता द्रोण ने
आटे का घोल दिया
अश्वत्थामा दूध के भ्रम में पिया

भ्रम में कि पिता के बाद बनूँगा
सेनापति
अश्वत्थामा ने दिया साथ कौरवों का
जब द्रोण मारे जा चुके थे
पांडवों को खत्म करने के प्रतीकार में
भ्रम में जीता रहा अश्वत्थामा

दुर्योधन के लहू लुहान होने पर
मुट्ठी भर सैनिकों का सेनापति बना
भ्रमित अश्वत्थामा
आधी रात को पांडव शिविर में
पांडवों के भ्रम में
वध कर आया उप पांडवों का

भ्रमित अश्वत्थामा आज भी ज़िंदा है
लोगों के मन मस्तिष्क में
जो भ्रमित हैं उन्हें बना रहे हैं दिशाहीन
जो उस भ्रम को पाल रहे हैं
अपने स्वार्थ के लिए

अश्वत्थामा मरा नहीं है
कहते हैं वह चिरंजीव है

डॉ टी महादेव राव
कोलफील्ड मिरर

संजय वर्मा दृष्टि उत्तर प्रदेश इकाई द्वारा साहित्य रत्न

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी 2025: हमारा प्यारा हिंदुस्तान साहित्य संस्था उत्तरप्रदेश इकाई द्वारा आयोजित साप्ताहिक प्रतियोगिता में मनावर जिला धार मप्र के संजय वर्मा "दृष्टि" द्वारा सहभागिता हेतु साहित्य रत्न से सम्मानित किया गया। सम्मान पत्र संस्था के संस्थापक-निर्दोष जैन, संस्थापिका-बीना गोयल, अध्यक्ष-प्रतिमा पाण्डेय, उपाध्यक्ष-शिखा पाण्डेय द्वारा प्रदान किया जाकर उज्ज्वल साहित्य भविष्य की कामना की। उल्लेखनीय है कि मुख्य सम्मान/पुरस्कार--राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रसिद्ध साहित्यिक संस्थाओं से 635 से भी अधिक सम्मान व पुरस्कार प्राप्त। स्टार बुक ऑफ़ इंटरनेशनल से सम्मान एवं वर्ल्ड बुक ऑफ रिकार्ड में तीन बार नाम दर्ज है।

एम एस केशरी पब्लिकेशन द्वारा आयोजित कविता प्रतियोगिता के विजेता

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी 2025: मुजफ्फरपुर बिहार की निशुल्क साहित्यिक पब्लिकेशन "एम एस केशरी पब्लिकेशन" जिसकी संस्थापिका मुस्कान केशरी जी हैं। पब्लिकेशन द्वारा एकल पुस्तकें और साझा संकलन पुस्तकें प्रकाशित की जाती हैं और हर माह दो दिवसीय काव्यगोष्ठी, जुगलबंदी, साक्षात्कार और कविता व विडियो प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। जिसमें देशभर के साहित्यकार सम्मिलित होते हैं और कार्यक्रम कों सफल बनाते हैं। हर माह के तरह फरवरी माह में भी कविता प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें देशभर के साहित्यकार भाग लिए है। इस माह की कविता प्रतियोगिता के विजेता रामबाबू शर्मा, सूफिया जैदी, मधु वशिष्ठ, विद्या बाहेती, सौ अनिता श्रीवास्तव, विनय मोहन, उषा चतुर्वेदी, सनल कक्काड, अर्पणा आर्या, खुशबू रहे। वही प्रतिभागी नीता गुप्ता, अजय सरजोशी, हीरालाल, छगनलाल मुथा, ललिता वर्मा, कृष्ण कुमार, डा संतोष कुमार माधव, नीरज यादव, बलराम सोनी, नागौरी, विनय मोहन शर्मा, विरेन्द्र जैन, राकेश कुमार यादव, बलबीर सिंह, विमल फरीदाबादी, डा हरिदास बड़ोदे, रीति झा, रंजना पांडे मुक्ता, सुजाता शर्मा, उज्जवल कुमार श्रीवास्तव, विद्या बाहेती, डा नौशाद, आचार्य निर्मल, बलराम यादव देवरा जी है। एम एस केशरी पब्लिकेशन की संस्थापिका मुस्कान केशरी जी सभी साहित्यकार का तहे दिल से धन्यवाद करती हैं। भाग लेने हेतु सम्पर्क करें: 6203124315

नेकी का तमाशा: कैमरे की चकाचौंध में बिकता पुण्य

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी 2025: "नेकी कर, दरिया में डाल"—यह पुराना जुमला अब कब्रिस्तान में सड़ रहा है, ऊपर से धूल और मिट्टी का बोझ ढोता हुआ। आज के चमचमाते डिजिटल युग में नेकी कोई खामोश इबादत नहीं रही, बल्कि कैमरे की बेशर्म रोशनी में नंगे पांव नाचने वाला तमाशा बन गई है। भूखे को दो सूखी रोटियां थमाईं, गरीब के कांपते जिस्म पर फटा-पुराना कंबल डाला—क्या बात यहीं थम गई? नहीं जनाब! जब तक उस नेकी का ढोल सोशल मीडिया के बाजार में न गूंजे, जब तक फेसबुक, इंस्टाग्राम और ट्विटर पर लाइक्स की बरसात और तारीफों का तांडव न मचे, तब तक वो नेकी बेस्वाद, बेरंग और बेमानी ठहरती है। अब नेकी कोई गहरा राज़ या पवित्र खजाना नहीं, बल्कि सड़कछाप दुकान का माल है—जितना चटक रंग चढ़ाओ, जितना जोर से चिल्लाओ, उतना मुनाफा बटोरो।

ज़माना डिजिटल का है, तो भलाई भी डिजिटल सर्कस की गुलाम बनकर रह गई है। कभी लोग चुपके से दान करते थे, आंखों से ओझल, दिल से दिल तक। अब? अब तो "लाइव दान" का धंधा जोरों पर है। सड़क पर भूखा दिखा, तो पहले कैमरे का लेंस सेट करो, बनावटी मुस्कान चिपकाओ, फिर फोटो खींचो। तस्वीर सोशल मीडिया पर ठेली जाती है, और साथ में जुमला गड़ता है—"इस गरीब की मदद से आत्मा को सुकून मिला, आप भी पुण्य कमाएं!" गरीब का पेट भरा या भूख से बिलबिलाता रहा, वो गौण है। मगर पोस्ट पर कमेंट्स की लंबी फेहरिस्त और "ग्रेट वर्क" की माला ज़रूर टंग जाती है। नेकी अब सेवा का जज़्बा नहीं, सेल्फी का सस्ता खेल बनकर रह गई है।

यह नौटंकी इतनी गहरी जड़ें जमा चुकी है कि हर नेक काम के पीछे एक "फोटोग्राफर" साये की तरह लटकता है। अनाथालय में कदम रखा, तो पहले स्टेज सजाओ, बच्चों को लाइन में खड़ा करो, सेल्फी ठोंको। किसी मज़लूम की मदद की, तो पहले उसकी आंसुओं भरी तस्वीर कैद करो, फिर दो-चार भारी-भरकम डायलॉग उछालो— "नेकी कर, दुनिया को दिखा!" अब भलाई का मकसद किसी का दर्द बांटना नहीं, बल्कि अपनी शोहरत का परचम फहराना है। असली मदद तो महज एक बहाना है, असली मंज़िल है लाइक्स का ढेर और शेयरों का शोरगुल।

जब बड़े-बड़े साहब, नेता, सितारे और धनकुबेर नेकी के मंच पर कूदते हैं, तो हंसी भी छूटती है और गुस्सा भी आता है। गरीब के सिर पर हाथ फेरते हैं, कंबल ओढ़ाते हैं, मगर आंखें कैमरे की चमक से चिपकी रहती हैं। चेहरा दया का नहीं, पोज़ का सौदा करता नज़र आता है। फोटोशूट खत्म, कंबल वापस खींच लिया—अगले गरीब का इंतज़ार शुरू! अगर इस नाटक में किसी को सचमुच राहत मिल जाए, तो समझो आसमान से चांद टपक पड़ा।

राजनीति के रंगमंच पर यह खेल और भी शानदार ढंग से फलता-फूलता है। कोई नेता जनता के लिए योजना लाता है, तो टेलीप्रॉम्पटर पर शब्दों का जंगल उगाता है— "हम गरीबों के मसीहा हैं, हमारी रोशनी से अंधेरा मिटेगा!" योजना धरातल पर कब उतरेगी, उसका कोई अता-पता नहीं। मगर अखबारों और चैनलों में शोर इतना मचता है कि लगता है गरीबी रातोंरात उड़नछू हो गई। जनता के हाथ कुछ लगे न लगे, नेताजी की छवि को चमकाने का मिशन ज़रूर कामयाब हो जाता है। यहाँ नेकी महज घोषणा का लबादा ओढ़कर घूमती है—अमल की कौन परवाह करता है?

दानवीर बनने का नया फंडा भी गज़ब का है। चुपचाप किसी एनजीओ को पैसा देने की बजाय, मोटा चेक काटो, कैमरे के सामने लहराओ, फोटो खिंचवाओ और सोशल मीडिया पर धकेल दो— "समाज के लिए एक छोटी-सी भेंट, आशीर्वाद दीजिए!" चेक कितना बड़ा था, कितना सच था, कितना भुनाया गया—यह सब रहस्य की गठरी में दब जाता है। मगर तारीफों का पहाड़ खड़ा हो जाता है। पहले मंदिर-मस्जिद में चोरी-छिपे दान डाला जाता था, अब दान से पहले फ्लैश की बिजली कड़कनी ज़रूरी है। भलाई अब दिल की गहराई से नहीं, लेंस की चमक से तौली जाती है।

कई बार यह ढोंग इतना परवान चढ़ता है कि असली मज़लूम सड़कों पर भटकता रह जाता है, और कैमरे वाले उसकी परछाई पर ठुमके लगाते हैं। अनाथालय में खाना बंटता है, मगर प्लेट भरने से पहले फ्रेम सजाना ज़रूरी हो जाता है। तस्वीर व्हाट्सएप पर दौड़ती है, और अगले दिन तक हर शख्स उस "महान आत्मा" की वाहवाही करता है, जिसने ऐसा "अद्भुत" काम कर दिखाया। नेकी अब सेवा का पुण्य नहीं, सर्कस का तड़का बन गई है।

अब तो "फेसबुक लाइव" और "इंस्टा स्टोरी" ने इस खेल को सातवें आसमान पर पहुंचा दिया है। कोई गरीब बच्चे को जूते देता है, तो पहले लाइव चालू करता है—"देखिए दोस्तों, इस अबोध की जिंदगी संवारने जा रहा हूँ।" जूते पहनाए, बच्चे का चेहरा कैमरे में ठूंसा, वीडियो अपलोड—बस, खेल खत्म। बच्चा खुश हुआ या भूखा मर रहा है, इससे क्या फर्क पड़ता है? कमेंट्स में बस एक ही शोर गूंजता है—"वाह, आप तो धरती के भगवान हैं!" नेकी का असली दाम अब व्यूज़ की गिनती और लाइक्स की भीड़ में नापा जाता है।

सवाल उठता है—क्या यही है नेकी का सच्चा स्वरूप? क्या पुण्य अब केवल अपनी चमक बढ़ाने का हथकंडा बनकर रह गया है? शायद हाँ, क्योंकि आज जो कैमरे की पैनी निगाहों में नहीं समाता, वह हुआ ही नहीं समझा जाता। चुपके से किसी का भला कर दिया, तो मानो वह नेकी व्यर्थ होकर धूल चाट गई। तो हे आज के "परोपकार के महारथियों", यदि सच्चे मन से भलाई का संकल्प हो, तो बस इतना स्मरण रखो—कैमरा चालू करो, कोण संभालो, तस्वीर खींचो, पोस्ट ठोको, और मौका मिले तो शान से अपनी जय-जयकार कर डालो। वरना बिना सोशल मीडिया के तमगे के यह भलाई आखिर किस काम की? सच तो यह है कि अब नेकी हृदय की गहराइयों से नहीं, बल्कि स्क्रीन की चकाचौंध से जन्म लेती है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत"
बड़वानी (मप्र)

बाल व्यास श्वेतिमा माधव प्रिया ने सूरत में संगीतमयी श्रीमद्भागवत कथा से श्रद्धालुओं को किया मंत्रमुग्ध

कोलफील्ड मिरर 28 फ़रवरी (नई दिल्ली): विश्व की सबसे कम आयु की अंतर्राष्ट्रीय बाल व्यास श्वेतिमा माधव प्रिया की संगीतमयी श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान महायज्ञ का आज भव्य समापन हुआ। श्री राम रामेश्वर मंदिर सूरत, गुजरात में सात दिन से चल रही इस दिव्य श्रीमंद भागवत कथा में विश्व की सबसे कम आयु की अंतर्राष्ट्रीय बाल व्यास श्वेतिमा माधव प्रिया ने मधुर और भावपूर्ण शैली में श्रद्धालुओं को कथा का रसपान कराया। इतनी कम आयु की बालिका को कथा के श्लोक कंठस्थ सुनकर श्रद्धालु आश्चर्कित ओर श्रद्धा भाव से भाव विभोर हो गए।कथा के दौरान श्रद्धालुओं ने सुदामा चरित्र, भगवान श्रीकृष्ण के निजधाम गमन एवं भागवत विश्राम प्रसंगों का श्रवण कर आध्यात्मिक लाभ प्राप्त किया। कथा के दौरान भजन-कीर्तन और प्रवचनों ने भक्तों को भक्ति और ज्ञान की गहराइयों से परिचित कराया।कथा के समापन अवसर पर हवन एवं विशाल भंडारे का आयोजन किया गया, जिसमें हजारों श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया। इस भव्य आयोजन के मुख्य यजमान राहुल सिंह (अध्यक्ष, सामाजिक समरसता संस्था) एवं श्रुति सिंह रहे। उन्होंने बताया कि यह कथा न केवल आध्यात्मिक upliftment के लिए थी, बल्कि समाज में प्रेम, सद्भावना और एकता का संदेश देने का भी एक माध्यम बनी।इस अवसर पर डॉ. सौरभ पाण्डेय, डॉ. डी. आर. रेवाला, सुशील सिंह, डॉ. ए. के. सिंह, संदीप दीक्षित, कौशल दुबे, जितेंद्र सिंह, जगदीश सहानी, मिथलेश जी, राजमनी पाण्डेय, राकेश भाई शर्मा, अखिलेश शर्मा, प्रकाश भाई, विजय शर्मा, लाल बाबू शर्मा, आचार्य गौरव पाण्डेय, मदन मोहन मालवीय, आकाश, डॉ. रागिनी पाण्डेय, शुभम सिंह, कृष्णा सिंह, राम आशीष पाण्डेय, मनीष मिश्रा, नेहा सहित हजारों श्रद्धालु गण भी उपस्थित रहे। श्रद्धालुओं ने कथा के दौरान दिव्य अनुभव साझा किए और कहा कि बाल व्यास श्वेतिमा माधव प्रिया की अद्भुत शैली, गूढ़ ज्ञान और मधुर वाणी ने सभी को भावविभोर कर दिया।

जागो जागो तुम सरकारी कर्मचारियों

(शेर)- निजीकरण जब देश में, हर सरकारी संस्था का हो जायेगा।
देश में तब हर काम का दाम, सच आसमान को छू जायेगा।।
हर काम का होगा ठेका प्रथा में, नहीं होगी सरकारी सुविधाएं।
होगा निजी कम्पनियों का राज, अन्याय कितना बढ़ जायेगा।।

जागो, जागो, जागो तुम, सरकारी कर्मचारियों।
कर्तव्यनिष्ठ बनो तुम, सरकारी कर्मचारियों।।
नहीं करो आराम और लापरवाही ड्यूटी में।
वरना पछतावोगे बहुत, सरकारी कर्मचारियों।।
जागो, जागो, जागो तुम-----।।

सरकारी स्कूलों में, अपने बच्चों को पढ़ाओ।
अपने सरकारी स्कूलों का, नामांकन बढ़ाओ।।
सरकारी अस्पतालों में, इलाज अपना करावो।
सरकारी संस्थाओं का तुम, महत्व बढ़ाओ।।
जागो, जागो, जागो तुम-----।।

सरकारी संस्थायें देश में, जब बन्द हो जायेगी।
ये सारी सरकारी सुविधाएं, तब बन्द हो जायेगी।।
हर काम काम होगा ठेके में, ठेकेदारी प्रथा होगी।
तब यह शिक्षा और चिकित्सा महंगी हो जायेगी।।
जागो, जागो, जागो तुम-----।।

सरकारी नौकरी, सरकारी सुविधा यदि हमें चाहिए।
समानता, सम्मान और सुरक्षा अगर हमको चाहिए।।
बढ़ाना होगा महत्व- सम्मान सरकारी संस्थाओं का।
हमारे परिवार का सुनहरा भविष्य, अगर हमें चाहिए।।
जागो, जागो, जागो तुम-----।।

गुरुदीन वर्मा उर्फ़ जी.आज़ाद
बारां (राजस्थान)
कोलफील्ड मिरर

त्रिभाषा सूत्र लागू करने वाला पहला राज्य बना हरियाणा

कोलफील्ड मिरर 28 फरवरी 2025: हरि की धरा 'हरियाणा' से शिक्षा क्षेत्र में आज से नया अध्याय जुड़ गया है। शिक्षा नीति 2020 के तहत माध्यमिक स्तर पर त्रिभाषा सूत्र लागू करने में हरियाणा ने पहला राज्य बनने का गौरव हासिल किया है। अब तक केवल अखबारी बयानों की सुर्खियों में रहने वाले त्रिभाषा सूत्र को आज से व्यवहारिक रूप से लागू करने के आदेश भी जारी कर दिए गए हैं। आदेशों के तहत नए सत्र से प्रदेश के 9वीं और 10वीं के छात्रों को अब सात विषय पढ़ने होंगे। इसमें संस्कृत वैकल्पिक विषय न होकर त्रिभाषा सूत्र के तहत हिंदी और अंग्रेजी के साथ तीसरी भाषा होगी। हालांकि संस्कृत के साथ विकल्प में पंजाबी और उर्दू भी होगी। पर सबसे ज्यादा फायदा संस्कृत को ही होगा।

केंद्र की प्रत्येक योजना को लागू करने में हरियाणा सरकार अग्रणी की भूमिका में रहती है। चाहे बात अन्तोदय की हो या फिर बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान की। या फिर आयुष्मान भारत की हो। केंद्र की लगभग सभी योजनाओं को प्रदेश की भाजपा सरकार पिछले अपनी तीन योजनाओं से लगातार लागू करने का कार्य कर रही है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 की सभी नीतियों को आधार मानते हुए हरियाणा सरकार ने उन्हें राज्य में लागू करने को प्राथमिकता दी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लागू होते ही राज्य में सभी स्तर पर इसके क्रियान्वयन के लिए विभिन्न समितियां गठित की गई थी। खास बात यह है कि हरियाणा देश का पहला ऐसा राज्य बना जिसने सबसे पहले राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू किया।

केंद्र द्वारा स्कूली शिक्षा में त्रिभाषा सूत्र लागू करने की पहल में भी हरियाणा ने सबसे पहले घोड़े दौड़ाने शुरू किए थे। जो आज मंजिल तक पहुंच गए हैं। त्रिभाषा सूत्र लागू कराने में संस्कृत शिक्षक संगठन, संस्कृत भारती, संस्कृत अकादमी के प्रयास प्रमुख रूप से रहे हैं। चुनाव से पूर्व मनोहर लाल और नायब सिंह सैनी सरकार के कार्यकाल में भी इसके लिए कई मुलाकातें की गई। इसे लागू करवाने में कोई ढील न रहने पाए इसके लिए त्रिभाषा हरियाणा हैशटैग की मुहिम के साथ मुख्यमंत्री और शिक्षा मंत्री को हजारों की संख्या में मेल भी भेजी गई। इसके तहत सरकार से त्रिभाषा को तुरंत प्रभाव से कक्षा नौवीं एवं दसवीं में लागू किए जाने की मांग की गई।

इसी का परिणाम है कि हरियाणा स्कूल शिक्षा विभाग ने आज इस बारे में पत्र जारी कर स्पष्ट कर दिया है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत हरियाणा में अगले सत्र से छात्रों को सात विषय पढ़ने होंगे। इसमें त्रिभाषा के रूप में हिंदी और अंग्रेजी के साथ तीसरी भाषा के रूप में संस्कृत, पंजाबी और उर्दू में से एक को पढ़ना होगा। चूंकि हरियाणा में उर्दू एक दो जिलों में ही प्रभावी है। इसी तरह पंजाबी भी पंजाब के साथ लगते जिलों में ही ज्यादा बोली जाती है। ऐसे में इन सब को छोड़कर शेष जगह छात्रों के लिए संस्कृत बेहतर विकल्प होगा। ऐसे में त्रिभाषा सूत्र के लागू होने का सबसे ज्यादा फायदा संस्कृत को ही होगा। स्कूलों में जब संस्कृत के छात्र बढ़ेंगे तो संस्कृत अध्यापकों के नए पद भी सृजित होंगे। कठोपनिषद में कहा गया है, उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।

क्षुरासन्नधारा निशिता दुरत्यद्दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति॥"

अर्थात् उठो, जागो, वरिष्ठ पुरुषों को पाकर उनसे बोध प्राप्त करो। छुरी की तीक्ष्ण धार पर चलकर उसे पार करने के समान दुर्गम है यह पथ – ऐसा ऋषिगण कहते हैं।'

सुशील कुमार 'नवीन'
हिसार